इंद्रधनुष

पंचम अंक

2025

हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
त्रिपुरा, अगरतला– 799 006

हरा शाही कबूतर

'हरा शाही कबूतर' — 'Green Imperial Pigeon' — त्रिपुरा का राज्य पक्षी है। इसकी लंबाई 18 इंच होती है तथा इसकी पीठ, पंख और पूँछ हरे रंग की होती है। अक्सर, यह वृक्ष की चोटी पर रहने वाली प्रजाति है।

इंद्रधनुष

पंचम अंक

2025

हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
त्रिपुरा, अगरतला– 799 006

उनाकोटी

यहाँ भगवान शिव को समर्पित मूर्तियाँ और स्थापत्य हैं जिनका निर्माण 7वीं – 9वीं शताब्दी ईसवी, या उस से भी पहले, बंगाल व पड़ोसी क्षेत्रों में पाल वंश के राजकाल में हुआ था। वर्तमान में ये मूर्तियाँ और स्थापत्य वैश्विक धरोहर हैं।

इंद्रधनुष

पंचम अंक

प्रधान संरक्षक

श्री रणेंदु सरकार, महालेखाकार (लेखा व हक.)

मुख्य संरक्षक

सुश्री तनुश्री बिश्वास, व. उप महालेखाकार (लेखा व हक.)

संपादक मण्डल

श्रीमती दीपान्निता दास, वरिष्ठ अनुवादक

श्री अनिल कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती स्वाती कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक

संपादन सहयोग

श्री दीपक कुमार, डीईओ (ग्रेड बी)

श्री हिमांशु खोखर, डीईओ (ग्रेड बी)

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

अस्वीकरण: "इंद्रधनुष" पत्रिका की रचना राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रयोजन से की गयी है। इसमें निहित लेखों, कविताओं इत्यादि में अभिव्यक्त विचार, सुझाव मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय अथवा संपादक मण्डल इनसे सहमत हों।

अमित शाह

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा-प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान-विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रहा है। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल-मांदर की थाप पर करमा की गूंज, माताओं की लोरियों, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की बिदेशिया, इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव देहात की भाषा में लोगों को आजादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार-विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार-प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम रहा है।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो. जी-20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 मैं अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13-14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी-नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
'देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम् ।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025
(अमित शाह)

अमित शाह

श्री रणेंदु सरकार
महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

हिंदी पत्रिका 'इंद्रधनुष' के पंचम अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका का प्रकाशन महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय के कर्मठ और लगनशील अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयासों से संभव हो सका है, जिन्होंने कार्यालय में कार्य करते हुए अपनी बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा को सशक्त बनाने के साथ-साथ कार्यालय में हिंदी के वातावरण को बनाए रखने में सहयोग प्रदान किया है, वे सभी बधाई के पात्र हैं।

इस विभागीय पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों के हिंदी के प्रति रुझान का विस्तार तथा अपनी भावनाओं को हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करने हेतु एक मंच प्रदान करना है। भाषा मानव के विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, आपसी संबंधों को जोड़े रखने का साधन है। मैं आशा करता हूँ कि सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण भविष्य में अपना अमूल्य योगदान इसी प्रकार देते रहेंगे और हिंदी को अपने साहित्यिक ज्ञान एवं रचनाओं के माध्यम से आगे बढ़ाते रहेंगे।

आर. सरकार

(रणेंदु सरकार)
महालेखाकार (ले. व हक.)

जगन्नाथ मंदिर अगरतला

अगरतला का यह मंदिर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा को समर्पित है। इसका निर्माण 19वीं शताब्दी में त्रिपुरा के माणिक्य वंश के महाराजा राधा किशोर माणिक्य द्वारा किया गया था।

सुश्री तनुश्री बिश्वास
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'इंद्रधनुष' के पंचम अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उत्थान के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है इस कार्यालय के अधिकतर कर्मचारियों एवं अधिकारियों का हिंदी भाषा का ज्ञान सीमित है। फिर भी, इस कार्यालय के कर्मठ और लगनशील अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयासों से यह संभव हो सका है, वे सभी बधाई के पात्र हैं।

किसी भी उपलब्धि का मूल आधार परिश्रम व दृढ़ इच्छाशक्ति होती है। हमारे रचनाकार इस कसौटी पर खरे उतरे हैं और राजभाषा हिंदी के उत्थान व प्रचार-प्रसार में प्रयासरत हैं। पत्रिका का मूल उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक शक्ति एवं अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि करना है।

मैं आशा करती हूँ कि सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण भविष्य में इसी तरह अपना अमूल्य योगदान इसी प्रकार देते रहेंगे और हिंदी को अपने साहित्यिक ज्ञान एवं रचनाओं के माध्यम से आगे बढ़ाते रहेंगे।

(तनुश्री बिश्वास)
वरिष्ठ उप महालेखाकार

संपादकीय

राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना न केवल हम सभी का परम कर्त्तव्य है, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इसी अनुक्रम में, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), त्रिपुरा, अगरतला की हिंदी गृह-पत्रिका ***'इंद्रधनुष'*** का पंचम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

'इंद्रधनुष' पत्रिका के आवरण पृष्ठ और पार्श्व पृष्ठ राज्य की सांस्कृतिक विरासत, कला और नृत्य एवं प्राकृतिक सौंदर्य की झलकियाँ प्रदर्शित करते हैं और इनसे संबंधित महत्वपूर्ण संक्षिप्त विवरण भी दर्शाते हैं। पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने स्वरचित व मौलिक अनुभवों, संस्मरणों, यात्रा वृत्तांतों, विभिन्न ज्ञानवर्धक लेखों एवं कविताओं के माध्यम से प्रशंसनीय और उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया है जिससे उनके लेखन कौशल की सार्थक अभिव्यक्ति हो पायी है।

पत्रिका में एक ओर जहाँ विचारों की सहज और सुंदर अभिव्यक्तियों से युक्त रचनाएँ हैं, तो वहीं दूसरी ओर गीता ज्ञान, ब्रजवासी संत जो एक भक्त बना का सजीव चित्रण है। यहाँ एक बीएचयू की छात्रा की डायरी से विश्व की प्राचीनतम नगरी-काशी का चित्रण किया गया है। एक तरफ बांग्ला साहित्य का उत्कर्ष तो दूसरी ओर प्रेमचंद पर एक दृष्टिकोण दिखाया गया है। राजस्थान की विशेषताओं का एक सजीव चित्रण हमें यहाँ देखने को मिलता है। अपने गृहनगर से लोगों का जुड़ाव का वर्णन रचनाकारों द्वारा बखूबी किया गया है। इन सभी लेखों के माध्यम से प्रकृति तथा आधुनिकता से जुड़े रहकर बहुत कुछ सीखने एवं हर स्थिति में प्रसन्नचित्त रहते हुए जीवन में कुछ नया करने की प्रेरणा मिलती है।

संपादक मण्डल और संरक्षक मण्डल कार्यालय के सदस्यों से यह आह्वान करते हैं कि वे भविष्य में पत्रिका हेतु अधिकाधिक मौलिक रचनाएँ अनवरत् रूप से प्रदान करते रहें और आशा करते हैं कि ***'इंद्रधनुष'*** पत्रिका के आगामी अंकों में विभिन्न नये-नये रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रासंगिक बनाने हेतु अपनी भूमिका का निर्वहन कर राजभाषा के विकास में अप्रतिम सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

संपादक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्र.स.	शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
1	वैशाली: मेरा शहर, मेरी पहचान	किश्लय राज, लेखाकार	लेख	12-14
2	बेहतर से बेहतरीन की खोज और फिर क्या?	गौरव कुमार तोमर, डी. ई. ओ.	लेख	15-16
3	एक आप बीती दास्तां	अनिंदिता धर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	लेख	17-19
4	मेरी दार्जिलिंग यात्रा	अनिल कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	यात्रा वृतांत	20-22
5	मुंगरी	अमित गौरव, सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	23-24
6	ब्रजवासी संत: एक जीवन जो भक्ति बना	केया सरकार, लेखाकार	लेख	25-28
7	एक राष्ट्र एक चुनाव	आशीष कुमार वर्मा, लेखाकार	लेख	29-31
8	प्रेमचंद पर एक दृष्टिकोण	लोकेश सिंह मनराल, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	32-33
9	मुस्कुराहट	गौतम कुमार, लेखाकार	लेख	34-35
10	भाषा व्याकरण और लिंग निर्धारण: सामाजिक और भाविक विडम्बना	रोहित यादव, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	36-37
11	मेरी काशी: एक बी. एच. यू छात्रा की डायरी से	प्रियदर्शिनी सिंह, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	38-39
12	बांग्ला साहित्य का उत्कर्ष: बंकिम चंद्र से रवीन्द्रनाथ तक	दीपा कर्मकार, लेखाकार	लेख	40-43
13	गीता ज्ञान	स्वाती कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक	लेख	44-46
14	किसान की बेटी	पीयूष प्रभाकर, सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	47-48
15	शेखपुरा: मेरा गृहनगर और मेरी यादों का शहर	राकेश चंद्र श्रीवास्तव, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	49-50
16	आतंकवाद: क्यों और कब तक	राजीव कुमार-I लेखाकार	लेख	51-52
17	जनरल कोच की खिड़की से झाँकती हुई जिंदगी	राहुल कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	53-55
18	म्हारो राजस्थान	हिमांशु खोखर, डी ई ओ	लेख	56-58
19	भारत पाक युद्ध	सूरज किशोर, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	59-60
20	भारत का *'ऑपरेशन सिंदूर'*: एक प्रतीकात्मक अर्थ	दीपान्विता दास, वरिष्ठ अनुवादक	लेख	61-63
21	राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान			64
22	वर्ष 2025 की कार्यालयीन गतिविधियों की कुछ झलकियाँ			65-72

वैशाली: मेरा शहर, मेरी पहचान

किश्लय राज
लेखाकार

मेरे जीवन की नींव जिस धरती पर पड़ी, वह है वैशाली ज़िला, विशेष रूप से इसका मुख्यालय हाजीपुर। बचपन की यादें, संस्कार, और सोच का आकार यहीं पर तैयार हुआ। गंगा और गंडक नदियों के संगम पर बसा हाजीपुर न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि यह मेरी पहचान का अहम हिस्सा भी है। वैशाली की प्राचीन गौरवशाली विरासत और आज के ग्रामीण-शहरी मिश्रित जीवन ने मुझे परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन रखना सिखाया। यहाँ की मिट्टी की खुशबू, लोगों की सादगी, और त्योहारों की रौनक ने मेरी सोच, भाषा और जीवनशैली पर गहरा प्रभाव डाला है।

परिचय: वैशाली बिहार राज्य का एक प्राचीन और ऐतिहासिक जिला है, जो न केवल भारत की पहली गणतांत्रिक सभ्यता के रूप में जाना जाता है, बल्कि बौद्ध और जैन धर्मों के विकास में भी इसकी अद्वितीय भूमिका है। यह जिला प्राचीन भारत के छह प्रमुख महाजनपदों में से एक था और इसकी सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक विरासत विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। वैशाली का इतिहास भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, जिन्होंने यहाँ अपने जीवन के महत्वपूर्ण चरण बिताए और अपने उपदेशों से मानवता को मार्गदर्शन दिया।

भूगोल और प्रशासन: वैशाली जिला बिहार के पूर्वी भाग में स्थित है, जिसका प्रशासनिक मुख्यालय हाजीपुर है। इसका क्षेत्रफल लगभग 2,361 वर्ग किलोमीटर है। यहाँ गंगा, गंडक और लखनदेई नदियाँ बहती हैं, जो कृषि के लिए जल स्रोत प्रदान करती हैं। वैशाली की मिट्टी उपजाऊ होने के कारण कृषि यहाँ की मुख्य आर्थिक गतिविधि है, जिसमें धान, गेहूं, मक्का और दलहन प्रमुख फसलें हैं। सिंचाई की सुविधा नदियों और तालाबों के माध्यम से उपलब्ध है।

वैशाली का ऐतिहासिक और राजनीतिक महत्व: वैशाली प्राचीन भारत के सात महाजनपदों में से एक था और यह दुनिया का पहला गणराज्य (लोकतांत्रिक व्यवस्था) माना जाता है। यहाँ की राजनीतिक व्यवस्था राजसभा और नगरसभा के माध्यम से संचालित होती थी, जहाँ जनता की भागीदारी होती थी। यह व्यवस्था उस समय के अन्य राजशाही प्रणालियों से अलग थी। महाभारत काल से जुड़ा यह क्षेत्र राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध था। वैशाली में प्राचीन शिलालेख और सिक्के इसके ऐतिहासिक महत्व के प्रमाण हैं।

भगवान महावीर और वैशाली: भगवान महावीर, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर, का जन्म वैशाली के शेरगढ़ या कुण्डग्राम क्षेत्र में हुआ था। उनके पिता राजा सिद्धार्थ और माता त्रिशला इसी गणराज्य के प्रमुख क्षत्रिय थे, जिससे महावीर का जीवन प्रारंभ से ही वैशाली की सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ा रहा। महावीर ने युवावस्था में राजसी जीवन त्यागकर कठोर तपस्या की और अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह जैसे पाँच महान सिद्धांतों को स्थापित किया। महावीर ने अपने धर्म प्रचार के दौरान वैशाली में विशेष प्रभाव डाला, जहाँ उन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों का विस्तार किया और अनेक अनुयायियों को प्रेरित किया। वैशाली की प्रसिद्ध गणिका अंबपाली, जो महावीर के उपदेशों से अत्यंत प्रभावित हुईं, ने अपना सांसारिक जीवन त्याग कर जैन भिक्षुणी बनना स्वीकार किया। इस प्रकार वैशाली न केवल भगवान महावीर की जन्मभूमि थी, बल्कि उनकी तपस्या, शिक्षाओं और धर्मप्रसार का भी महत्वपूर्ण केंद्र बनी। वैशाली और महावीर का यह संबंध केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक

रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसने भारतीय इतिहास और धर्म को एक नई दिशा दी।

महात्मा बुद्ध और वैशाली: महात्मा बुद्ध ने भी वैशाली को अपने धर्म प्रचार का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाया। उन्होंने यहाँ कई बार प्रवचन दिए, जिसमें उन्होंने मध्यम मार्ग, चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग के सिद्धांत प्रस्तुत किए। वैशाली में बुद्ध ने अपनी चौथी संघ सभा का आयोजन किया, जो बौद्ध धर्म के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस सभा में बौद्ध अनुयायियों ने धर्म के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया और संघ की स्थिरता सुनिश्चित की।

वैशाली वही जगह है जहाँ भगवान बुद्ध ने अपने अंतिम वर्ष बिताए और यहीं से उन्होंने अंतिम बार अपने शिष्य आनंद को यह बताया था कि उनका निर्वाण निकट है। यह बुद्ध ने कई वर्षा-वास (वर्षा ऋतु में एक स्थान पर ठहरने की परंपरा) किए और यहीं उन्होंने अपने अनुयायियों को धर्म और अहिंसा के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी। वैशाली में लिच्छवी गणराज्य था, जो एक लोकतांत्रिक व्यवस्था वाला पहला गणराज्य माना जाता है और बुद्ध ने इसकी शासन प्रणाली की भी प्रशंसा की थी।

सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि बुद्ध की प्रमुख अनुयायी **महाप्रजापती गौतमी,** जो उनकी माता समान थीं, ने वैशाली में ही बौद्ध संघ की पहली महिला भिक्षुणी बनकर इतिहास रचा। इसके साथ ही वैशाली वह स्थान है जहाँ पहली बार महिला संघ (भिक्षुणी संघ) की स्थापना हुई, जो बौद्ध धर्म में एक बड़ा बदलाव था।

आज भी वैशाली में अशोक स्तंभ, बुद्ध स्तूप और अन्य पुरातात्विक अवशेष बुद्ध के उस ऐतिहासिक संबंध को जीवित रखते हैं और यह स्थान दुनियाभर के बौद्ध अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल बना हुआ है। यह बने अरहतसिद्धि स्तूप, कुमारपट्टी स्तूप और बुद्ध स्थल आज भी बौद्ध तीर्थयात्रियों के आकर्षण का केंद्र हैं।

वैशाली में बौद्ध और जैन धर्मों का प्रभाव: वैशाली दो प्रमुख धर्मों - बौद्ध और जैन - का संगम स्थल था। दोनों धर्मों ने यहाँ की सामाजिक व्यवस्था, सांस्कृतिक जीवन और धार्मिक सहिष्णुता को गहराई से प्रभावित किया। अहिंसा, सत्य, करुणा और संयम जैसे मूल्य समाज में व्याप्त थे। धार्मिक सहिष्णुता की इस परंपरा ने वैशाली को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाया। यहाँ के स्तूप, विहार, और मंदिर इन धर्मों की ऐतिहासिक विरासत को दर्शाते हैं। वैशाली संग्रहालय में पाए गए शिलालेख, मूर्तियाँ, और पुरातात्विक अवशेष इन धर्मों की महत्ता को प्रमाणित करते हैं।

ऐतिहासिक और पुरातात्विक खोजें: वैशाली में पुरातात्विक उत्खनन से अनेक महत्वपूर्ण वस्तुएं प्राप्त हुई हैं, जैसे कि प्राचीन सिक्के, शिलालेख, मूर्तियाँ, तथा स्तूपों के अवशेष। ये खोजें वैशाली के समृद्ध राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन को उजागर करती हैं। यहाँ का प्रसिद्ध अशोक स्तंभ भी इतिहास और कला का प्रतीक है। वैशाली की स्थापत्य कला में बौद्ध और जैन स्थापत्य शैलियों का सुंदर समामेलन देखा जा सकता है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक सह-अस्तित्व को दर्शाता है।

प्रमुख धार्मिक स्थल:

महावीर मंदिर, वैशाली: भगवान महावीर के जन्म स्थान के निकट स्थित, यह मंदिर जैन तीर्थयात्रियों का प्रमुख केंद्र है।

अरहतसिद्धि स्तूप: यह बौद्ध स्तूप वैशाली में महात्मा बुद्ध के प्रमुख स्मारकों में से एक है।

कुमारपट्टी स्तूप: यह भी बौद्ध स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है और वैशाली के धार्मिक पर्यटन का हिस्सा है।

वैशाली संग्रहालय: यहाँ विभिन्न शिलालेख, मूर्तियां और पुरातात्विक वस्तुएं रखी गई हैं, जो वैशाली की प्राचीन संस्कृति और धर्मों की जानकारी देती हैं।

वैशाली की आर्थिक और सामाजिक जीवन: वैशाली की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी, जहाँ नदियों से सिंचाई और उपजाऊ मिट्टी ने कृषि को समृद्ध किया। पशुपालन और मछली पालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग थे। हाजीपुर शहर में कुछ उद्योग स्थापित हुए, जिससे रोजगार के अवसर बढ़े। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विकास भी हुआ, हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यहाँ की सांस्कृतिक विविधता और धार्मिक महत्त्व ने सामाजिक जीवन को प्रभावित किया, जिससे कला, साहित्य और शिक्षा को बढ़ावा मिला।

पर्यटन और संरक्षण के प्रयास: वैशाली के धार्मिक स्थल विशेष रूप से बुद्ध और महावीर से जुड़े तीर्थ स्थल पर्यटकों और श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। बिहार सरकार, पुरातत्व विभाग और विभिन्न सांस्कृतिक संस्थान इन स्थलों के संरक्षण और संवर्धन में लगे हुए हैं। पर्यटकों के लिए आधारभूत संरचना जैसे सड़क, आवास और सूचना केंद्र विकसित किए जा रहे हैं। इन प्रयासों से स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिल रहा है और वैशाली विश्व में शांति, अहिंसा और धर्म का संदेश फैलाने वाला प्रमुख केंद्र बन रहा है।

निष्कर्ष: मेरे शहर वैशाली की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्ता अपार है। यह नगर केवल हमारे लिए एक जन्मभूमि नहीं, बल्कि गर्व का प्रतीक भी है। वैशाली प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र रहा है। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध की शिक्षाएँ और जीवन से जुड़ा यह जिला आज भी आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह की ऐतिहासिक विरासत, पुरातात्विक महत्व, और धार्मिक स्थलों का संरक्षण आवश्यक है ताकि यह शांति, अहिंसा और धर्म के संदेश को विश्व स्तर पर फैलाने में अपनी भूमिका निभा सके।

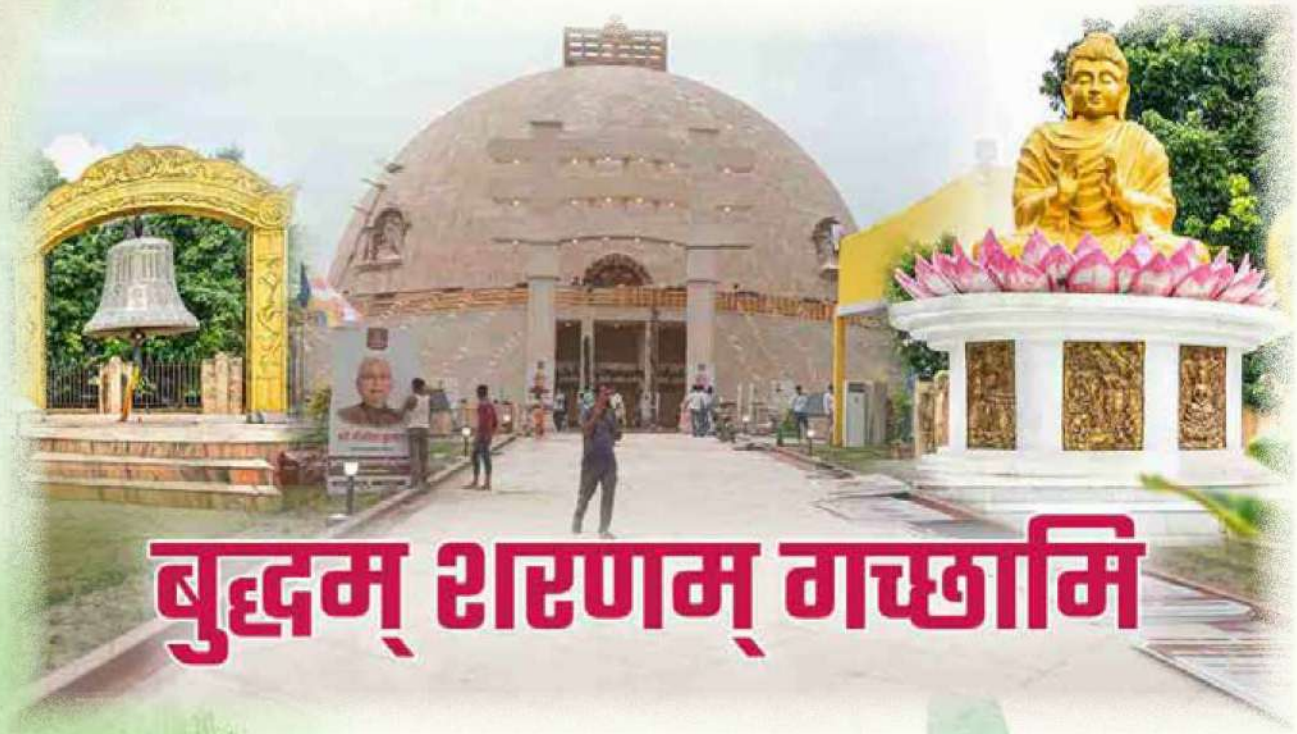

बेहतर से बेहतरीन की खोज और फिर क्या?

गौरव कुमार तोमर
(डी.ई.ओ.)

ऐसा देखा गया है कि लोग कभी-कभी बेहतर की तलाश में बेहतरीन खो देते हैं और फिर उनके पास केवल अफसोस एवं पछतावे के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगता है।

यह कहानी ऐसे ही एक व्यक्ति श्याम (काल्पनिक नाम) की है, जो पहले एकांत और सब लोगों से अलग रहा करता था तथा भगवान से सदैव एक ही कामना करता रहता था कि हे भगवान! मेरा एक ऐसा मित्र बना दो जिससे मैं अपना सारा सुख-दुख बाँट सकूं, वह मुझे समझे तथा मेरा हर कहा माने। भगवान ने भी उसकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे उसकी इच्छानुसार एक मित्र राम (काल्पनिक नाम) से मित्रता हो गई जो उसका हर सुख-दुख सुनता तथा उसका कहा भी मानता था।

अब श्याम बहुत खुश रहने लगा, वह अपने मित्र के साथ खूब घूमता-टहलता और मौज मस्ती करता था। अब श्याम ने मन लगाकर खूब पढ़ाई-लिखाई की और सरकारी नौकरी में उच्च पद को प्राप्त किया। अब तो मानो उसकी खुशियों में चार चाँद लग गये हों। सरकारी नौकरी लगने से उसके मित्र राम की भी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। राम ने तो आस-पास में सब को मिठाइयाँ बाँटी तथा सब को बताया कि मेरे दोस्त की उच्च पद पर सरकारी नौकरी पक्की हो गई है।

परंतु अब परिस्थिति बदलने लगी। अब राम का मित्र सरकारी बाबू बन गया था सो उसके पास अब अपने मित्र के लिए समय नहीं होता था। साथ ही कार्यस्थल पर उसके अब नए-नए अफसर मित्र भी बनने लगे थे। एक कारण यह भी था कि अब उसे कार्यभार के चलते ज्यादा समय न मिलता था।

किंतु जो भी हो, वह तो ऐसा करने लगा कि मानो वह अब राम को पहचानता ही न हो। वह न उसके कॉल्स् का जवाब देता था न ही उसके कोई मैसेज का रिपलाई करता था। किंतु, इसके विपरीत उसका मित्र उसे हमेशा याद करता रहता तथा उसे बराबर कॉल्स् एवं मैसेज भी करता रहता था। किंतु मित्र की नज़र-अंदाज़गी के कारण वह सोचने लगा कि उसका मित्र अब 'सरकारी बाबू' बन गया है, इसलिए अब वह उससे दोस्ती नहीं रखना चाहता है।

जिंदगी परिवर्तन का नियम है। ऐसे ही श्याम का तबादला सुदूर दूसरे शहर, मोहनपुर में हो गया था। अब वहाँ उसके सारे मित्र जो पुराने कार्यस्थल पर बने थे, वह छूट गये और वह उस जगह अकेला रहने लगा। इसी तन्हाई और अकेलेपन से शायद वह उस नए कार्यस्थल — मोहनपुर — में भयंकर बीमार पड़ गया। यह भी ध्यान रहे कि उसका पुराना मित्र, राम, उसे अभी तक भूला नहीं था। बीमारी से लड़ते और अपने स्वास्थ्य सुधार को ध्यान में रखते हुए उसने अपने पुराने अफसर मित्रों को कॉल लगाया किंतु सभी व्यस्तता के कारण उसे प्रर्याप्त समय नहीं देते, मानो कि उसके जाते ही उसके नए-नए बने मित्रों को कोई भी फर्क नही पड़ा था। किसी ने भी उसका उस समय समाचार नहीं लिया था।

तभी जाकर उसे अपने सबसे पुराने एवं सच्चे दोस्त, राम की याद आयी। फिर वह सोचने लगा कि अब वह राम से कैसे बात करे? किस मुँह से वह उससे बात करेगा? फिर उसने सोचा कि वह अपने मित्र को कॉल लगा ही दे। किंतु उसे यह भी डर था कि कहीं उसका मित्र उसे भूल न गया हो और वह क्यों ही उसे याद रखेगा, जिसने उसके साथ सौतेलेपन जैसा व्यवहार किया हो। परंतु, तमाम कश्मकश के बावजूद उसने अपने मित्र को कॉल मिला ही दिया। कॉल

लगने के बाद उधर से उसके मित्र ने कॉल उठाया और श्याम ने सिर्फ हैलो! ही बोला था कि उसके मित्र ने उसे पहचान लिया और फिर कहा —

रामः तुम कैसे हो?

श्यामः मैं ठीक हूँ। और तुम कैसे हो?

रामः मैं ठीक हूँ। लेकिन श्याम तुम्हारी आवाज से लग रहा है कि तुम बहुत बीमार हो। मित्र तुम ठीक तो हो न? बोलो तो मैं तुम्हारे पास आ जाता हूँ। सेवा करने से तुम तंदरुस्त हो जाओगे। तुम पहले जैसे खुश एवं फुर्तीले हो जाओगे।

यह बात सुनकर तो श्याम की आँखो से आँसुओं का सैलाब बहने लगा। वह फूट-फूट कर रोने लगा। उसने अपने सच्चे दोस्त से माफी मांगी और भविष्य में ऐसी गलती न करने का प्रण भी लिया। "माफी मांग कर मुझे शर्मिंदा न करो।" — ऐसा कह कर उसके मित्र ने उसे उसकी गलती की सजा मानो खुद-ब-खुद दे दी तथा वह अपने मित्र का ख्याल रखने के लिए उसके नए कार्यस्थल मोहनपुर चला गया। वहाँ जाकर फिर दोनों पहले जैसे साथ-साथ रहने लगे। संयोगवश, श्याम की भी नौकरी वहीं दूसरे विभाग में लग गई।

इस कहानी के वृत्तांत से हम यही सीखते हैं कि जो हमारे पास होता है, हमें उसकी कद्र करनी चाहिए। बेहतर से बेहतरीन की तलाश में रहिए जरूर, चाहे वह आपका लक्ष्य हो या जीवनशैली की सुधार के क्षेत्र में हो, किंतु एक बात का सदैव ध्यान रखिए कि उस बेहतरीन की तलाश में जो आपके पास बेहतर रहता है, उसे अपने किसी व्यवहार या किसी अन्य तरीके से खो न दें वरना आपकी भी हालत श्याम जैसी हो सकती है।

अंत में पाठकों से भी निवेदन है कि जीवन के किसी भी आयाम पर आपने भी ऐसी कोई भी भूल की हो तो उसे सुधारने के लिए कोई खास घड़ी का इंतजार मत कीजिए। अभी भी देर नहीं हुई है। आप अपनी गलतियों का सुधार कर सकते हैं। वैसे भी फलों से लदा वृक्ष सदैव झुका रहता है। अतः इंसान को भी विनम्रता से सदैव झुक कर तथा दूसरों को सुख में देखने की स्थिति में रहना चाहिए।

एक आप बीती दास्तां

अनिंदिता धर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

मोहित बस से उदयपुर के लिए एक दोस्त की शादी में जा रहा था। जल्दी लौटने के चक्कर में वह ऑफिस से थोड़ा जल्दी निकला। बस में किसी तरह उसको बैठने की जगह मिली। उसके बगल वाली सीट में एक कम उम्र की औरत एक बहुत ही छोटा बच्चा गोद में लेकर बैठी थी। ऑफिस से सीधा बस पकड़ने के चक्कर में बस चलने के थोड़ी देर बाद ही उसको नींद आ गई। बस के कन्डक्टर के शोर के कारण उसकी नींद टूटी, जो उस औरत को डांट रहा था क्योंकि उस औरत ने पैसे न होने के कारण बस का टिकट नहीं खरीदा था। कन्डक्टर ने जब मोहित से पूछा तो उसने बताया कि उसने उदयपुर का टिकट पहले ही काट लिया था। कई बार पूछने पर उस औरत ने मोहित को बताया कि वह भी उदयपूर जा रही है, इसलिए मोहित ने अपने पास से पैसे देकर उस औरत को टिकट खरीद दिया।

उस औरत ने कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से मोहित की तरफ देखा और फिर आँखें नीचे कर लीं, वह पूरे रास्ते में एक भी बार कुछ नहीं बोली। मोहित को फिर से नींद आ गई। कन्डक्टर ने जब आवाज़ दी कि आपके उतरने की जगह आ गई, तब जाकर मोहित की आँख खुली। मोहित के साथ वह औरत भी उसी जगह उतर गई। जैसे ही मोहित बस से उतरकर सामने एक ऑटो पकड़ने वाला था, अचानक उसको याद आया कि उस औरत के पास बिल्कुल भी पैसे नहीं थे, जिससे वह बस स्टॉप से अपने घर जा सके। मोहित वापस आकर उस औरत को सौ का नोट देता है और उसको बोलता है कि उसे आज रात ही घर लौटना पड़ेगा, इसलिए उसे जल्दी जाना पड़ेगा। वह औरत उस पैसे को लेना नहीं चाह रही थी पर मजबूरी में उसने उसे ले लिया। उस औरत ने मोहित से एक पर्ची में उसका नाम और पता लिख देने का अनुरोध किया ताकि वो पैसे बाद में मोहित को लौटा सके।

शादी वाले घर से निकलने के बाद मोहित ऑटो लेकर सीधा बस स्टैंड पहुँचा। उस औरत को अभी तक वही देखकर मोहित बहुत आश्चर्यचकित हुआ, पर उससे कुछ पूछ नहीं पाया। इतने में वह औरत मोहित के सामने आकर बोली कि, "भैया, थोड़ी देर के लिए क्या आप इस बच्चे को संभाल सकते हैं? मैं अभी पीछे की तरफ से होकर आती हूँ" और उसने उस बच्चे को मोहित के हाथो में थमा दिया और पीछे चली गई। मोहित को लगा कि इतनी देर तक बच्चा साथ होने के कारण टायलेट करने नहीं जा पाई होगी, उसने सोचा थोड़ी देर में आ जायेगी। यह सब सोचते-सोचते आधे घंटे से ऊपर हो गया और बच्चे ने भी रोना शुरू कर दिया। मोहित ने दुकान से दूध और बिस्कुट लेकर बच्चे को खिला दिया, तब जाकर बच्चे का रोना बंद हुआ।

धीरे-धीरे रात होने लगी पर उस औरत का कहीं अता-पता नहीं था। मोहित बड़ी ही मुशिकल में पड़ गया, कोई उपाय न देखकर मोहित बच्चे को लेकर बस में चढ़ गया। देर रात को जाकर मोहित घर पहुँचा।

घर में उसके साथ उसकी माँ रहती थी। मोहित के हाथ में बच्चा देखकर उसकी माँ ने कई सारे प्रश्न कर डाले — कि बच्चा किसका है, कहां से लेकर आया है, इत्यादी। मोहित ने माँ को पूरी घटना का विवरण दिया। उसके बाद माँ ने बताया कि आज बहुत रात हो गई है, बच्चे के बारे में कल सोचा जायेगा।

अगले दिन दोनों ने यह निर्णय लिया कि मोहित बच्चे को लेकर पुलिस स्टेशन जायेगा। जाने से पहले मोहित की माँ ने बच्चे को दूध पिला दिया और उसकी माँ यह भी सोच रही थी कि काम वाली मासी अगर आ गई तो बच्चे वाली बात पूरे मोहल्ले में फैल जायेगी, इसलिए मोहित बच्चे को लेकर जल्दी से निकल गया। तब वह पास वाले पुलिस स्टेशन पहुँचा तो उसने देखा कि वहां का काम-काज अभी तक शुरू नहीं हुआ था, बच्चा फिर से रोने लगा। बहुत मुशिकल

से महिला पुलिस की मदद से बिस्कुट और दूध पिलाकर उसने बच्चे को शान्त कराया।

करीब 12.00 बजे दोपहर के आस-पास थाने का दरोगा आया। मोहित ने पूरी घटना का विवरण उस दरोगा को सुनाया। उसने बीच-बीच में मोहित से कई सारे प्रशन किये और उसके बाद उसने रिपोर्ट दर्ज कराने का निर्देश दिया। उसने मोहित से कहा कि बच्चे को उसी के पास अपने साथ घर ले जाना पड़ेगा, तब तक वह उस बच्चे की माँ को ढूँढने का प्रयास करते हैं और अगर बच्चे की माँ नहीं मिली, तो बाद में कुछ उपाय बताया जायेगा।

घर वापस आकर जब मोहित ने बच्चे को माँ के हाथ में सौंपा, तब जाकर मानो मोहित को सांस आई। शुक्र है कि आज उसका ऑफिस नहीं था और काम वाली मासी भी काम करके तब तक निकल गई थी। बाकी का दिन बच्चे को लेकर उन दोनों का बहुत मुश्किल से गुजरा। किसी तरह उन्होंने बच्चे को दूध और सूजी खिलाकर सुला दिया। जब मोहित और उसकी माँ खाना खाकर उठे, तभी वह बच्चा भी जाग गया। इतने छोटे बच्चे को माँ के बिना रखना बहुत ही कठिन काम था। रात को करीब 8 बजे दोनों मिलकर उसको खाना खिलाकर सुला पाये।

दोनों ही सोच रहे थे कि कल क्या होगा क्योंकि मोहित को भी ऑफिस जाना था और उसकी माँ उस बच्चे को कैसे संभालेगी, पुलिस के पास से भी कोई खबर नहीं मिली थी। रात 9.30 बजे जब वह दोनों खाना खाने बैठे थे तभी दरवाजे पर किसी ने खटकटाया, मोहित की माँ ने दरवाजा खटखटाकर पूछा तो एक औरत की आवाज आई। उसके मुँह से अपना नाम सुनकर जब मोहित ने उस औरत को देखा तो हैरान हो गया। जिसे पुलिस ढूँढ नहीं पाई, वह खुद आकर उपस्थित हुई। तब तक उसकी माँ ने उसको अंदर लाकर बैठाया, शायद समझ भी गई कि वह कौन है। मोहित ने पूछा कि मेरे घर का पता आपको कैसे चला। तब उस औरत ने बताया कि आपके पैसे लौटाने के लिए जब आपसे आपका पता मांगा था, उसी से यहां तक पहुँची हूँ। मोहित को वह याद आया।

अब माँ निश्चिन्त हो गई कि वह औरत उस बच्चे की माँ है, तब उस औरत ने अपनी कहानी सुनाई। उसका जीवन बहुत ही दुखद था। उसके जन्म के समय ही उसकी माँ गुजर गई थी और पिता ने दसरी शादी कर ली थी। नई माँ का प्यार उसको नहीं मिला और उस माँ के एक-एक कर पाँच बच्चे हुये। उसका काम था उन सब की देखभाल करना। खाना भी ठीक तरह से उसकी दूसरी माँ उसको नहीं देती थी। उसका स्कूल भी बन्द करवा दिया था और इसी बीच उस औरत के पिताजी भी बीमार पड़ गये और उनका भी रोजगार बन्द हो गया। उसके लिए लड़का ढूँढना शुरू किया गया और उससे बहुत ज्यादा उम्र वाले एक लड़के से, जो पियक्कड़ था, उसकी शादी कर दी।

मोहित की माँ ने उसको कुछ खाना लाकर दिया। उसने खाना खाया और फिर से बोलने लगी कि उसका पति हर रोज पीकर आता था और उसे पीटता था, उसकी सासू माँ भी उसके ऊपर बहुत अत्याचार करती थी। इसी बीच वह गर्भवती हुई, और कुछ कमाई के लिए उसने कुछ लोगों के घर काम करना शुरू कर दिया, पर उससे भी वो लोग उसके चरित्र पर संदेह करने लगे। ऐसे अत्याचार के बीच ही उस बच्चे का जन्म हुआ। उसको लगा कि नये अतिथि के आने से उसकी अवस्था में कुछ परिवर्तन होगा, पर ऐसा नहीं हुआ। एक दिन शाम को उसका पति जब उसको मार रहा था, बच्चा भी जोर-जोर से रोने लगा। यह देखकर उसका पति बच्चे को उठाकर पटकने वाला ही था कि माँ की ममता ने इतनी शक्ति जगाई कि उसने बच्चे को पति के हाथों से छीनकर उसको धक्का दे दिया और वह गिर गया तथा उसके सर से खून बहने लगा। यह देखकर उसका पति और उसकी सासू माँ उसको मारने आये और वह भागते-भागते सड़क पर आकर जो बस सामने मिली उस पर बैठ गई।

मोहित की माँ ने पूछा, "तुमने मेरे बेटे के साथ ऐसा क्यों किया?" तब उस औरत ने बताया कि पहले तो उन लोगों से बच्चे को बचाने के लिये वह बस में चढ़ गई थी। बाद में होश आया, तो लगा उसके पास कुछ भी नहीं है। वह कहां जायेगी, तब मोहित ने उसके बस का किराया मिटाया और उतरने के बाद घर तक जाने के पैसे भी दिए। उसके जाने

के बाद वह सोचती रही कि इस छोटे से बच्चे को वह कैसे संभालेगी, क्या खिलायेगी, उसको कोई चारा नहीं दिखाई दे रहा था। वह मोहित के शादी से लौटने तक का इंतजार करती रही, यह सोचकर कि मोहित इतना दयालु है, उसके हाथ में बच्चे को देकर वह जान दे देगी। इसलिए, मोहित के बस स्टॉप पर लौटते ही बच्चे को उसके हाथ में देकर वह रेल लाइन की तरफ चली गई। जैसे ही रेल के सामने कूदने गई, तभी उसे कानों में उसके बच्चे की चीख सुनाई दी और वही होश खोकर वह गिर गई, वहां के लोगों ने उसको उठाकर अस्पताल में भर्ती करा दिया। आज शाम को थोड़ा स्वस्थ होते ही अस्पताल से बाहर आकर लोगों को पूछते-पूछते वह मोहित के घर आ पहुँची।

मोहित की माँ ने जब पूछा, "अब क्या करोगी?" उसने बताया कि कहीं पर भी काम करके उसका और उसके बच्चे का गुजारा करेगी, क्योंकि बच्चे को छोड़कर वह रह नहीं सकती। बच्चे को उसके पास दे देने के लिये भी मिन्नत की और बोली कि बच्चे को लेकर वह चली जायेगी। मोहित की माँ उससे भी दयालु एवं मानवीयता सम्पन्न थी, उन्होंने बताया, "तुमको कही जाने की जरूरत नहीं है। मोहित कई दिनों से मेरे साथ रहने के लिए एक महिला की तलाश कर रहा है, देखती हूँ तुम मेरी वह साथी बन पाती हो या नहीं। मोहित कल ऑफिस जाने से पहले थाने से वह रिर्पोट उठा लेना। बहुत रात हो चुकी है, तुम जाकर अपने बच्चे के साथ सो जाओ।" वह औरत मोहित की माँ के पैर पकड़ कर बोली, "माजी, आप धन्य हो।"

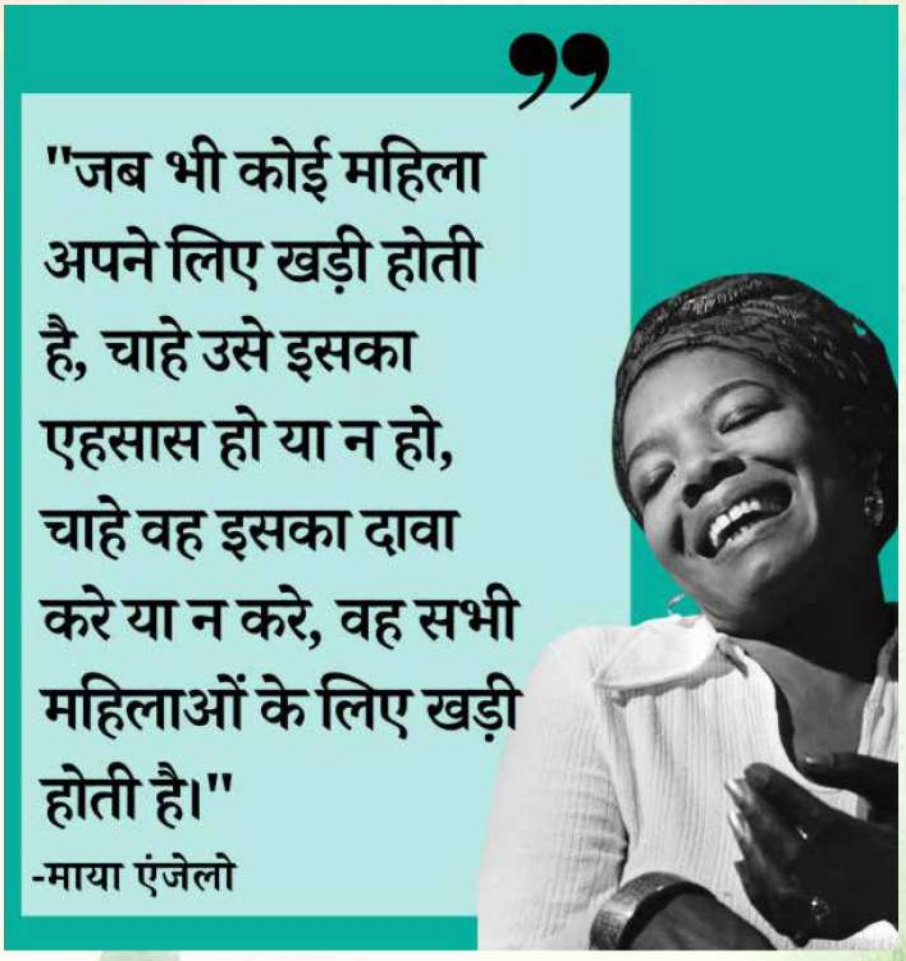

मेरी दार्जिलिंग यात्रा

अनिल कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

पिछले वर्ष मार्च के महीने में मुझे पूर्वोतर राज्यों के राजभाषा सम्मेलन में सहभागिता के लिए सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल) जाने का अवसर मिला। सम्मेलन की समाप्ति के पश्चात मेरी इच्छा दार्जिलिंग घूमने की हुई। दार्जिलिंग सिलीगुड़ी से सिर्फ 4-3 घंटे की दूरी पर ही था। मैंने अपने साथ कार्यरत सहकर्मियों से चलने के लिए पूछा लेकिन उन्होंने अपनी समस्याएं बताते हुए जाने से मना कर दिया। मैनें अकेले ही दार्जिलिंग घूमने की योजना बना ली और किराए पर एक कैब लेकर दार्जिलिंग की यात्रा शुरू कर दी। सिलीगुड़ी से निकलते समय सड़क के दोनों ओर चाय के बागान नज़र आ रहे थे जो अपनी सुंदर छटा बिखेर रहे थे। चाय के पौधों को समान ऊँचाई तक करीने से छाँटा गया था। इन बागानों में काम करती हुई महिलायें अपनी पीठ पर बाँस की टोकरी लटकाये हुई थीं, जिसमें वे दोनो हाथों से चाय की पत्तियाँ तोड़ कर डाल रही थीं। मैंने एक जगह कार रूकवा कर उन बागानों के अंदर खड़े होकर विभिन्न मुद्राओं में फोटो खिचवाई और वहाँ के नजारों को अपने मोबाईल के कैमरे में कैद कर लिया।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गये, कुछ कि.मी. की दूरी तय करने के पश्चात् चढ़ाई प्रारंभ हो गई और चारों तरफ पहाड़ियाँ नज़र आने लगीं। इन पहाड़ियों के बीच से घुमावदार सड़क पर हमारी गाड़ी दौड़ रही थी। मैं खिड़की के पास बैठा प्रकृति के नजारों को निहार रहा था। ये सड़कें सर्पाकार में बनायी गयी थीं और उन सड़कों पर ड्राइव करना एक कुशल ड्राइवर का काम ही हो सकता था। सड़क के एक तरफ खड़ी ऊँचाई वाली पहाड़ी तो दूसरी ओर सैकडों फीट गहरी खाई, जरा सा ध्यान भटका कि पूरी गाड़ी खाई में नीचे। कुछ भी अता-पता नहीं चल सकता। जैसे-जैसे हम ऊपर बढ़ते जा रहे थे, मौसम ठंडा व सुहाना होता जा रहा था। मेरे ज़ेहन में कई विचार आ रहे थे, जैसे किस तरह मनुष्य ने अपने मस्तिष्क तथा तकनीक का इस्तेमाल कर इन दुर्गम इलाकों में पहाडों को काटकर सड़क का निर्माण किया होगा। ऊपर चढ़ते हुए प्रकृति की वनस्पतियों में भिन्नता नजर आती जा रही थी। सड़क के किनारे साथ-साथ टॉय ट्रेन की पटरियां भी हमें दिखाई दे रही थीं। हम लोग एक कस्बे में पहुंचे जिसका नाम *'घूम'* है। इस जगह पर टॉय ट्रेन का रेलवे स्टेशन था। कहा जाता है कि ये सबसे ऊँचा रेलवे स्टेशन है।

'घूम' से सिर्फ 8-10 कि.मी. की दूरी पर ही दार्जिलिंग था। अंत में हम मॉल रोड होते हुए दार्जिलिंग में प्रवेश कर गये। ये बहुत सुंदर शहर था। शाम ढल चुकी थी, परंतु अभी अंधेरा होने में देर थी। मैं पूर्व में वायुसेना में था अतः मैंने सैनिक अतिथि गृह में रुकने की योजना बनाई, लेकिन वहाँ पहुँचने पर पता चला कि उस गेस्ट हाउस का रिनोवेशन चल रहा है और यहाँ पर ठहरने के लिए जगह नहीं है। मैंने वहाँ पास के होटल में एक रूम लिया। शाम हो गयी थी लाइटें चमक रही थी और पूरा दार्जिलिंग शहर रोशनी से जगमगा रहा था। मैं रास्ते के सफर से थक गया था अतः रूम में ही खाना मँगवा कर खाकर आराम करने लगा। एक घंटे आराम करने के बाद मैं उठा, सोचा दार्जिलिंग की शाम का आनंद लिया जाए। आपको बता दूँ यदि किसी शहर का असली मजा या जानकारी लेना हो तो पैदल घूमने से अच्छा और कुछ नहीं हो सकता। मैं पैदल दार्जिलिंग की सड़कों पर निकल पड़ा। मॉल रोड पर दोनों ओर सजी दुकानें जो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से लोगों का ध्यान आकर्षित कर रही थीं। कहीं पर चर्च की घंटियां, कहीं पर भगवान की सुंदर आरती और कभी-कभी मस्जिद से अज़ान सुनाई दे जाती थी। यहाँ पर सभी धर्म व समुदाय के लोग निवास करते हैं। मैंने वहाँ पर कुछ स्थानीय स्ट्रीट फूड का आनंद लिया और फिर घूमता हुआ वापस होटल आ गया।

दूसरे दिन घूमने का प्लान बनाया गया जिसके लिए मैंने लोगों से जानकारी पहले से ही ले ली थी। मैंने घूमने के लिए एक टैक्सी बुक कर ली जो मुझे दार्जिलिंग के मुख्य स्थलों को घुमाने वाली थी। यहाँ पर एक जगह है, *'टाईगर हिल'*, जो सेना के कार्य क्षेत्र में आती है। सुना है कि वहाँ पर 'सनराईज पॉइंट' है और उसके लिए ट्रैफिक तथा आर्मी से परमिशन लेनी पड़ती है। हमारे ड्राइवर ने यह काम शाम को ही कर लिया था। यहाँ उत्तर पूर्वी राज्यों में सूर्योदय बहुत जल्दी होता है। अतः मैं सुबह जल्दी तैयार हो गया और मेरी गाड़ी समय पर आ गयी। मैं गाड़ी में बैठकर समय पर *'टाईगर हिल'* पहुँच गया। वहाँ पर पहले से ही काफी भीड़ हो चुकी थी और लोग सूर्योदय का इंतजार कर रहे थे। हमारे इंतजार की घड़ियाँ समाप्त हुईं और पूर्व की ओर से लालिमा लिये हुए सूर्योदय हुआ। यह लाल रंग की गोलाकृति धीरे-धीरे ऊपर उठ रही थी। लोग इतने प्रसन्न हो रहे थे। सचमुच वह सूर्योदय का दृश्य मनोहारी था। लोग मोबाइल तथा कैमरे में वह दृश्य कैद कर रहे थे। मैंने भी उन पलों के अपने मोबाइल के कैमरे में संचित कर लिया।

'सनराईज पॉइंट' से लौटने के बाद हमारी दार्जिलिंग के अन्य दर्शनीय स्थलों को देखने की यात्रा शुरू हुई। सबसे पहले हम *हिमालय माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट* देखने गये, यह एक ऐसा संस्थान है जो लोगों को पहाडों पर चढ़ाई (ट्रेकिंग) करने का प्रशिक्षण देता है। वहाँ कुछ लोग ट्रेकिंग का अभ्यास कर रहे थे। कई जगहों पर प्रसिद्ध लोग, जो हिमालय की चोटी पर जा चुके हैं, उनके नाम पर पहाड़ियों का नाम रखा गया था। जैसे *तेनजिंग रॉक*, इत्यादि पहाड़ियों पर उनकी मूर्तियां बनाई गई थी। उन पहाड़ियों के साथ मैंने भी लिए। इसी से संबंधित एक संग्रहालय बनाया गया था जिसमें प्रसिध्द पर्वतारोहियों, जैसे *तेनजिंग, बचेन्द्री पाल, संतोष यादव* और कुछ सेना के अधिकारियों के हिमालय पर चढ़ने का इतिहास दिखाया गया था। इन सभी के चढ़ाई करने के समय, उपयोग किये जाने वाले उपकरण व औज़ार, जैसे रस्सी, पहनने वाले कपड़े, लालटेन, टॉर्च, साँस लेने वाले ऑक्सीजन सिलिंडर, मास्क, जूते, इत्यादि। इन सभी चीजों को देखने के पश्चात् मेरे मन में ख्याल आ रहा था कि इन लोगों ने हिमालय की चोटी पर पहुँचने के लिए कितना संघर्ष किया होगा और प्रकृति का प्रतिकूल वातावरण भी इनके अपने लक्ष्य प्राप्त करने में बाधा नही बन सका और चोटी पर पहुँच कर अपना परचम लहरा दिया। अंदर फोटोग्राफी मना थी। अतः मैं फोटो नहीं ले सका।

उसी प्रांगण में एक चिड़ियाघर भी था, जिसमें शेर, चीता तथा अन्य जानवरों के रहने के लिए उनके प्राकृतिक वातावरण को प्रदान कराने का प्रयास किया गया था। मैंने भी बंगाल टाइगर, गुजरात का बब्बर शेर, विभिन्न प्रजातियों के बंदर, जिराफ, विभिन्न प्रकार की चिड़ियों को प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देखा। चिड़ियाघर देखने के पश्चात् मैं *रोपवे (Ropeway)* गया। वहाँ पर रोपवे *ट्रॉली* में बैठकर चाय के बागान में गया। यह ट्रॉली चाय के बागान के ऊपर से निकलती है। ऊपर से ये चाय बागान इतने खूबसूरत लग रहे थे, जैसे उन्हें बड़े ही करीने से तराशा गया हो। मेरी *ट्रॉली* ठीक चाय के बागानों के पास रूकी। मैंने वहाँ उतरकर कुछ फोटो क्लिक किये। ऐसा लग रहा था कि कश्मीर के बाद हम दूसरे *प्राकृतिक स्वर्ग* में आ गये हैं। जिस तरफ नजर दौड़ाओ ढालू खेतों पर चाय के बागान ही नजर आते थे। उसके बाद मैं उसी *ट्रॉली* से वापस ऊपर आ गया।।

उसके पश्चात् मैं *'ट्रैकिंग रॉक'* गया, जहाँ कुछ लोग रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ने का प्रयास कर रहे थे। इसके बाद हमारा अगला पड़ाव चाय के बागान देखने का था। यहाँ पहुँचकर हमने यह देखा कि चाय के बागान पहाड़ियों के ऊपर से शुरू होकर घाटियों में फैले हुए थे। मैं उनको देखकर मंत्रमुग्ध हो गया। कुछ महिलाएँ तथा लड़कियाँ वहाँ पर पहाड़ी परिधानों को पहनकर विभिन्न मुद्राओं में फोटो खिचवा रही थीं। यह रंग-बिरंगी पोशाक व आभूषण उन महिलाओं की सुंदरता में चार चाँद लगा रही थीं।

इसके बाद हमारा अगला पड़ाव *जापानी मंदिर तथा बुध्द मंदिर* देखने का था। वहाँ पहुँचने से पहले रास्ते में हमारे ड्राइवर ने मुझे *तेनजिंग* का घर दिखाया जो, आज कल एक संग्रहालय में परिर्वतित कर दिया गया है। जैसे ही हम *जापानी मंदिर* पहुँचे, हमें अनुभव हुआ कि उस मंदिर में कितनी शांति थी। यह एक दो मंजिला मंदिर था और इसका

फ़र्श लकड़ी का बना हुआ था। मैंने श्रध्दापूर्वक भगवान के दर्शन किये। उसके बाद लौटकर मैं शांति का प्रतीकत्व करने वाले *बुद्ध मंदिर* को देखने गया, जहाँ सफेद रंग का मंदिर अपनी अलग ही छटा बिखेर रहा था। भगवान बुध्द की मूर्तियां विभिन्न मुद्राओं में मंदिर के चारों तरफ बनायी गयी थीं, कहीं ध्यान की मुद्रा में, तो कहीं लेटे हुए। कई मूर्तियों में लकड़ी की नक़्काशी और कई में पीतल की नक़्काशी थी। वहाँ पर ड्राइवर ने हमारी कुछ तस्वीरें मोबाइल से खीचीं।

बुद्ध मंदिर से निकलकर हमारा अगला गंतव्य स्थल था *'बतासिया लूप'*। वहाँ पहुँचकर हमने यह पाया कि छोटी ट्रेन की पटरियाँ एक गार्डन के चारों ओर गोलाकार में बनाई गयीं हैं। उस पर एक डीज़ल की छोटी *टॉय ट्रेन* खड़ी थी और हार्न देकर लोगों को सवारी करने के लिए आमंत्रित कर रही थी। यह लोगों के आकर्षण का केंद्र थी। इसी लूप के बीचों बीच एक गोरखा रेजीमेंट का जवान, जो पत्थर से बनाया गया था, अपनी बंदूक को उल्टा पकड़े वीर शहीदों के प्रति अपनी श्रंध्दांजलि दे रहा था। इतने में छुक-छुक करती और धुआँ उड़ाती एक ट्रेन लूप पर आयी। मुझे सचमुच वो दिन याद आ गये जब इस प्रकार की कोयले से ट्रेन चला करती थी। मैंने भी उस पर सवारी करके आनंद लिया। इस ट्रेन की सवारी के बाद हम *बुद्ध मोनेस्ट्री* देखने गये। वहाँ हमने मंदिर के अंदर प्रवेश किया। इस मंदिर में हमारे हिन्दू मंदिरों की तरह भीड़-भाड़ नहीं थी। हमने श्रध्दा से प्रणाम किया और वहाँ पर लगा हुआ धर्म चक्र भी घुमाया। बाहर आकर दुकानों से हमने बुध्द भगवान से संबंधित कुछ वस्तुएं तथा किताबें भी खरीदीं। इतने में मुझे फिर से छुक-छुक करती ट्रेन की आवाज सुनाई दी और मैंने दौड़कर चलती हुई ट्रेन की वीडियो बना ली। सुना है कि अंग्रेजों के समय यही ट्रेन दार्जिलिंग से जलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशन तक जाती थी।

अंधेरा छाने लगा था और मुझे वापस अपने होटल लौटना था। लौटते समय मैंने रघुनाथ मंदिर के दर्शन किये। हालांकि मंदिर का मुख्य द्वार बंद था, शायद वह मंदिर खुलने का समय नहीं था। फिर भी, बाहर का दृश्य बहुत सुंदर था। भगवान की मूर्तियां, मंदिर प्रांगण का फव्वारा, आदि सुंदर लग रहे थे। इसके पश्चात् मैं रेलवे स्टेशन, जहाँ से टॉय ट्रेन चलती है, देखने गया। वहाँ टॉय ट्रेन के साथ कुछ फोटो खिचवाईं और इसी के साथ मैं अपने होटल आ गया। मैंने ड्राइवर को धन्यवाद दिया और उसको पेमेन्ट देकर विदा किया।

रात के भोजन का समय हो गया था। मैंने रात का भोजन किया और दिन भर की गतिविधियों को याद कर सो गया। प्रातः काल उठकर तैयार होकर मैंने वापसी यात्रा के लिए सिलीगुड़ी के लिए कैब बुक की और फिर से वही रास्ते में प्रकृति के नजारे देखते हुए एक ढाबे पर खाने के लिए रुका। लंच के बाद मैं सिलीगुड़ी आ गया, वहाँ से सीधा बागडोगरा हवाई अड्डे पर पहुँचकर फ्लाइट से अगरतला आ गया। फ्लाइट में यात्रा के दौरान उन्ही जगहों को याद करता रहा। इस प्रकार हमारी दार्जिलिंग यात्रा बहुत ही सुखद व आनंददायक रही। मेरा सभी के लिए यह सुझाव है कि यदि किसी को मौका मिले तो दार्जिलिंग घूमने अवश्य जाना चाहिए।

मुंगरी

अमित गौरव
सहायक लेखा अधिकारी

मुंगरी, मुंगरी, ए मुंगरी कहाँ मर गई? इधर आओ। सविता ने झुंझलाते हुए अपनी छोटी बेटी को पुकारा। सविता की उम्र भी 40 वर्ष की ही थी, परंतु घर की जिम्मेदारियों के बोझ के कारण 65 की लग रही थी। उसके पति का देहांत 5 वर्ष पहले भूख के कारण हो गया था। तब से मुंगरी की देखरेख और लालन पालन उसकी माँ ही कर रही थी। आज उसकी बड़ी बेटी को देखने लड़के वाले आने वाले हैं। सुबह से ही सविता घर की साफ सफाई और तैयारियों में जुटी हुई थी।

सविता की आवाज़ में झुंझलाहट थी, लेकिन उसका दिल अपनी छोटी बेटी मुंगरी के लिए प्यार से भरा था। मुंगरी, जिसका असली नाम ममता था, केवल सात साल की थी। वह घर के पीछे वाले आंगन में अपनी पुरानी गुड़िया के साथ खेल रही थी, जो सविता अपनी शादी के समय मायके से लाई थी। गुड़िया का एक हाथ टूट चुका था, और उसका चेहरा धूल से सना था, लेकिन मुंगरी के लिए वह उसकी सबसे कीमती चीज़ थी।

"मुंगरी! सुनती हो कि नहीं? मेहमान आने वाले हैं, इधर आओ और ये कपड़े समेट दो!» सविता ने फिर पुकारा। उसकी आवाज़ में अब थोड़ा गुस्सा और थोड़ी थकान थी। सविता का चेहरा पसीने से तर था। उसने साड़ी का पल्लू कमर में खोंसा हुआ था, और हाथों में झाड़ू थी। घर छोटा-सा था—दो कमरे, एक छोटा-सा आंगन, और बाहर एक टूटी-फूटी बरसाती। लेकिन सविता ने इसे अपनी मेहनत से साफ-सुथरा रखा था।

मुंगरी भागती हुई आई। उसकी छोटी-सी चोटी हवा में लहरा रही थी, और उसकी फ्रॉक पर मिट्टी के दाग लगे थे। «मम्मी, मैं खेल रही थी ना... बस थोड़ा और!» उसने मासूमियत से कहा। "खेलने का समय नहीं है, बेटी। आज बड़े लोग आने वाले हैं। मंडी को देखने आएंगे। सब कुछ अच्छा होना चाहिए। चल, ये कपड़े उठा और बरसाती में रख दे," सविता ने थोड़ा नरम होकर कहा। मुंगरी ने मुँह बनाया, लेकिन माँ की बात मानते हुए कपड़े समेटने लगी। सविता ने एक गहरी साँस ली और फिर से काम में जुट गई।

मंडी, उसकी बड़ी बेटी, अब अठारह की हो चुकी थी। सविता को याद था, जब मंडी छोटी थी, तब वह भी मुंगरी की तरह बेफिक्र थी। लेकिन समय ने सविता और मंडी, दोनों को बदल दिया था। मंडी अब घर के कामों में हाथ बटाती थी। वह खेतों में सविता के साथ काम करती, और कभी-कभी गाँव की छोटी-मोटी दुकानों पर सिलाई का काम भी कर लेती थी।

आज मंडी को देखने वाले मेहमान शहर से आ रहे थे। सविता को गाँव की पंचायत ने बताया था कि यह परिवार अच्छा है। लड़का एक दुकान में काम करता था, और उसकी माँ चाहती थी कि वह गाँव की किसी साधारण, मेहनती लड़की से शादी करे। सविता को उम्मीद थी कि शायद यह रिश्ता मंडी के लिए एक नया जीवन लाए। लेकिन उसके मन में डर भी था। क्या मंडी इस बोझिल जीवन से मुक्त हो पाएगी? क्या वह शहर में खुश रहेगी? सविता का मन उलझन में था। सूरज ढलने लगा था। गाँव की हवा में मिट्टी और खेतों की खुशबू थी। सविता ने घर के बाहर एक छोटा-सा चूल्हा जलाया और चाय बनाने लगी।

मंडी ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने थे — एक साधारण सी नीली सलवार-कमीज़, जो उसने अपनी सिलाई से बनाई थी। वह शर्माती हुई सविता के पास आई और बोली, "मम्मी, मैं ठीक लग रही हूँ ना?" सविता ने उसे गौर से देखा। मंडी की आँखों में मासूमियत थी, लेकिन उसका चेहरा सविता की तरह थका हुआ नहीं था। उसकी जवानी अभी बरकरार थी। सविता ने मुस्कुराते हुए कहा, "मेरी बेटी तो चाँद जैसी है। बस, थोड़ा हँस लिया कर। ये लोग तुझे देखकर खुश हो जाएँगे।» तभी बाहर से एक गाड़ी की आवाज़ आई। मेहमान आ गए थे। सविता ने जल्दी से अपने चेहरे को साड़ी के पल्लू से पोंछा और मुंगरी को इशारा किया कि वह अंदर जाए। मंडी को लेकर वह थोड़ा घबराई हुई थी। उसने मंडी को बुलाया और उसे मेहमानों के सामने पेश किया। लड़के की माँ, शांति देवी, एक मोटी-ताजी औरत थी, जिसके चेहरे पर सख्ती और दयालुता का मिश्रण था। उनके साथ लड़का, रमेश, और उसका छोटा भाई भी था। रमेश की उम्र करीब बाइस साल थी। वह साधारण कद-काठी का था, लेकिन उसकी आँखों में एक ईमानदारी झलकती थी।

सविता ने उन्हें बैठने के लिए कहा और चाय पेश की। शांति देवी ने मंडी को देखा और कुछ सवाल पूछे। «लड़की पढ़ी-लिखी है? घर का काम जानती है?" सविता ने शांति को जवाब दिया कि मंडी ने दसवीं तक पढ़ाई की है और घर के सारे काम बखूबी कर लेती है। रमेश चुपचाप बैठा था, लेकिन उसकी नज़रें बार-बार मंडी की ओर जा रही थीं। मंडी शर्म से सिर झुकाए बैठी थी। बातचीत के बाद, शांति देवी ने सविता से कहा, "हमें लड़की पसंद है। लेकिन हम चाहते हैं कि शादी जल्दी हो। रमेश को अगले महीने नौकरी के लिए शहर वापस जाना है।» सविता का दिल धक् से रह गया। इतनी जल्दी? वह मंडी को और समय देना चाहती थी। लेकिन वह जानती थी कि यह मौका शायद फिर न आए। उसने हामी भर दी और मेहमानों को विदा किया।

रात हो चुकी थी। सविता, मंडी और मुंगरी एक ही चारपाई पर बैठे थे। मुंगरी अपनी गुड़िया को गोद में लिए सो रही थी। सविता ने मंडी से पूछा, "बेटी, तुझे ये रिश्ता मंजूर है?" मंडी ने धीरे से सिर हिलाया। «मम्मी, मुझे नहीं पता। लेकिन अगर आपको लगता है कि ये ठीक है, तो मैं तैयार हूँ।» सविता की आँखें भर आईं। उसने मंडी को गले लगाया और कहा, "मेरी बेटी, मैं चाहती हूँ कि तू खुश रहे। अगर तुझे ये रिश्ता नहीं चाहिए, तो बता दे।» मंडी ने कुछ देर सोचा और फिर बोली, "मम्मी, मैं आपके लिए बोझ नहीं बनना चाहती। मैं शादी कर लूँगी। लेकिन आप मुंगरी को पढ़ाना। उसे मेरी तरह नहीं जीना चाहिए।» सविता का दिल टूट गया। उसने मंडी को और कसकर गले लगाया। उस रात सविता सो नहीं पाई। वह सोच रही थी कि क्या वह सही कर रही है। क्या मंडी का भविष्य सुरक्षित होगा? क्या वह अपने पति की तरह भूख और गरीबी से नहीं जूझेगी?

अगले कुछ हफ्तों में शादी की तैयारियाँ शुरू हो गईं। सविता ने अपनी सारी जमा-पूँजी निकाल ली। गाँव वालों ने भी मदद की। मंडी की शादी सादगी से हुई, लेकिन उस दिन सविता की आँखों में खुशी और दुख दोनों थे। मंडी विदा होकर शहर चली गई।

कुछ महीनों बाद, मंडी का एक पत्र आया। उसने लिखा था कि वह खुश है। रमेश उसका ख्याल रखता है, और वह अब एक छोटी-सी सिलाई की दुकान में काम करती है। सविता ने पत्र पढ़कर राहत की साँस ली। उसने मुंगरी को बुलाया और कहा, "बेटी, तू पढ़ाई कर। तुझे अपनी दीदी से भी आगे जाना है।» मुंगरी ने अपनी गुड़िया को कसकर पकड़ा और मुस्कुराई। सविता ने आकाश की ओर देखा। शायद अब उसका बोझ थोड़ा हल्का हो गया था। लेकिन वह जानती थी कि मुंगरी के लिए अभी लंबा रास्ता बाकी था। और इस बार, वह उसे अकेले नहीं चलने देगी।

ब्रजवासी संत: एक जीवन जो भक्ति बना

केया सरकार
लेखाकार

यह कथा है उस आत्मा की जिसने जीवन की हर कठिनाई को राधा नाम में डुबो दिया। यह जीवनगाथा है वृंदावन के उस दिव्य संत की, जिनका शरीर अस्वस्थ रहा, लेकिन आत्मा राधामय रही। हम बात कर रहे हैं - ब्रजवासी श्री प्रेमानंद महाराज जी की। वृंदावन की शांत गलियों में स्थित श्री हित राधा केली कुंज आश्रम में एक दिव्य संत विराजमान हैं — प्रेमानंद जी महाराज। उनका चेहरा जैसे राधा रानी की करुणा से दमकता है, और आँखों में बस राधा नाम की गहराई। शरीर से दुर्बल, मगर आत्मा से अडिग। यह कहानी है उस दिव्य संत की, जो असहनीय शारीरिक कष्टों के बावजूद, लाखों लोगों को प्रेम और भक्ति का मार्ग दिखा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले के एक छोटे से गाँव "अखरी" में, 30 मार्च 1969 को एक बालक का जन्म हुआ — नाम रखा गया अनिरुद्ध कुमार पांडेय। ये बालक आम बच्चों की तरह न था। जहाँ बाकी बच्चे खिलौनों से खेलते थे, ये बालक रामचरितमानस, गीता और भागवत जैसे ग्रंथों में लीन रहता। उसकी आँखों में संसार की चंचलता नहीं, बल्कि शाश्वत सत्य की खोज थी।

पाँच वर्ष की उम्र में ही जब माँ उसे कथा सुनाती, वह घंटों ध्यानस्थ होकर सुनता और प्रसंगों पर प्रश्न करता — "रावण इतना बलवान था, फिर क्यों हारा?", "सबके साथ रहते थे, फिर भी अकेले क्यों थे?" — उसकी जिज्ञासा साधारण नहीं थी। वह उस चेतना की शुरुआत थी जो आगे चलकर करोड़ों आत्माओं का पथदर्शक बनेगी।

जब अनिरुद्ध जी केवल 13 वर्ष के थे, एक रात — या कहें एक अमृत बेला — सुबह के तीन बजे उन्होंने घर छोड़ दिया। न माता को बताया, न पिता को — बस एक चादर, एक गीता और राधा नाम का स्मरण साथ ले लिया।

यह निर्णय आवेश में नहीं था, यह आत्मा की पुकार थी। वे चल पड़े — नंगे पाँव, बिना भोजन, बिना पैसे, बिना किसी योजना के — उस यात्रा पर जो आत्मा को ईश्वर से मिलाने वाली थी।

काशी, प्रयागराज, चित्रकूट, हरिद्वार और अनेक तीर्थों की तपोभूमियों पर उन्होंने साधना की। कई रातें भूखे रहकर गंगा तट पर सोए, कई दिन केवल भिक्षा से जीवन चला। मगर उनका मन स्थिर था — "ईश्वर चाहिए, संसार नहीं।»

एक दिन काशी में, वे ध्यान में बैठे थे। न जाने कितने घंटे बीते, तभी उनकी चेतना में कुछ बदला। उन्हें रासलीला का दिव्य अनुभव हुआ, जिसने उनकी चेतना को झकझोर दिया। — वह केवल दर्शन नहीं था, वह उनके पूरे अस्तित्व को राधामय करने वाला अनुभव था।

उन्होंने कहा —

"उस क्षण लगा कि अब इस देह का उद्देश्य पूर्ण हुआ — राधा रानी ने मुझे स्वीकार कर लिया।"

उसके बाद उन्होंने खुद को केवल एक ही नाम के लिए समर्पित कर दिया — राधा।

उनके जीवन का अगला चरण उन्हें वृंदावन ले आया — वह भूमि जहाँ प्रत्येक कण, प्रत्येक वायु, प्रत्येक धूलि राधा-कृष्ण की लीला से भरी हुई है। यहाँ आकर उन्होंने श्री हित गौरांगी शरण जी महाराज के चरणों में शरण ली।

श्री गौरांगी शरण जी ने जब इस युवा साधक की आँखों में भक्ति की अग्नि देखी, तो तुरंत उन्हें दीक्षा दी। वह क्षण केवल परंपरा नहीं था — वह आत्मा का परमात्मा से मिलन था।

अनिरुद्ध अब "प्रेमानंद" बन चुके थे — प्रेम में आनंद, और आनंद में पूर्ण समर्पण।

वृंदावन में रहते हुए उन्होंने न केवल व्यक्तिगत साधना की, बल्कि सेवा और समाज कल्याण को भी अपना धर्म बना लिया। वर्ष 2016 में उन्होंने *"श्री हित राधा केली कुंज ट्रस्ट"* की स्थापना की। यह कोई साधारण संस्था नहीं, यह एक जीवित आश्रम है — जहाँ हज़ारों भक्तों को निःशुल्क भोजन मिलता है, चिकित्सा सुविधा, आवास और सबसे महत्वपूर्ण — राधा नाम की भक्ति का संचार मिलता है। यह ट्रस्ट एक ऐसा स्थान है जहाँ एक भूखा पेट भी भरता है, और एक भटका हुआ मन भी दिशा पाता है।

प्रेमानंद जी महाराज का जीवन बेहद अनुशासित और त्यागमय है। सुबह के 4:00 बजे उठकर स्नान और जप, फिर प्रवचन, दोपहर में साधना व सेवा, शाम को कीर्तन, रात्रि में भजन और आत्ममंथन। वे न तो किसी विशेष आसन पर बैठते हैं, न विशेष वस्त्र पहनते हैं।

वस्त्र — सफेद धोती-कुर्ता।
भोजन — शिष्यों द्वारा दिया गया प्रसाद।
सोने का स्थान — एक साधारण चटाई।
उनकी दिनचर्या स्वयं एक उपदेश है — "सादगी में ही साधना का मार्ग है।

आज प्रेमानंद जी महाराज के शरीर की हालत बेहद नाज़ुक है। डॉक्टरों की रिपोर्ट कहती है — «उनकी दोनों किडनी पूरी तरह खराब हो चुकी हैं। यदि वे आधुनिक इलाज या डायलिसिस ना लें, तो शरीर ज़्यादा समय नहीं चल पाएगा।» लेकिन जब डॉक्टरों ने उन्हें आराम करने की सलाह दी, तो उन्होंने मुस्कुराकर उत्तर दिया —

"यह शरीर विश्राम के लिए नहीं, सेवा के लिए मिला है।
जब तक प्राण हैं, राधा नाम जपता रहूँगा।"

वे प्रतिदिन घंटों ध्यान, कीर्तन और भक्ति में समय बिताते हैं। कभी वे बैठे-बैठे बेहोश हो जाते हैं, फिर भी उनका मन सिर्फ «राधा» में ही लगा रहता है। बीमारी के बावजूद वो रात में पदयात्रा करते हैं, सुबह प्रवचन देते हैं और हजारों की पीड़ा को एक मुस्कान में बदल देते हैं।

उनका आग्रह है कि गुरु का मार्गदर्शन, ब्रह्मचर्य और सेवा (सेवा–भक्ति योग) ही आत्मा की उन्नति के लिए ज़रूरी हैं।

उनके शिष्य बताते हैं कि कई बार वे बोलते-बोलते अचेत हो जाते हैं, पर होंठ तब भी "राधा राधा" जपते रहते हैं।

प्रेमानंद जी महाराज केवल साधु नहीं, एक विचार क्रांति हैं। वे युवाओं को कहते हैं:

"मोबाइल नहीं, मन से जुड़ो।"
"नशा छोड़ो, सेवा जोड़ो।"
"बाहर का ज्ञान मत ढूँढो, भीतर की शांति खोजो।"

वे शास्त्रों को इतनी सरल भाषा में समझाते हैं कि एक बालक भी समझ ले, और एक युवा प्रेरित होकर जीवन बदल ले। उनकी सरल भाषा और जीवन से जुड़े उदाहरण युवाओं को नशे, आलस्य, और दिशाहीनता से उभरने में मदद करते हैं। जब हम किसी संत का जीवन देखते हैं, तो वह सिर्फ एक व्यक्ति की यात्रा नहीं होती — वह होता है एक उजाला, जो हमारे भीतर सोई हुई आत्मा को जगा देता है। ऐसा ही एक उजाला हैं ब्रजवासी श्री प्रेमानंद जी महाराज, जिनकी वाणी में प्रेम है, दृष्टि में करुणा है और जीवन में त्याग की मिसाल। प्रेमानंद जी महाराज भक्ति योग के प्रबल समर्थक हैं। उनका मानना है कि ईश्वर से प्रेम करना ही सबसे महान योग है। वे कहते हैं:

"जब तक तुम्हारा मन प्रभु में नहीं रमता, तब तक हर सुख अधूरा है।»

वे लोगों को भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं — "नाम जप करो, लीला सुनो और राधा रानी के चरणों में मन लगाओ।"

उनकी कथा-प्रवचनों में कोई जटिलता नहीं होती, बल्कि इतनी सरलता होती है कि एक बच्चा भी समझ सके और एक वृद्ध भी आनंद पा सके। उनका यह संवाद यूट्यूब, सोशल मीडिया और लाखों सभाओं के माध्यम से लोगों तक पहुँच रहा है।

कुछ वचन जो उन्होंने समय-समय पर कहे —

"राधा नाम ही वह रस है जिससे आत्मा अमृतमय होती है।"
"जो सेवा नहीं कर सकता, वह साधना नहीं कर सकता।"
"त्याग में ही बल है, सेवा में शक्ति है, और भक्ति में मुक्ति है।"
"जब तुम प्रभु में रम जाओगे, तो शोक और मोह दोनों मिट जाएंगे।"
"राधा नाम ही एकमात्र औषधि है, जो मन को, तन को और आत्मा को भी ठीक कर सकती है।»
"गुरु की सेवा में जो सुख है, वह दुनिया के किसी ऐश्वर्य में नहीं।»
"भक्ति का अर्थ है स्वयं को मिटा देना, ताकि प्रभु तुम्हे जी सकें।»
"जब शरीर साथ ना दे, तब भी सेवा मत छोड़ो — सेवा ही सच्ची शक्ति देती है।»
"राधा नाम जपते रहो, चाहे आँसू आएँ या साँसे जाएँ।»
"संसार का सुख क्षणिक है, लेकिन राधा नाम शाश्वत है।»
"स्वयं को ईश्वर के चरणों में समर्पित कर दो — वही सबसे सुंदर जीवन है।»
"सत्य के मार्ग पर चलो, भक्ति को साधो और अपने भीतर परिवर्तन लाओ — यही है जीवन की सच्ची साधना।»
"अंदर का बदलाव ही वास्तविक बदलाव है।"
"ईमानदारी से जीवन जियो — चाहे राह कैसी भी हो।"
"राधा-विवेक से ही मन की व्याकुलता शांत होती है।"
"ईश्वर की कृपा से धन-दौलत नहीं बढ़ती, लेकिन अंदर की सोच बदलती है।"
"भीतर का परिवर्तन कई जन्मों के नकारात्मक प्रभावों को मिटा देता है।"

आज उनके भक्त सिर्फ आम लोग नहीं, लेकिन वे सबको एक ही भाव से देखते हैं — भक्ति में समर्पित आत्मा के रूप में। महाराज जी के प्रवचन अब सिर्फ वृंदावन तक सीमित नहीं हैं। आज प्रेमानंद जी महाराज के शिष्य भारत ही नहीं, अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल और बांग्लादेश तक फैले हैं। लोग उनके प्रवचनों को सुनते हैं, उनके दिखाए

मार्ग पर चलते हैं और अपने जीवन की दिशा बदलते हैं। उनकी वाणी यूट्यूब, फेसबुक और अन्य ऑनलाइन माध्यमों से दुनिया के कोने-कोने में पहुँच रही है।

देश, भाषा, संस्कृति — किसी भी सीमा को वे नहीं मानते, क्योंकि उनका संदेश है:

"ईश्वर सबके हैं — जो प्रेम करे, वही उनका है।»
महाराज जी कभी खुद को श्रेष्ठ नहीं मानते। वे कहते हैं —
"मैं न कोई गुरु हूँ, न कोई महंत —
जो प्रेम करे वही मेरा है, वही प्रभु का है।"

जब हम इस संसार में सुख-सुविधा के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते, तब एक दिव्य आत्मा किडनी खराब होने के बावजूद — हर दिन घंटों भक्ति और प्रवचन में बिताता है, दूसरों को सच्चा जीवन जीना सिखाता है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यही है — वे आडंबर से दूर हैं, दिखावे से मुक्त हैं, और केवल «प्रेम» में रमे हुए हैं। श्री प्रेमानंद जी महाराज का जीवन हम सबके लिए एक प्रकाशस्तंभ है — जो अंधकार में रास्ता दिखाता है, जो हमें बताता है कि सीमित संसाधनों में भी अनंत सुख संभव है, जो यह सिखाता है कि सेवा, साधना और समर्पण से ही जीवन का सार निकलेगा। उनकी कथा कोई पुरानी कहानी नहीं, वह आज की दुनिया का सबसे आवश्यक मार्गदर्शन है।

"यदि मेरे वचनों से तुम्हारा जीवन सुधर जाए,
यदि तुम्हारी आत्मा राधा नाम में रम जाए —
तो यही मेरी तपस्या की सफलता है।"

उनकी इस सादगी से प्रेरित होकर, उनके अनेक अनुयायी भी अब सादा जीवन अपनाकर अपने मन को शुद्ध कर रहे हैं। महाराज जी यह स्पष्ट करते हैं कि "सच्चा सुख बाहर नहीं, बल्कि हमारे अंदर है"। वे ध्यान, आत्मचिंतन और नाम-स्मरण को आंतरिक शांति की चाबी मानते हैं।

उनकी शिक्षाएँ हमें यह सिखाती हैं कि:
"जो खुद से जुड़ गया, वही सच्चे आनंद को जान पाया।»
बाहरी वैभव और मान-सम्मान उन्हें कभी नहीं लुभाता — वे तो बस कहते हैं, "राधा नाम ही मेरा सम्मान है।»
प्रेमानंद जी महाराज का जीवन सेवा से भरा हुआ है।
वे कहते हैं: "जो दूसरों की सेवा करता है, वह वास्तव में ईश्वर की आराधना करता है।»

प्रेमानंद जी महाराज एक ऐसे संत हैं जिनका जीवन आध्यात्मिक तप, संन्यास की गहन साधना, गुरु भक्ति और दान-सेवा से समृद्ध है। उनका जीवन ब्रह्मचर्य, भक्तिपूर्ण आचरण और आज़ादी की मिसाल है। वे सरल भाषा, शास्त्र ज्ञान और सर्वधर्म सम्मान की भावना लिये, आज की पीढ़ी को सत्य, प्रेम व करुणा का संदेश देते हैं।

प्रेमानंद जी महाराज की यह कथा एक दर्पण है — जिसमें हम देख सकते हैं कि जीवन का असली अर्थ क्या है:

"प्रेम, सेवा और पूर्ण समर्पण।»

एक राष्ट्र एक चुनाव

आशीष वर्मा
लेखाकार

भारत एक विशाल लोकतांत्रिक राष्ट्र है जहाँ विविधता में एकता इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। भारत के संविधान ने जनता को यह अधिकार दिया है कि वे अपने प्रतिनिधियों का चुनाव स्वतंत्र रूप से कर सकें। भारत में हर पाँच वर्षों में संसदीय चुनाव (लोकसभा) तथा राज्य स्तर पर विधानसभा चुनाव होते हैं। इसके अतिरिक्त स्थानीय निकायों, पंचायतों, नगर निगमों, आदि के चुनाव अलग-अलग समय पर आयोजित किए जाते हैं।

आज भारत में *"एक राष्ट्र, एक चुनाव" (One Nation, One Election)* की अवधारणा पर गहन विमर्श हो रहा है। यह विचार भारत में एक साथ लोकसभा और विधानसभा चुनाव कराने से संबंधित है। यह प्रस्ताव देश में बार-बार होने वाले चुनावों के कारण आने वाली बाधाओं, खर्चों और प्रशासनिक दबाव को कम करने के उद्देश्य से सामने आया है। इस निबंध में हम इस विचार की आवश्यकता, इतिहास, लाभ-हानि, चुनौतियाँ और संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

"एक राष्ट्र, एक चुनाव" की परिकल्पना

"एक राष्ट्र, एक चुनाव" का अर्थ है कि पूरे देश में लोकसभा और सभी राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ, एक ही समय पर कराए जाएं। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि मतदाता एक ही बार में अपने केंद्रीय और राज्य स्तरीय प्रतिनिधियों का चुनाव करें। यह प्रणाली देश में राजनीतिक स्थिरता, चुनावी खर्च में कमी और प्रशासनिक सुविधा प्रदान कर सकती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत में स्वतंत्रता के बाद पहले चार आम चुनाव (1952, 1957, 1962, 1967) एक साथ आयोजित किए गए थे। इन चुनावों में लोकसभा और सभी राज्यों की विधानसभाओं के लिए मतदान एक ही समय पर हुआ करता था। लेकिन समय के साथ कुछ विधानसभाओं को समय से पहले भंग करना पड़ा और इस वजह से यह प्रणाली टूट गई।

1968-69 के दौरान कई राज्यों में अस्थिरता के कारण विधानसभाएं समय से पहले भंग हुईं, और तब से केंद्र और राज्यों के चुनाव अलग-अलग समय पर होने लगे। वर्तमान में भारत में लगभग हर वर्ष किसी न किसी राज्य में चुनाव होते रहते हैं जिससे निरंतर चुनावी प्रक्रिया बनी रहती है।

"एक राष्ट्र, एक चुनाव" की आवश्यकता

1. **चुनावी खर्च में कटौती:** चुनाव एक महँगा आयोजन होता है। बार-बार चुनाव कराने से सरकार को भारी आर्थिक व्यय उठाना पड़ता है। यदि सभी चुनाव एक साथ कराए जाएं, तो चुनावी खर्च में उल्लेखनीय कमी आ सकती है।
2. **प्रशासनिक बोझ में कमी:** बार-बार चुनाव होने से सुरक्षा बलों, प्रशासनिक अधिकारियों और चुनाव आयोग पर भारी बोझ पड़ता है। एक साथ चुनाव से यह बोझ कम होगा।

3. **नीतिगत निर्णयों में बाधा कम होगी:** चुनावी आचार संहिता लागू होने के कारण सरकार नीतिगत निर्णय नहीं ले पाती है। बार-बार चुनावों की वजह से यह स्थिति कई बार उत्पन्न होती है। एक साथ चुनाव से यह समस्या हल हो सकती है।

4. **राजनीतिक स्थिरता और सुशासन:** एक साथ पूरे देश में चुनाव से सरकारों के कार्यकाल स्थिर हो सकते हैं, जिससे दीर्घकालिक योजनाओं पर बेहतर ढंग से काम किया जा सकता है।

5. **जनता की भागीदारी में सुधार:** एक साथ चुनाव होने पर मतदाताओं की भागीदारी में भी सुधार हो सकता है, क्योंकि लोगों को बार-बार मतदान के लिए बुलाना व्यावहारिक रूप से कठिन होता है।

लाभ (फायदे)

1. **समय और संसाधनों की बचत:** चुनावों में भारी मात्रा में मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है। यदि चुनाव एक साथ होंगे तो समय और संसाधनों की बड़ी मात्रा में बचत होगी।

2. **लोकतांत्रिक प्रक्रिया की मजबूती:** मतदाता को एक ही समय पर केंद्र और राज्य की सरकारें चुनने का अवसर मिलेगा, जिससे लोकतंत्र और सशक्त हो सकता है।

3. **राजनीति में जवाबदेही:** एक साथ चुनाव होने से राजनीतिक दलों को एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाना पड़ेगा जिससे जवाबदेही बढ़ेगी।

4. **विकास कार्यों में निरंतरता:** लगातार आचार संहिता लागू होने से विकास कार्य बाधित होते हैं। एक साथ चुनाव से इस रुकावट में कमी आएगी।

हानियाँ और चुनौतियाँ

1. **संवैधानिक और कानूनी बाधाएँ:** वर्तमान संविधान के अनुसार, सभी विधानसभाओं और लोकसभा की अवधि पाँच वर्षों की होती है। लेकिन सभी विधानसभाओं का कार्यकाल अलग-अलग समय पर शुरू और खत्म होता है। इसे एक साथ लाने के लिए संविधान में संशोधन की आवश्यकता होगी, जो आसान नहीं है।

2. **राज्यों की स्वायत्तता पर प्रभाव:** भारतीय संघात्मक ढांचे में राज्य एक स्वतंत्र इकाई है। एक साथ चुनाव कराने से राज्यों की स्वतंत्रता पर प्रश्न उठ सकते हैं।

3. **लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व में बाधा:** यदि कोई राज्य सरकार मध्यावधि में गिर जाती है, तो क्या पूरे देश में फिर से चुनाव होंगे? या उस राज्य को अंतरिम सरकार से चलाया जाएगा? यह सवाल गंभीर है।

4. **लोगों की राजनीतिक जागरूकता में भ्रम:** मतदाता केंद्र और राज्य की सरकारों के मुद्दों को अलग-अलग देखते हैं। एक साथ चुनाव होने पर मतदाता भ्रमित हो सकते हैं और एक ही मुद्दे पर वोट दे सकते हैं।

5. **छोटे दलों को नुकसान:** राष्ट्रीय मुद्दों के प्रभाव में छोटे और क्षेत्रीय दलों को नुकसान हो सकता है, क्योंकि उनके मुद्दें दब सकते हैं।

संवैधानिक संशोधन की आवश्यकता

"एक राष्ट्र, एक चुनाव" के क्रियान्वयन के लिए कई संवैधानिक अनुच्छेदों में संशोधन करना आवश्यक होगा, जैसे:

- अनुच्छेद 83 (लोकसभा का कार्यकाल)
- अनुच्छेद 172 (राज्य विधानसभा का कार्यकाल)
- अनुच्छेद 356 (राष्ट्रपति शासन)
- जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951

संविधान संशोधन के लिए संसद के दोनों सदनों में दो-तिहाई बहुमत और कुछ संशोधनों के लिए आधे से अधिक राज्यों की मंजूरी भी आवश्यक होगी।

विकल्प और समाधान

यदि एक साथ चुनाव कराना तुरंत संभव नहीं है, तो चरणबद्ध तरीके से इसकी शुरुआत की जा सकती है:

1. कुछ राज्यों के चुनाव लोकसभा चुनाव के साथ कराए जाएं और धीरे-धीरे इसे व्यापक स्तर पर लागू किया जाए।
2. राज्यों में मध्यावधि चुनाव की स्थिति से बचने के लिए *'नो-कॉन्फिडेंस मोशन'* और 'कॉन्फिडेंस मोशन' को जोड़कर देखा जा सकता है।
3. सभी राजनीतिक दलों और राज्यों से संवाद कर एक सर्वसम्मति बनाने का प्रयास किया जाए।

राजनीतिक दलों की राय

इस विचार पर विभिन्न राजनीतिक दलों की राय अलग-अलग है। सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भा.ज.पा.) इस प्रस्ताव का समर्थन करती रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कई बार *"एक राष्ट्र, एक चुनाव"* को लोकतंत्र के लिए लाभकारी बताया है। वहीं कुछ विपक्षी दल इस प्रस्ताव को संघीय ढांचे के खिलाफ बताते हैं और इसे लोकतंत्र पर नियंत्रण का प्रयास मानते हैं।

हालिया पहलें

वर्ष 2023 में भारत सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति गठित की थी ताकि "एक राष्ट्र, एक चुनाव" के कार्यान्वयन की संभावनाओं का अध्ययन किया जा सके। इस समिति का उद्देश्य यह देखना था कि किस प्रकार संवैधानिक, कानूनी और प्रशासनिक ढांचे में आवश्यक परिवर्तन कर इस विचार को साकार किया जा सकता है।

निष्कर्ष

"एक राष्ट्र, एक चुनाव" एक महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रभाव वाला विचार है, जो भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था को अधिक प्रभावी और आर्थिक रूप से टिकाऊ बना सकता है। यह विचार चुनावी सुधार की दिशा में एक बड़ा कदम हो सकता है, लेकिन इसे लागू करने से पहले सभी संबंधित पक्षों — केंद्र और राज्य सरकारों, राजनीतिक दलों, विशेषज्ञों और नागरिक समाज — से व्यापक परामर्श आवश्यक है।

इस प्रणाली को अपनाने से पहले हमें इसकी संवैधानिक, सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक पेचीदगियों को समझना होगा और उन पर समाधान निकालना होगा। यदि यह विचार सफलतापूर्वक लागू होता है, तो भारत न केवल समय और संसाधनों की बचत करेगा बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भी एक नई गति और दिशा मिलेगी।

प्रेमचंद पर एक दृष्टिकोण

लोकेश सिंह मनराल
सहायक लेखा अधिकारी

बनारस के लमही गाँव में 31 जुलाई 1880 को जन्मे धनपत राय श्रीवास्तव, जिन्हें हम सब प्रमचंद के नाम से जानते हैं, अभावों में पले-बढ़े। प्रेमचंद ने जीवन के यथार्थ को अत्यंत नज़दीक से देखा था, जिसका स्पष्ट चित्रण हमें उनके साहित्य में देखने को मिलता है।

कथा और उपन्यास सम्राट, मुंशी प्रेमचंद ने अनेकों कहानियां एवं उपन्यासों की रचना की। उनकी प्रमुख उपन्यास कृतियों में *सेवासदन, गोदान, रंगभूमि, निर्मला, कर्मभूमि, गबन,* आदि उल्लेखनीय हैं। वहीं कहानियों में *'पूस की रात', 'नमक का दारोगा', 'ईदगाह', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'बड़े घर की बेटी', 'कफ़न',* आदि उल्लेखनीय रही हैं।

कलम से क्रांति लाने की जो कल्पना की जाती रही है, मुंशी जी ने उसे अपनी कलम से अवतरित कर दिखाया था। लिखने की विकलता, अभिव्यक्ति की प्रबल इच्छा इस स्तर की रही होगी जो धनपत राय को प्रेमचंद बना गई। प्रेमचंद का कथा साहित्य भारतीय जनमानस की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पहलुओं पर एक व्यापक दृष्टिकोण को लेकर रचा गया।

मुंशी जी संवेदनशील मानसिकता के धनी थे, जिसे उन्होंने गरीबों, किसानों, मज़दूरों के दुख-दर्द दिखाने में व्यक्त किया। वे हमेशा सामाजिक न्याय और सुधार के पक्ष में रहे। उन्होंने समाज की बुराइयों, जातिवाद, जन अंधविश्वास और महिला सशक्तिकरण के मुद्दों को अपने लेखन में उजागर किया जो उनकी सामाजिक चेतना को दर्शाता है।

प्रेमचंद की लेखनी में वर्णन अतुलनिय है। उनकी भाषा द्वारा घटनाओं के दृश्य साकार हो उठते हैं। प्रेमचंद की प्रमुख कथा शैली वर्णनात्मक है एवं कहानियों में संवाद-शैली के अच्छे उदाहरण मिल जाते हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में जटिल भाषा की जगह सरल एवं सहज भाषा का उपयोग किया, जिसे आम आदमी भी आसानी से समझ सके। हिंदी और उर्दू साहित्य में उन्होंने एक नए युग का प्रारंभ किया एवं एक सहज और संवेदनशील भाषा को सृजन की भाषा बनाया।

हिंदी साहित्य का कथा साहित्य प्रेमचंद के बिना अकल्पनीय है, अधूरा है-जहाँ हम उनके साहित्यिक जीवन के शुरुआती दौर में उन्हें आदर्शवादी लेखक अथवा कथाकार के रूप में देखते हैं, जब उनकी कहानी *'नमक का दारोगा'* प्रकाशित होती है। ऐसा कहा जाता है कि यदि स्वतंत्रता पूर्व के भारतीय कृषक जीवन के इतिहास को समझना हो, तो प्रेमचंद के साहित्य से सुंदर कोई अन्य माध्यम नहीं।

जहाँ लेखन के शुरुआती दौर में हम उनका आदर्शवादी स्वरूप देखते हैं, वहीं बाद के दौर में उनका नितांत यथार्थवादी साहित्यिक रूप हमें देखने को मिलता है। *'पूस की रात'* कहानी खेतिहर किसान से मजदूर में परिवर्तित होते भारतीय किसानों की दास्तां का वर्णन करती है। *'कफ़न'* कहानी में हमें उस वर्तमान समाज में स्त्रियों के प्रति संवेदनहीनता की झलक दिखाई देती है। वहीं 'ईदगाह' कहानी का प्रमुख पात्र हामिद हमारे समक्ष 'उपयोगितावाद' और 'उपभोक्तावाद' के बीच के महीन अंतर को स्पष्ट करता है। 'गोदान' की बात करें तो प्रेमचंद जी ने इसमें सामंतवादी व्यवस्था में जकड़े हुए ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण किया है और यह दर्शाने की कोशिश की है कि समाज की कुछ विशेष प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था से शोषण का जन्म होता है। *'सेवासदन'* प्रेमचंद जी का पहला उपन्यास है जिसमें उन्होंने वेश्याओं की समस्याओं को सटीकता से उठाया है।

प्रेमचंद केवल साहित्यकार ही नहीं, बल्कि सामाजिक समस्याओं के चिंतक भी थे। प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त छुआ-छूत, भेदभाव एवं ऊँच-नीच जैसी कुरीतियों का भी गंभीरता से चित्रण किया। उनकी प्रमुखता सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को प्रदर्शित करने पर रहती थी, न कि जाति या धर्म पर। उनकी इस प्रवृत्ति की झलक उनके साहित्य में भी स्पष्ट है।

मुंशी प्रेमचंद के समकालीन लेखक जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, आदि प्रमुख हैं लेकिन प्रेमचंद की लेखन शैली और सामाजिक सराकारों ने उन्हें एक अलग पहचान दी हुई है| उन्हें हिंदी और उर्दू साहित्य में एक महान व्यक्तित्व माना जाता है।

उनकी रचनाएं समाज में सुधार और आम आदमी के जीवन को प्रगतिशील दृष्टिकोण से देखना उनका सामाजिक संदेश बतलाती हैं| उनकी कृतियां आज भी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व हमेशा याद रखा जाएगा| हिंदी साहित्य के ऐसे महान रचनाकार का योगदान सदैव ही साहित्य में रुचि रखने वालों के लिए वंदनीय बना रहेगा।

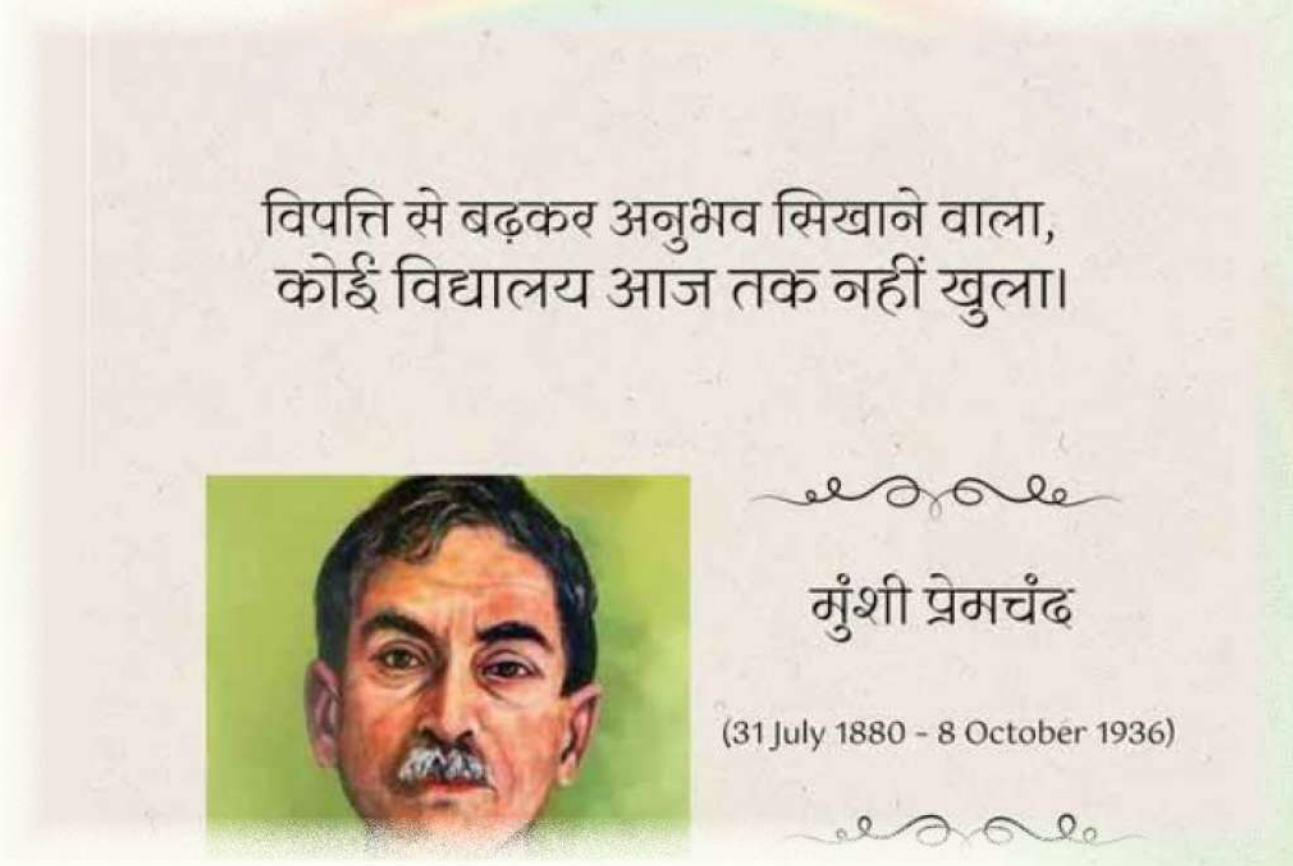

मुस्कुराहट

गौतम कुमार
लेखाकार

भारत सरकार के अनुसार, परिवार उन व्यक्तियों के समूह को कहा जाता है जो आपस में रक्त या विवाह के माध्यम से जुड़े हों, जैसे पति-पत्नी और उनके बच्चें, माता-पिता। परंतु हमारे अनुसार तो हमारा परिवार दादा-दादी, चाचा-चाची, उनके बच्चे, उनके बच्चों के बच्चे, नाना-नानी, मामा-मामी, मौसा-मौसी, जीजा-जीजी, भांजा-भांजी, इत्यादि को कहा जाता है। भांजा-भांजी से याद आया कि हमारे भी कुछ प्यारे-प्यारे भांजा और भांजी हैं। एक दिन की बात है कि मैं अपनी दीदी के घर गया हुआ था। उस समय दीदी के घर के लगभग सभी सदस्य इकट्ठे बैठे हुए थे, तभी मैंने सोचा कि क्यों न बच्चों को कुछ ज्ञान की बातें बतायी जाएं जिससे उन्हें भी कुछ फायदा हो। तभी मैंने मुस्कुराने के फायदे बताना शुरू किया।

वैसे तो मुस्कुराने के बहुत सारे फायदे हैं। ज्यादातर तो अपने ही फायदे होते हैं, जैसे कि स्वास्थ्य में सुधार, शरीर का तनाव कम करना, रक्तचाप कम करना, दर्द से राहत, मूड बेहतर करना, सामाजिक संबंध बेहतर करना, इत्यादि। परंतु, हर जगह मुस्कुराना भी सही नहीं होता है क्योंकि मेरे गाँव की एक कहानी है कि गाँव में एक लड़के की दादी का देहांत हो गया था। वहाँ पर बहुत सारे लोग इकट्ठा थे, सभी की आँखें नम थीं, और चेहरे पर उदासी, क्योंकि दादी बहुत ही प्यारी और संस्कारी थी। पर एक लड़का वहाँ पर ऐसा था जो यह सब देखने के बाद भी मुस्कुरा रहा था। यह देखकर दादी के कुछ पोतों को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने उस लड़के को बहुत पीटा, फिर भी वह मुस्कुराये जा रहा था। यह देखकर उन्होंने उसे और पीटा, लेकिन फिर भी वह मुस्कुराये जा रहा था। यह देखकर कुछ बुजुर्गों ने उससे पूछा कि, इतना पिटने के बाद भी तुम मुस्कुरा क्यों रहे हो? पूछने पर उसने बताया, "बाबा, हमर मुहमें ऐसन् है त हम का करें।"

ये सब सुनकर मेरी एक भांजी जिसका नाम आरुषि वर्मा है, जो कक्षा 6 में पढ़ती है और हम घर में उसे प्यार से गुज्जू बुलाते हैं, उसने बोला मामा मैंने भी मुस्कुराहट पर एक कहानी लिखी है। अगर आप बोलो तो मैं भी सुनाती हूँ। मैंने भी बोला सुनाओ फिर। उसने सुनाया:

सोचिए आज से कुछ सप्ताह बाद आप दुनिया में न हों, लोग आपके बारे में बात कर रहे हैं लेकिन किसी को याद होगा, कि आपने अपनी जिंदगी में कितना रुपया कमाया है? नहीं। लोग सिर्फ एक ही चीज याद रखते हैं, कि आप लोगों के साथ कैसे मुस्कुराकर बात किया करते थे। मुस्कुराहट एक ऐसी ताकत है जो दुनिया बदल सकती है।

एक गाँव में एक छोटी सी लड़की थी, जिसका नाम रिया था। वह बहुत खुशमिज़ाज लड़की थी। उसका चेहरा हमेशा मुस्कुराहट से भरा रहता था। एक दिन जब रिया बाजार जा रही थी, तब उसने रोते हुए एक बूढ़ी औरत को देखा। यह उससे देखा नहीं गया। वो उसके पास गई और हल्की सी मुस्कान देते हुए पूछी, "दादी, आप क्यों रो रही हो? आपका चेहरा इतना सुंदर है। रोओ मत, कृपया चहरे पर थोड़ी मुस्कुराहट तो लाओ।" बूढ़ी दादी ने पहले तो हैरानी से देखा, लेकिन बच्चे की मुस्कान भरी बातों से खुश होकर बोलीं, "बेटा, आप भी बहुत प्यारी हो। आपकी मुस्कुराहट देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुई। मेरे सारे दुख, दर्द दूर हो गए। अब मैं नहीं रोऊंगी।"

सोचिए, हमारी एक मुस्कान से किसी का दिन बन सकता है। हम हमेशा भाषा के लिए लड़ते आये हैं। हिंदी अच्छी है, अंग्रेजी अच्छी है, उर्दू अच्छी है और न जाने क्या-क्या। लेकिन, हम भूल गये हैं कि हमें और हमारे देश को प्यार और

मुस्कुराहट की भाषा से भी चलाया जा सकता है। यह एक ऐसी भाषा है जो हर किसी को समझ आती है। मुस्कुराहट सिर्फ एक चेहरे का भाव नहीं है, यह एक जज़्बा है। जब हम मुस्कुराते हैं, तो हमारे अंदर का दर्द, गुस्सा, सभी छूमंतर हो जाते हैं और हम सकारात्मक ऊर्जा दूसरों तक पहुँचाते हैं। परंतु, अब हमें किसी के चेहरे पर मुस्कान ऐसे देखने को मिलती है जैसे मुस्कुराहट पर भी शुल्क लगते हों। मुस्कुराओ, अगर आज आप कहीं कुछ हार गए हो, शायद किसी को उस जीत की तुमसे ज्यादा जरूरत होगी। मुस्कुराओ, अगर कुछ खो गया हो। शायद जिस के नसीब का था वो उसे मिल गया है। दिल टूट गया है, तो किसी का जोड़ने के लिए किसी का तोड़ना पड़ता है। बार-बार ये सोचकर हताश हो जाते हैं कि इससे अच्छा ये हो जाता, इससे अच्छा वो हो जाता। यह सोचकर मुस्कुराओ कि इससे बुरा हो जाता तो क्या होता? मुस्कुराओ यह सोचकर कि हमारे पास है रोटी, कपड़ा और मकान और घर के नीचे है एक दुकान। मैंने अपनी भांजी से पूछा, "बाबा रे, बाबा! इतना सारा ज्ञान जो तुमने मुझे दे डाला, कहाँ से आया?" उसने फिर मुस्कुराकर कहा, "कुछ तो वातावरण से और कुछ किताब की शरण से।"

भाषा, व्याकरण और लिंग निर्धारण: सामाजिक और भाविक विडम्बना

रोहित यादव
सहायक लेखा अधिकारी

भाषा मात्र संवाद का साधन न होकर समाज के विचारों, सांस्कृतिक मूल्यों और मानसिकता का भी आईना है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में संज्ञा-लिंग निर्धारण, यानि पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के वर्गीकरण को अक्सर हम केवल व्याकरण के नियमों तक सीमित समझते हैं। किंतु यह निर्धारण समाज की गहन धारणाओं, मान्यताओं और स्त्री-पुरूष की भूमिका को प्रकट करते हैं। यह न केवल हमारी भाषा को संरचित करता है बल्कि इस प्रक्रिया में समाज की सोच को भी आकार देता है। यह दर्शाता है कि हम किन गुणों, वस्तुओं और क्रियाओं को स्त्रीत्व, तथा किन को पुरूषत्व के साथ जोड़ कर देखते आये हैं। भाषा के इस सामाजिक पक्ष को समझना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि कई बार हम अनजाने में जिन शब्दों का चयन करते हैं, वे हमारे गहरे संस्कारों और पूर्वधारणा को उजागर कर देते हैं।

कई बार हिंदी व्याकरण का लिंग निर्धारण वस्तुओं या अवधारणओं की प्रकृति के आधार पर होता हुआ दिखाई देता है। लेकिन इसमें चुपचाप एक सामाजिक मानसिकता भी झलकती है, जैसे जब नाजुक पंखुड़ियों को स्त्रीलिंग कहा गया और कठोर नुकीले काटों को पुल्लिंग की श्रेणी में डाला गया, जब पानी मीठा रहा तब नदी को स्त्रीलिंग कहा गया और जब पानी खारा हुआ तो समुन्दर को पुल्लिंग; जब पानी आसमान में हमारी पहुँच से बहुत दूर रहा, तब बादल पुल्लिंग हो गये और जब पानी बूंदों में टपकने लगा तब बारिश स्त्रीलिंग हो गई। युद्ध होता है, शांति आती है। हवा चलती है, तूफान आता है। शायद व्याकरण की रचना करने वालों ने हर उस चीज में, जिसमें उन्हें नाज़ुकता दिखी, उसमें उन्हें स्त्रीत्व का भाव दिखाई दिया वरना उपर्युक्त वर्गीकरण केवल भाषा के नियम तो नहीं हैं, ये सब समाज की दृष्टि से प्रेरित वर्गीकरण दिखाई देते हैं। यह व्यवस्था प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यह धारणा मजबूत करती है कि कोमलता, संवेदनशीलता स्त्री के गुण हैं और साहस, कठोरता, बल, आदि पुरूष के गुण।

भाषा विचार गढ़ने का औजार

भाषा संवाद का ही नहीं, विचार निर्माण का माध्यम भी है। जब हम माँ की ममता को स्त्री सुलभ तथा शौर्य को पुरूषार्थ ठहराते हैं, तब भाषा के द्वारा एक खास सोच का प्रचार-प्रसार स्वतः होने लगता है। कभी सोचे बिना ही समाज यह मानने लगता है कि स्त्री-पुरूष के कुछ गुण स्वाभाविक हैं, जबकि वास्तविकता में वे केवल सामाजिक निर्माण हैं।

जैसे कोई पुरूष जब भावुक दिखाई दे तो वह कमजोर कहलाता है, जबकि स्त्री का वही रवैया स्वाभाविक रूप से माफ कर दिया जाता है। इसी प्रकार साहसी स्त्री मर्दाना कहलाती है — जैसे कि साहस सिर्फ मर्द की बपौती है। बहुत सी सांस्कृतिक वस्तुएं, जैसे — चूड़ी, बिंदी, साड़ी — स्त्री से जुड़ी रहीं। लेकिन अजीब बात है कि ये प्रतीक जब पुरुषों की ओर इंगित करते हुये, तिरस्कार या तंज में बोले जाते हैं, तब ये कमजोरी बन जाते हैं — वरना बताइये चूड़ी पहन लेना कमजोरी की निशानी कैसे हो गई। यह भाषा में छिपी लैंगिक भेदभाव की बानगी है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे बहुत अंदर समाहित होकर चली आ रही है। यह विडम्बना ही है कि औरतों की पहचान बने प्रतीक समाज में तुच्छता के पर्याय बन जाते हैं जबकि पुरुषत्व के प्रतीक प्रोत्साहन और गौरव का कारण बन जाते हैं। ऐसे तिरस्कारपूर्ण प्रयोग समाज में एक गहरी असमानता का संकेत देते हैं जिसे सुधारने की आवश्यकता है।

शिक्षा में नई शुरूआत की आवश्यकता

आवश्यक है कि विद्यालयों में भाषा का शिक्षण मात्र व्याकरण या सही गलत तक सीमित न रहे। विद्यार्थियों को यह बताना चाहिए कि लिंग निर्धारण न तो प्राकृतिक है और न ही अपरिवर्तनीय है, अगर शिक्षा में यह विचार जोड़ा जाये कि लोगों का स्वभाव, गुण या कार्यक्षमता लिंग निर्धारित नहीं है तो अगली पीढ़ी अधिक समानता और न्यायपूर्ण दृष्टिकोण ग्रहण करेगी।

परिवर्तन सहज नहीं है, परंतु यदि शिक्षा, साहित्य और मीडिया द्वारा सतत प्रयास हो, तो भाषा मानकों में भी समावेशिता लाई जा सकती है। साहित्यकारों, पत्रकारों और ज्ञानी समाज को भी यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि वे अपने लेखन और अभिव्यक्ति में ऐसी भाषा का चयन करें जो बिना किसी लैंगिक भेद-भाव के सबको समान सम्मान दे। सामाजिक अभियानों, प्रचार माध्यमों और सरकारी दस्तावेजों में भी समावेशी एवं संवेदनशील भाषा का प्रयोग किया जाये, जिससे समाज में जागरूकता बढ़े।

निष्कर्षः-

भाषा में छिपे सामाजिक ढाँचे पहचानना और उन पर सवाल उठाना समय की मांग है। जब तक हम यह नहीं समझेंगे कि लिंग निर्धारण केवल व्याकरणिक सुविधा नहीं, सामाजिक पुनर्धारणा भी है, तब तक असमानता की जड़ें भाषा के माध्यम से और फैलती रहेंगी। कोमलता, कठोरता, संवेदनशीलता — ये गुण किसी भी व्यक्ति के हो सकते हैं। भाषा की भूमिका और उसमें छिपी लैंगिक धारणाओं का विवेकपूर्ण एंव आलोचनात्मक विश्लेषण करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अधिक न्यायपूर्ण और स्वतंत्र समाज की रचनाकार बन सके। आखिरकार भाषा में हम जो बदलाव लाते हैं, वही समाज में दूरगामी परिवर्तन का कारण बनता है। इसी दिशा में छोटे-छोटे प्रयास मिलकर भविष्य में अधिक समान, न्यायपूर्ण और समावेशी समाज की नींव रख सकते हैं।

गांधी नगर गुजरात में हिंदी दिवस 2025 एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में कार्मिकों की सहभागिता

मेरी काशी: एक बी.एच.यू. छात्रा की डायरी से

प्रियदर्शिनी सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

जब मैंने पहली बार बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बी.एच.यू) के प्राचीन और भव्य गेट पर कदम रखा, तब यह केवल एक शैक्षणिक अध्याय की शुरुआत नहीं थी — यह मेरी एक नई यात्रा का आरंभ था। मुझे नहीं पता था कि आने वाले वर्षों में यह शहर मुझे सिर्फ किताबों का ही नहीं, बल्कि जीवन का दर्शन और संस्कृति की गहराई का नया पर्याय भी देगा। वाराणसी — या जैसे हम छात्राएँ इसे स्नेह से कहती हैं, काशी — सिर्फ एक शहर नहीं, एक जीती-जागती परंपरा है, जो हर मोड़ पर कुछ नया सिखाती है।

मुझे आज भी याद है जब मैंने पहली बार बी.एच.यू. के विशाल परिसर में प्रवेश किया था। मुख्य द्वार पर लिखा था —"ज्ञानं अनन्तम्", और सचमुच, इस परिसर ने मुझे ज्ञान और अनुभवों की अनंत दुनिया से परिचित कराया। मेरा हॉस्टल कुछ ही दिनों में मेरा दूसरा घर बन गया। अलग-अलग राज्यों से आई सहेलियाँ अब मेरी बहनों जैसी हो गईं — हर त्योहार साथ मनाना, रात की चाय के साथ विचारों का आदान-प्रदान करना, और परीक्षा की रात मिलकर पढ़ाई करना — ये सब यादें जीवनभर साथ रहेंगी।

पहले हफ्ते में ही मैंने महसूस किया कि बी.एच.यू. सिर्फ एक विश्वविद्यालय नहीं, बल्कि एक जीवंत संस्कृति है। यहाँ सुबह की शुरुआत मंदिरों की घंटियों से होती है, दोपहर में लाइब्रेरी की शांत वातावरण में किताबें पढ़ते छात्र दिखते हैं, और शाम को गंगा घाट पर साधुओं और पर्यटकों की भीड़ होती है।

बी.एच.यू. के कुलगीत की पंक्तियाँ कुछ इस प्रकार हैं:-

"मधुर मनोहर अति सुंदर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
मधुर मनोहर अति सुंदर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
यह तीनों लोकों से न्यारी, काशी सुज्ञान धर्म और सत्य राशि।
बसी है गंगा के रम्य तट पर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
राजधानी मधुर मनोहर, अति सुंदर यह सर्वविद्या की राजधानी। "

गंगा और गलियों का जादू तो अमूल्य है। काशी की आत्मा है — गंगा मैया। जब भी मन अशांत होता या सुबह की पहली किरण देखना हो तो मैं अस्सी घाट चली जाती। वहाँ बैठकर दोस्तों के साथ कॉलेज की कुछ चटपटी बातों के साथ बहती गंगा को देखना, जैसे खुद के भीतर उतर जाना होता। गंगा आरती की वह शाम, जब दीपों की कतारें लहरों पर तैरती हैं, ऐसा प्रतीत होता जैसे धरती और स्वर्ग का मिलन हो रहा हो।

काशी की गलियाँ — संकीर्ण ज़रूर, पर अनुभवों से समृद्ध। हर गली किसी कथा की तरह है। कभी किसी पुरानी दीवार पर तुलसीदास की चौपाई पढ़ने को मिलती, तो कभी किसी मोड़ पर बैठा एक वृद्ध संत जीवन का ऐसा सत्य बता जाता, जो शायद किसी पुस्तक में नहीं मिलता।

बी.एच.यू. का अनुभव कुछ ऐसा है कि वहाँ का हर विभाग, हर कक्षा, और हर शिक्षक मेरे लिए एक अनुभव रहा। हमारे प्रोफेसर सिर्फ शिक्षाविद नहीं, बल्कि मार्गदर्शक थे। उन्होंने हमें विनम्रता, आत्म-संवाद और विवेकशीलता सिखाई — जो आज के समय में किसी भी मनुष्य के लिए बहुत आवश्यक गुण हैं।

यहाँ के कला उत्सव, सांस्कृतिक संध्याएँ, और टेक्नो-फेयर जैसे आयोजन सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि मेरे व्यक्तित्व को निखारने वाले मंच बन गए। इन आयोजनों में भाग लेकर मैंने खुद को हर स्तर पर विकसित होते देखा। बी.एच.यू. की कृष्ण जन्माष्टमी का वह उत्सव आज भी मन में उसी ताज़गी के साथ याद आता है जब प्रत्येक हॉस्टल और विभाग पूर्ण रूप से सुसज्जित अपने अंदाज़ में जन्माष्टमी उत्सव को एक त्योहार की तरह मानता था।

काशी का ज़िक्र हो और इसके भोजन का नाम न लिया जाए, तो यह अधूरा लगेगा। यहाँ की *कचौड़ी गली* की कचौड़ी-सब्ज़ी, *गोदवालिया* की जलेबी और बनारसी ठंडाई और *लंका* का बनारसी स्पेशल पान — हर स्वाद में एक कहानी छुपी है। चाय की दुकानों पर बैठकर बहसें करना — साहित्य से लेकर समाज तक — हम छात्राओं के लिए एक प्रकार की बौद्धिक स्वतंत्रता का प्रतीक बन गया।

काशी के लोग अपने आप में प्रेरणा हैं। कोई कबीर के दोहे सुना देता है, तो कोई रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता। चाहे वो भंगड़ा करते साधु हों या ठेले पर चाय बेचते चायवाले, हर कोई अपने अंदाज़ में इस शहर को जीता है। यहाँ की महिलाएँ — चाहे मंदिरों में आरती करती हुई हों, चाहे दुकानों पर काम करतीं — हर रूप में जीवन की गरिमा का उदाहरण हैं।

बनारस ने मुझे केवल शिक्षा नहीं दी, बल्कि एक जीवन-दृष्टि, एक आध्यात्मिक जुड़ाव और एक संस्कृति का स्पर्श दिया।

काशी मेरे लिए सिर्फ़ एक शहर नहीं रही, वह एक मातृत्वमयी ऊर्जा बन गई है, जो हर कदम पर मेरा संबल रही है।

जैसे संत कबीर ने कहा —

"जहाँ ज्ञान, भक्ति, और करुणा का संगम हो — वहीं सच्ची काशी है।"
मेरे लिए, वह काशी बी.एच.यू. में मिली — और उसकी अनुभूति जीवनभर मेरे साथ रहेगी।

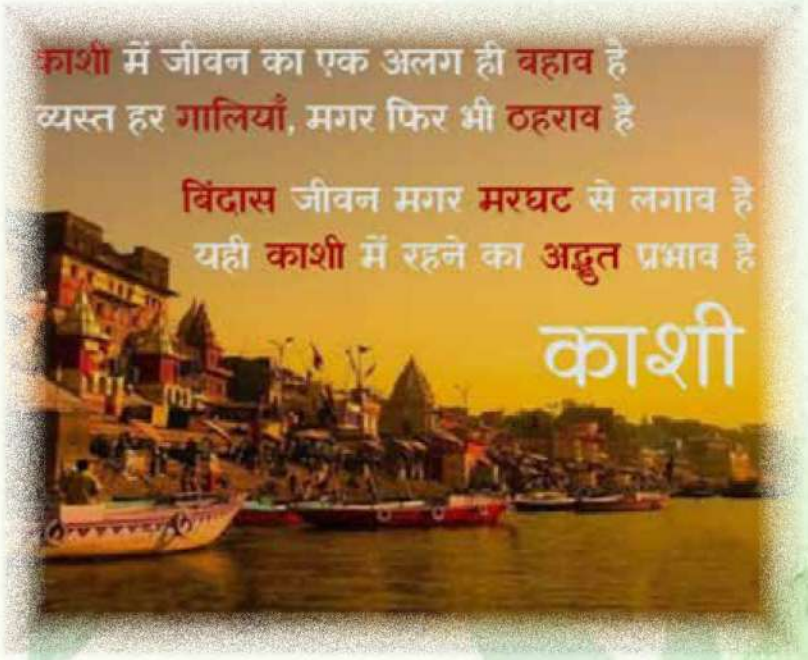

बांग्ला साहित्य का उत्कर्ष: बंकिमचन्द्र से रवीन्द्रनाथ तक

दीपा कर्मकार
लेखाकार

'एक सांस्कृतिक यात्रा, विचारों की नदी के बहाव में'

भारत के साहित्यिक आकाश में बांग्ला साहित्य एक ऐसा दीप है, जिसकी रोशनी समय, समाज और सीमाओं को पार कर जाती है। यह साहित्य केवल शब्दों की प्रस्तुति नहीं, बल्कि 'आत्मा की भाषा' है। इस यात्रा में कई महान व्यक्तित्वों ने योगदान दिया, परंतु बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय से लेकर रवींद्रनाथ ठाकुर तक की साहित्यिक विकास यात्रा सबसे महत्वपूर्ण पड़ावों में से है। इस कालखंड ने न केवल बांग्ला साहित्य को परिपक्व बनाया, बल्कि भारतीय सामाजिक चेतना को भी नई दिशा दी।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (1838–1894)
बांग्ला उपन्यास साहित्य के जनक

बंकिमचंद्र ने आधुनिक बांग्ला गद्य को जन्म दिया और उसे साहित्यिक गरिमा प्रदान की। उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास *"आनंदमठ"* है, जिसमें *"वंदे मातरम्"* गीत न केवल साहित्यिक सौंदर्य प्रस्तुत करता है, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद का प्रतीक भी बन जाता है।

उनके अन्य उपन्यास — *"कपालकुंडला"*, *"विषवृक्ष"*, *"कृष्णकांतेर विल"*, आदि — सामाजिक संरचना, नारी की भूमिका और नैतिक संघर्षों को गहराई से चित्रित करते हैं। उन्होंने साहित्य को केवल कथा कहने का माध्यम नहीं माना, बल्कि राष्ट्र के उत्थान और समाज के सुधार का औजार बनाया।

योगदान:

- बांग्ला गद्य में साहित्यिक सौंदर्य का प्रवेश
- आधुनिक उपन्यास शैली की स्थापना
- साहित्य को राष्ट्रवादी विचारों से जोड़ना

माइकल मधुसूदन दत्त (1824–1873)
'बांग्ला कविता में महाकाव्य और पश्चिमी रंगों का समावेश'

माइकल मधुसूदन दत्त ने बांग्ला कविता में क्रांति ला दी। उन्होंने पहली बार *"मुक्तछंद (blank verse)"* का प्रयोग किया, जिससे कविता को एक नया लयात्मक आयाम मिला। उनका प्रसिद्ध महाकाव्य *"मेघनाद वध काव्य"* एक उत्कृष्ट कृति है, जिसमें रामायण के खलनायक, 'मेघनाद' को एक वीर और त्रासद नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया।

उन्होंने पश्चिमी साहित्य के प्रभाव को बांग्ला काव्य में इतनी सुंदरता से ढाला कि वह "आधुनिकता और परंपरा का अद्वितीय मेल" बन गया। वे हिंदी-बांग्ला में *'Byronic Hero'* जैसे यूरोपीय आदर्शों को लाए, परंतु उनकी जड़ों में भारतीय भावनाएं रहीं।

योगदान:

- बांग्ला महाकाव्य परंपरा की पुनर्स्थापना
- मुक्तछंद का प्रारंभ
- पश्चिमी साहित्यिक दृष्टिकोण का समावेश

ईश्वरचंद्र विद्यासागर (1820–1891)
साहित्य, समाज और शिक्षा के तीनों क्षेत्र में आदर्श नायक

विद्यासागर को अक्सर एक समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है, लेकिन उनका साहित्यिक योगदान उतना ही गहरा है। उन्होंने बांग्ला भाषा को सरल, तर्कसंगत और व्यवस्थित रूप दिया। उनकी लिखी पुस्तकें — जैसे *'वर्ण परिचय'* — आज भी प्राथमिक शिक्षा का आधार हैं।

उन्होंने संस्कृत साहित्य का बांग्ला अनुवाद कर साहित्य को आम जन तक पहुँचाया। साथ ही, उन्होंने विधवा पुनर्विवाह, नारी शिक्षा और जातीय सुधार को अपने लेखन में प्रमुखता से उठाया।

योगदान:

- भाषा का सरलीकरण और मानकीकरण
- नारी सम्मान और शिक्षा के पक्ष में साहित्य
- बांग्ला गद्य को जन-मानस के अनुकूल बनाना

बीभूतिभूषण बंद्योपाध्याय (1894–1950)
प्रकृति, सरलता और मानवीय आत्मा के रचनाकार

बीभूतिभूषण बंद्योपाध्याय बांग्ला साहित्य के ऐसे रचनाकार थे, जिन्होंने प्रकृति और मनुष्य के बीच के संबंध को कविता की कोमलता और उपन्यास की गहराई के साथ चित्रित किया। उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास *"पथेर पांचाली"* (1929) है, जो अपु नामक बालक के जीवन के माध्यम से ग्रामीण बंगाल की सुंदरता, गरीबी, संघर्ष और बाल-सुलभ संवेदनाओं को उजागर करता है।

उनकी रचनाएँ बाहरी घटनाओं से अधिक भीतर के भाव-जगत की यात्रा होती हैं। "पथेर पांचाली" को सत्यजित रे ने फिल्म के रूप में रूपांतरित किया, जिससे यह कथा पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गई। उनके अन्य प्रसिद्ध उपन्यासों में *"अपराजितो"*, *"अरण्यक"*, और *"इच्छामती"* शामिल हैं, जिनमें बंगाल की प्रकृति, जंगलों, नदी और ग्रामीण संस्कृति की झलक मिलती है।

योगदान:

- ग्राम्य जीवन और प्रकृति की सुंदरतम अभिव्यक्ति
- मानवीय संबंधों की गहराई और सरलता का चित्रण
- बांग्ला साहित्य को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में भूमिका

बीभूतिभूषण ने यह साबित कर दिया कि संघर्ष की कहानियाँ भी सौंदर्य से भरी हो सकती हैं, और साहित्य में सरलता सबसे महान गुण है।

शरतचंद्र चट्टोपाध्याय (1876–1938)
जनमानस के लेखक, समाज के कथाकार

शरतचंद्र ने साहित्य को आम आदमी का चेहरा दिया। उनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ, स्त्री की पीड़ा, जातिवाद, गरीबी और प्रेम जैसे विषयों को बेहद सहज और संवेदनशील रूप में प्रस्तुत किया गया। *"देवदास"*, *"श्रीकांत"*, *"चरित्रहीन"*, *"दत्ता"* जैसी रचनाएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं।

उनकी भाषा आम बोलचाल की भाषा थी, और यही उन्हें जनता का लेखक बनाता है। उन्होंने समाज के उन वर्गों की आवाज़ उठाई, जो उस समय साहित्य में अदृश्य थे।

योगदान:

- यथार्थवादी सामाजिक उपन्यासों की रचना
- स्त्री विमर्श और मानवीय करुणा की अभिव्यक्ति
- जनभाषा में गहराईपूर्ण साहित्य

काजी नजरुल इस्लाम (1899–1976)
विद्रोह, प्रेम और धर्मनिरपेक्षता के कवि

'विद्रोही कवि' के नाम से प्रसिद्ध नजरुल ने औपनिवेशिक सत्ता, सामाजिक भेदभाव, धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध स्वर उठाया। उनकी कविता *"विद्रोही"* एक प्रेरणास्रोत बनी। उन्होंने बांग्ला कविता को विद्रोह और प्रेम का नया आयाम दिया।

योगदान:

- सामाजिक न्याय और क्रांति की आवाज़
- हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थन
- संगीत और कविता का संगम

रवींद्रनाथ ठाकुर (1861–1941)
विश्वकवि, दर्शन और सौंदर्य का समन्वय

रवींद्रनाथ का साहित्य एक पूर्ण ब्रह्मांड है। उन्होंने कविता, उपन्यास, नाटक, संगीत, लघुकथा, निबंध — सभी विधाओं में गहन और सुंदर रचनाएं दीं। उनकी *"गीतांजलि"* के लिए उन्हें 1913 में नोबेल पुरस्कार मिला — जो किसी एशियाई साहित्यकार को पहली बार मिला।

उनकी रचनाओं में प्रकृति, प्रेम, दर्शन, मानवतावाद, शिक्षा और राष्ट्रवाद जैसे विषय इतने संगीतात्मक और सौंदर्यपूर्ण ढंग से आते हैं कि वे साहित्य से अधिक जीवनदर्शन बन जाते हैं। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में *शांति निकेतन* की स्थापना की — जो आज भी उनकी विचारधारा का जीवंत रूप है।

योगदान:

- बांग्ला साहित्य की अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठा
- रवींद्र संगीत: साहित्य और संगीत का समन्वय
- मानवतावादी और दार्शनिक दृष्टिकोण

उपसंहार: एक साहित्यिक नदी की यात्रा

बंकिमचंद्र से रवींद्रनाथ तक की यह यात्रा केवल साहित्य की विकासगाथा नहीं, बल्कि भारतीय आत्मा की खोज है। हर लेखक ने इस नदी में एक नया प्रवाह जोड़ा — कोई विचारों का, कोई संवेदना का, कोई संघर्ष का, तो कोई सौंदर्य का।

"बांग्ला साहित्य एक नदी है — बंकिम इसके पहाड़ी स्रोत हैं, रवींद्र इसकी गहराई, और इनके बीच के सभी लेखक उसकी गति, लय और दिशा।"

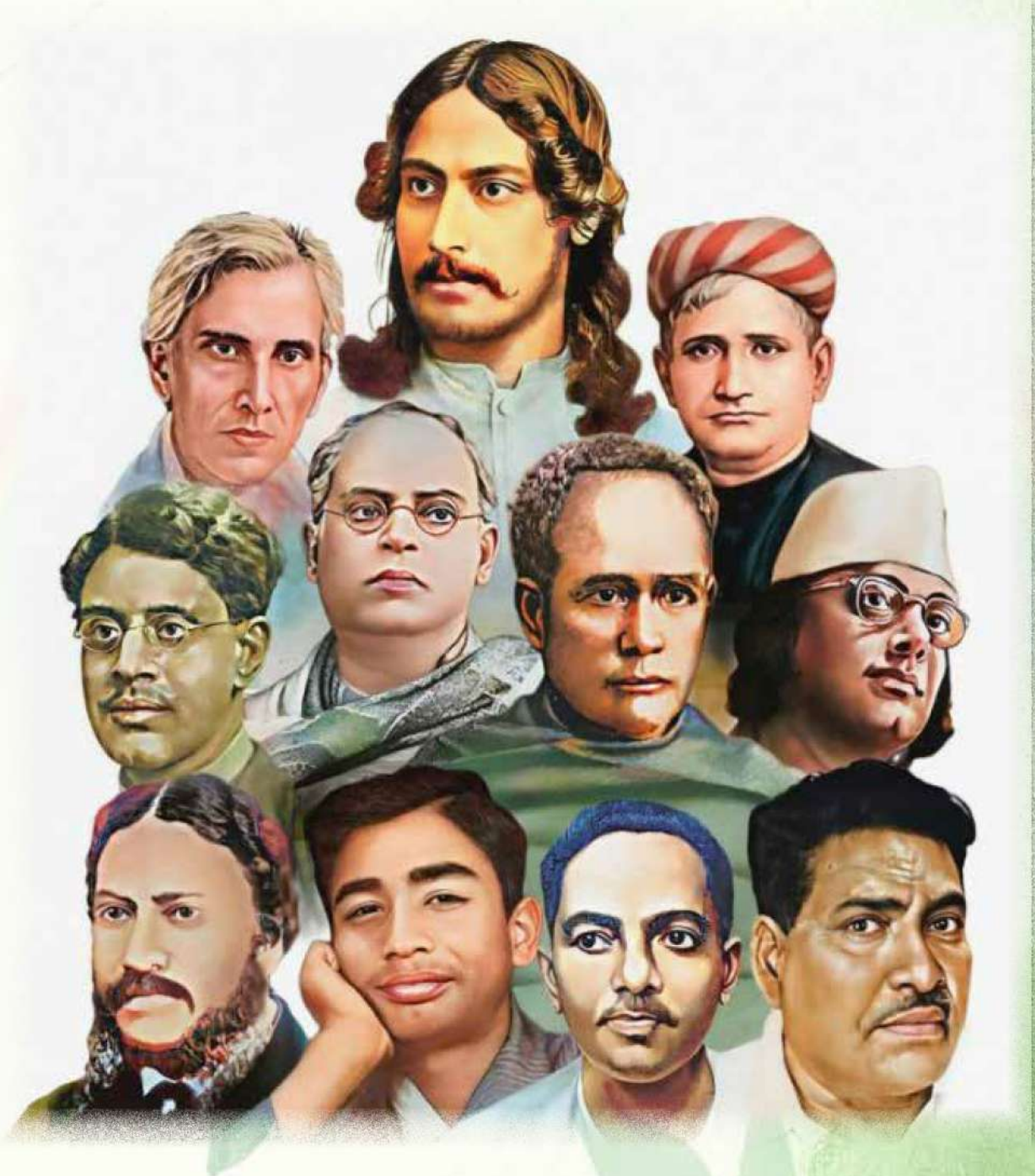

गीता ज्ञान

स्वाति कुमारी
कनिष्ठ अनुवादक

महाभारत हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ है। इसमें कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध का उल्लेख मिलता है। हालांकि दोनों ही पक्ष आपस में भाई-भाई थे। परंतु पांडवों को अपने हक व अधिकार के लिए लड़ना पड़ा। कौरवों ने उन्हें उनका हक देने से साफ मना कर दिया था। स्वयं भगवान श्री कृष्ण युद्ध से पूर्व कौरवों के पास शांति प्रस्ताव लेकर गए थे। यहाँ तक कि उन्होंने यह प्रस्ताव भी रखा कि कौरव पांडवों को **मात्र पाँच गाँव** देकर शांति का रास्ता अपनाएं। परंतु कौरवों का कहना था कि बिना लड़ाई के वे पांडवों को **सुई की नोंक के बराबर** भी नहीं देंगे। अतः अब युद्ध करने के सिवाय उनके पास और कोई चारा नहीं था। दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी सेना तैयार करने में जुट गए।

कौरव व पांडव दोनों ही पक्ष भगवान श्री कृष्ण के पास पहुँचे। दोनों ने उनसे मदद मांगा। दोनों उनसे अपने पक्ष में शामिल होने की विनती करने लगे। दोनों की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हुए श्री कृष्ण ने दुर्योधन को अपनी **एक अक्षौहिणी वाली नारायणी सेना** प्रदान किया तथा अर्जुन की सहायता करने के लिए वे स्वयं तैयार हुए। यह एक अक्षुण्ण सत्य है कि **स्वयं** नारायण की इतनी शक्तिशाली सेना उनके बिना व उनके समक्ष कुछ भी नहीं है। शायद इसलिए कहा जाता है कि ईश्वर की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता।

जब वे कुरुक्षेत्र में युद्ध के लिए गए तो उन्होंने अपने सारथी भगवान श्री कृष्ण से कहा कि मैं एक बार यह देखना चाहता हूँ कि कौन-कौन इस युद्ध के लिए **आतुर** हैं। जब उन्होंने चारों ओर नजर घुमायी तो पाया कि युद्धभूमि में तो सभी उनके रिश्तेदार ही हैं। कोई उनका भाई है तो कोई भतीजा, कोई उनका चाचा है तो कोई दादा। अर्जुन को **आत्म-ग्लानि** होने लगी कि उन्हें अपने भाइयों से ही युद्ध करना पड़ेगा। ऐसे युद्ध का क्या लाभ जो अपनों के ही खिलाफ लड़ना पड़े? उनके भीतर आंतरिक द्वंद्व चलने लगा कि ये कैसा घोर **पाप** होने जा रहा था उनसे।

महाभारत का युद्ध आरंभ होने से ठीक पहले भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिए हैं वह **श्रीमद्भगवद्गीता** के नाम से सुप्रसिद्ध हुआ। गीता में कुल **18 अध्याय** और **700 श्लोक** हैं। ये **कर्म, भक्ति** और **ज्ञान योग** के मार्गों को दर्शाते हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार गीता को वही स्थान प्राप्त है जो कि उपनिषद तथा धर्मसूत्रों का है। उपनिषदों को गौ (गाय) और गीता को उसका दुग्ध कहा गया है। उल्लेखनीय है कि इसका नाम **गीता** इसलिए पड़ा है क्योंकि इसे स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने गीत के रूप में गाकर ही प्रस्तुत किया गया था।

गीता के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण ने न केवल जन-जन के कौतुहल को शांत मात्र किया है अपितु इसके माध्यम से जीवन की प्रगाढ़ समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किए हैं। महाभारत के अर्जुन का व्यक्तित्व ही **शौर्य, धैर्य, साहस** और **बल** इन चार गुणों से ओत-प्रोत था। इन चार गुणों के ऊपर और भी दो गुण हैं- **क्षमा** तथा **प्रज्ञा**। भगवान श्री कृष्ण ने गीता के माध्यम से अर्जुन को वास्तविकता से अवगत कराया। उन्होंने यह बताया कि धरती पर पाँच सत्य विद्यमान हैं- **ईश्वर, जीव, प्रकृति, काल और कर्म।**

गीता **जीवन, कर्म** और **मोक्ष** का दर्शन है। इसे हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। यह सभी लोगों के लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके माध्यम से भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को **कर्मयोग, भक्तियोग** और **ज्ञानयोग** का उपदेश दिया। इससे अर्जुन को युद्ध करने की प्रेरणा मिली। गीता में **आत्मा, परमात्मा, कर्म, शक्ति** और **जीवन** के बारे में विस्तार से बताया गया है।

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:

1. **कर्मयोग**- कर्म करते हुए फल की आसक्ति का त्याग किया जाना चाहिए।
2. **भक्तियोग**- प्रेमभाव के साथ ईश्वर से जुड़ जाना चाहिए।
3. **ज्ञानयोग**- ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करके अज्ञान को मिटा देना चाहिए।
4. **आत्मा और परमात्मा**- गीता आत्मा और परमात्मा के बीच परस्पर संबंध को बखूबी दर्शाती है।

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को यह उपदेश दिया कि मनुष्य को फल की इच्छा छोड़कर कर्म पर ध्यान देना चाहिए। मनुष्य जैसा कर्म करता है उसका फल भी उसे उसके अनुरूप ही मिलता है।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥"

अर्थात् कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, लेकिन कर्म के फलों पर कभी नहीं। इसलिए कर्म करो, फल की चिंता मत करो। क्यों व्यर्थ की चिंता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? तुम्हें कौन मार सकता है। आत्मा ना जन्म लेती है, ना ही मरती है। तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाए थे जो तुमने खो दिया? तुम कुछ भी लेकर नहीं आए थे। जो लिया यहीं से लिया। जो दिया, यहीं पर दिया। जो हुआ, वो अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वो अच्छा हो रहा है, जो होगा, वो भी अच्छा ही होगा। न तो बीते हुए समय का पश्चाताप करने की आवश्यकता है और न ही भविष्य की चिंता करने की जरूरत है क्योंकि अभी वर्तमान चल रहा है। वर्तमान को तो पूरी ज़िंदादिली के साथ जिया जाना चाहिए।

यह प्रकृति का नियम है कि मनुष्य खाली हाथ आता है और खाली हाथ ही चला जाता है। जो कुछ भी आज हमारे पास है कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। हम जिसे अपना समझ कर मग्न हो रहे हैं वास्तव में वह हमारा है ही नहीं। संसार में जो कुछ भी विद्यमान है सबकुछ ईश्वर का है। इसलिए जो कुछ भी हम करते हैं सबकुछ उस **सर्वव्यापी**, **सर्वशक्तिमान** व **शाश्वत** ईश्वर को अर्पण करते चलना चाहिए। यही सत्य है और जो इस सत्य को जान जाता है वह **भय**, **शोक** व **चिंता** से सर्वदा मुक्त रहता है।

गीता संसार का एक महानतम ग्रंथ है। इसे हिंदू धर्म के सीमित दायरे में बाँधकर नहीं देखा जा सकता, क्योंकि संसार की अनेक प्रमुख भाषाओं में इसका **अनुवाद** हो चुका है और संसार के करोड़ों-अरबों लोग इसमें बताए गए जीवन-दर्शन का अनुसरण कर सुखपूर्वक जीवनयापन कर रहे हैं। गीता एक ऐसा ग्रंथ है जो विलक्षण रहस्यों से भरा पड़ा है। इसे जितनी बार भी पढ़ा जाए, हर बार **नए-नए अर्थ**, **नए-नए भाव** और **नए-नए तर्क** निकलकर आएंगे।

गीता का उपदेश भगवान श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को युद्धभूमि में दिया गया था। इस ज्ञान के जरिए ही अर्जुन सही और गलत के बीच अंतर कर पाए और अंततः उन्हें युद्ध में विजय प्राप्त हुई। गीता में जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे- **धर्म**, **कर्म**, **नीति** आदि राज छिपे हैं। इसके नियमित पाठ से जीवन की हर समस्या को **हल** किया जा सकता है।

भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद से यह ग्रंथ अस्तित्व में आया। यह द्वापर युग से आज तक अनेक संत-महात्माओं का मार्गदर्शन करता रहा है। अनेक साधारण लोग इसकी शिक्षाओं पर चलकर महान बने हैं। **मीरा**, **सूर**, **चैतन्य** से लेकर महात्मा गांधी तक सभी भगवद्गीता से जीवन-शक्ति ग्रहण करते रहे हैं। **महात्मा गांधी** के शब्दों में कहें तो-

"जब मुझे संदेह आ घेरते हैं; निराशाएँ चेहरे को बेनूर कर देती हैं। और आशा की कोई किरण नजर नहीं आती तो मैं 'गीता' में इसका हल तलाशता हूँ और फौरन ही मेरे चेहरे पर मुसकान खेलने लगती है, गम के बादल

छँट जाते हैं। जो लोग प्रतिदिन गीता पढ़ते हैं, वे आनंद से हमेशा तरोताजा रहते हैं और उन्हें इसके रोज नए-नए अर्थ मालूम होते हैं।"

अंततः संक्षेप में कहें तो श्रीमद्भगवद्गीता एक ऐसा ग्रंथ है जो कि जीवन के प्रत्येक पहलू पर मनुष्यों को **मार्गदर्शन** प्रदान करता है। साथ ही दुनिया के तमाम बंधनों से बंधनमुक्त होकर **मोक्ष** के मार्ग की ओर अग्रसर होने में भी सहायता प्रदान करता है।

गीता के ज्ञान के पश्चात् अर्जुन युद्ध के लिए तैयार हुए। इसमें उन्हें **विजय** भी हासिल हुई। मात्र भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में श्रीमद्भगवद्गीता की ज्ञान रूपी गंगा ने गागर में सागर समाहित कर अपने विजय की पताका लहराई है। हम भारतवासियों को यहाँ के **पावन भूमि** पर जन्म लेने के मिले सुनहरे मौके पर गौरवान्वित होना चाहिए। कहा भी गया है-

"है प्रीत जहाँ की रीत सदा, मैं गीत वहाँ का गाता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ, भारत की बात सुनाता हूँ।"

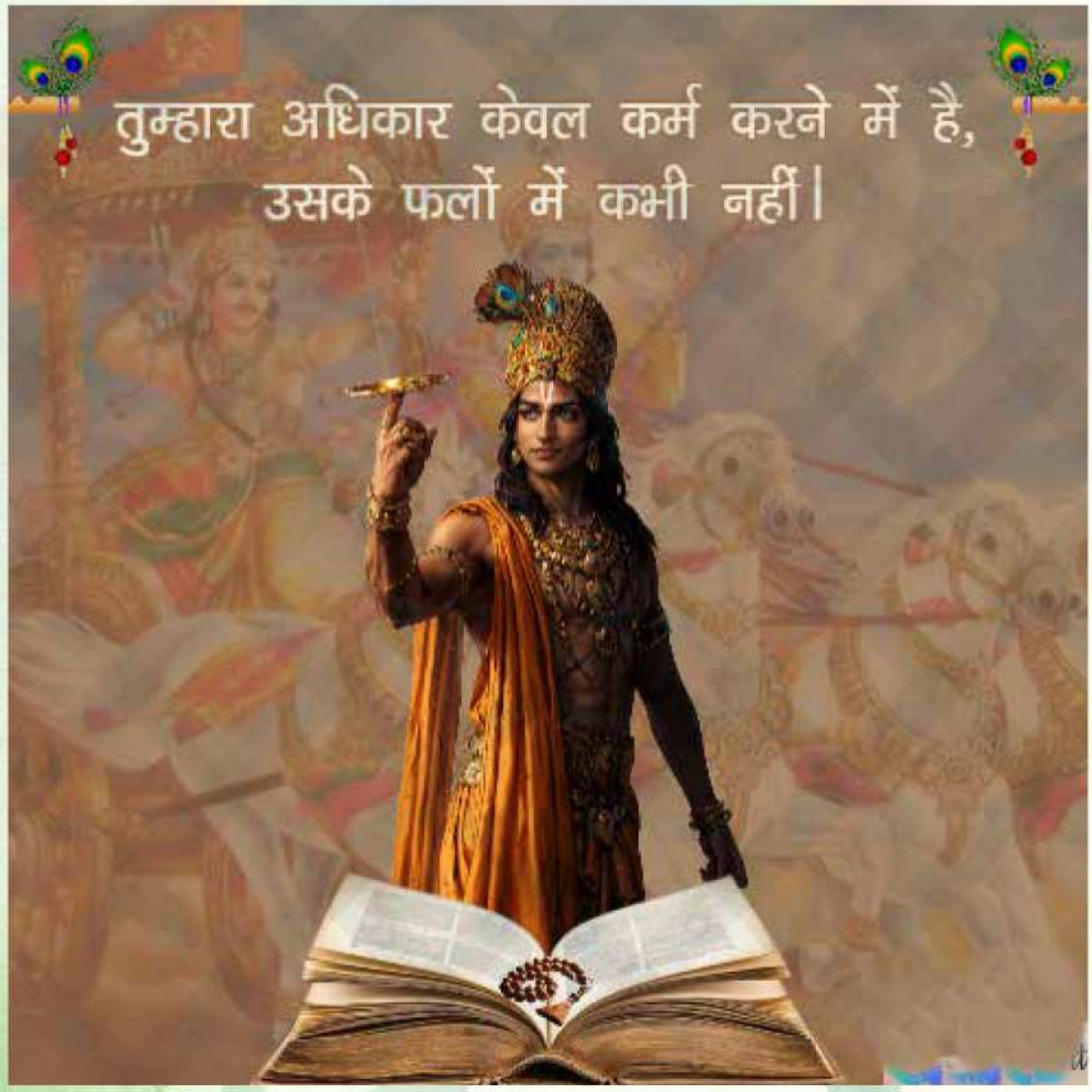

किसान की बेटी

पीयूष प्रभाकर
सहायक लेखा अधिकारी

एक समय की बात है, एक छोटे से गाँव में, जो हरी-भरी पहाड़ियों और खेतों के बीच बसा था, एक बूढ़ा किसान केशव अपनी बेटी मोहिनी के साथ एक साधारण झोपड़ी में रहता था। वे सादगी भरा, फिर भी संतुष्ट जीवन जीते थे। केशव की पत्नी का देहांत कई साल पहले हो चुका था, और वह अकेले ही मोहिनी का पालन-पोषण कर रहा था। इस नुकसान के बावजूद, मोहिनी एक सुंदर और सुशील युवती बन गई थी, जिसका दिल अपने पिता के लिए सम्मान और प्यार से भरा था। बचपन में ही अपनी माँ को खो देने के बाद, केशव ही उसका पूरा संसार था — उसका रक्षक, शिक्षक और विश्वासपात्र।

केशव कोई साधारण किसान नहीं था। भले ही वह औपचारिक शिक्षा से वंचित था, लेकिन उसके पास वर्षों की मेहनत और जीवन के अनुभवों से प्राप्त गहरी बुद्धिमत्ता थी। हर शाम, जब सूरज क्षितिज के नीचे डूबता, वह मोहिनी के साथ अपनी झोपड़ी के बाहर बरगद के पुराने पेड़ के नीचे बैठता और साहस, दयालुता और ज्ञान के महत्व की कहानियाँ सुनाता। वह कहता, "यह धरती हमारे शरीर को पोषण देती है, लेकिन ज्ञान हमारी आत्मा को। कभी भी ज्ञान की खोज बंद मत करना, क्योंकि यही एक सार्थक जीवन की कुंजी है।"

मोहिनी, अपनी चमकीली आँखों और जिज्ञासु मन के साथ, अपने पिता के शब्दों को आत्मसात करती। उसे पढ़ना बहुत पसंद था, लेकिन किताबें उनके दुर्लभ थे। गाँव का स्कूल, जिसकी छत टपकती थी, उसका आश्रय स्थल था। वहाँ वह जो भी किताबें मिलतीं — फटी हुई पाठ्य पुस्तकें हों या पुराने अखबार — उन्हें लालच से पढ़ती। उसके शिक्षक, मास्टर जी, ने उसकी इस लगन को देखा और अक्सर उसे अपनी निजी किताबें उधार दे देते। "मोहिनी, तुममें एक चिंगारी है," वे कहते, "इसे पोषित करो, और यह तुम्हारा रास्ता रोशन करेगी।"

लेकिन गाँव में जीवन आसान नहीं था। बारिश अनिश्चित थी, और फसलें अक्सर बर्बाद हो जाती थीं। केशव अथक परिश्रम करता, उसके हाथ खुरदरे और पीठ वर्षों की मेहनत से झुक गई थी। फिर भी, वह कभी शिकायत नहीं करता। उसका एकमात्र सपना था कि मोहिनी शिक्षित हो, शायद पास के शहर के प्रतिष्ठित कॉलेज में पढ़ाई करें —एक ऐसा सपना जो तारों जितना दूर लगता था। गाँव के बुजुर्ग, जो परंपराओं में डूबे थे, इस विचार का मजाक उड़ाते। "लड़की का स्थान घर में है," वे कहते। "उसकी शिक्षा पर पैसा क्यों बर्बाद करना, जब वह शादी करके चली जाएगी?"

केशव, हालांकि, अडिग था। उसे मोहिनी की क्षमता पर विश्वास था, और मोहिनी भी अपने पिता को गर्वित करने के लिए दृढ़ थी। वह मिट्टी के तेल के लैंप की मंद रोशनी में पढ़ाई करती, उसकी उंगलियाँ उधार ली गई किताबों के शब्दों पर चलतीं। उसकी मेहनत रंग लाई जब वह साल-दर-साल अपनी कक्षा में अव्वल रही, मास्टर जी की प्रशंसा और कुछ सहपाठियों की ईर्ष्या अर्जित करती। फिर भी, इस जिम्मेदारी का बोझ उसे भारी पड़ने लगा। वह जानती थी कि उसके पिता उसकी पढ़ाई के लिए अपनी मेहनत की कमाई का हर पैसा बचा रहे थे, और गाँव में खराब फसल के कारण उनकी आय और कम हो रही थी।

एक दिन, जब मोहिनी स्कूल से लौट रही थी, उसने देखा कि उसके पिता खेत में गिर गए थे। वह दौड़कर उनके पास गई और उन्हें घर ले आई। गाँव के डॉक्टर ने बताया कि केशव को कमजोरी और थकान के कारण बेहोशी हुई थी। "उन्हें आराम की जरूरत है," वैद्य ने कहा। "वे बहुत मेहनत करते हैं, और उनका शरीर अब जवाब दे रहा है।" मोहिनी का दिल टूट गया। उसने अपने पिता की मेहनत और बलिदान को और गहराई से महसूस किया और ठान

लिया कि वह न केवल अपनी पढ़ाई पूरी करेगी, बल्कि अपने पिता के सपनों को भी साकार करेगी।

मोहिनी ने अधिक मेहनत शुरू कर दी। दिन में वह स्कूल जाती और रात में अपने पिता की देखभाल करती। उसने गाँव के बाजार में छोटी-मोटी सिलाई का काम शुरू किया, जो उसकी समर्पण भावना को दर्शाता है। उसकी मेहनत और लगन को देखकर मास्टर जी ने उसे एक छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने की सलाह दी, जो शहर के कॉलेज में पढ़ाई के लिए थी। "यह तुम्हारा मौका है, मोहिनी," उन्होंने कहा। "तुममें वह काबिलियत है जो इस गाँव से बहुत आगे ले जाएगी।"

मोहिनी ने दिन-रात मेहनत की। उसने मास्टर जी की मदद से आवेदन भरा और परीक्षा दी। कुछ दिन के बाद, एक पत्र आया। मोहिनी के हाथ काँप रहे थे जब उसने लिफाफा खोला। उसका चेहरा खुशी से चमक उठा — उसे छात्रवृत्ति मिल गई थी! वह दौड़कर अपने पिता के पास गई और यह खबर सुनाई। केशव की आँखों में आँसू छलक आए। "मेरी बेटी," उन्होंने कहा, "तुमने मेरा सपना सच कर दिया।" यह सिर्फ एक छात्रवृत्ति नहीं थी, बल्कि उसकी ज़िंदगी की दिशा बदलने वाला अवसर था।

कॉलेज में मोहिनी का पहला साल चुनौतीपूर्ण था। शहर का जीवन गाँव से बहुत अलग था, और वह अक्सर अपने पिता और अपनी झोपड़ी को याद करती। लेकिन उसने हार नहीं मानी। उसने अपने पिता के शब्दों को याद रखा और हर कठिनाई को एक सीख के अवसर के रूप में लिया। वह न केवल अपनी पढ़ाई में उत्कृष्ट रही, बल्कि उसने अपने गाँव की कहानियाँ साझा कर अपने सहपाठियों को भी प्रेरित किया।

कई साल बाद, मोहिनी एक शिक्षिका बनकर अपने गाँव लौटी। उसने गाँव के स्कूल में नई किताबें और संसाधन लाकर फिर से स्कूल को जीवंत किया। उसने विशेष रूप से लड़कियों को पढ़ाने पर ध्यान दिया, उन्हें यह विश्वास दिलाया कि शिक्षा उनकी नियति को बदल सकती है।

केशव, जो अब और कमजोर हो चुके थे, अपनी बेटी को देखकर गर्व से भर उठते। उनकी झोपड़ी अब न केवल उनके लिए, बल्कि पूरे गाँव के लिए प्रेरणा का प्रतीक बन गई थी।

मोहिनी की कहानी गाँव-गाँव में फैल गई। मोहिनी की कहानी केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणा है, उसने साबित कर दिया कि शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है; यह एक ऐसी शक्ति है जो एक बेहतर भविष्य का निर्माण करती है। अब हर शाम, जब वह अपने पिता के साथ बरगद के पेड़ के नीचे बैठती, वह उन सभी बच्चों के लिए प्रार्थना करती जो ज्ञान की रोशनी की तलाश में थे।

शेखपुरा: मेरा गृह नगर और यादों का शहर

राकेश चंद्र श्रीवास्तव
सहायक लेखा अधिकारी

शेखपुरा बिहार का एक छोटा, शांत लेकिन सुंदर शहर है। यह शहर मेरे दिल के सबसे करीब है। इस शहर में मैंने अपने जीवन के सबसे खूबसूरत 20 साल बिताए हैं। यहाँ की हवाओं में वो अपनापन है जो हमेशा मुझे मेरे बचपन की ओर खींच लाती है। यहाँ की सबसे खास बात इस शहर की प्राकृतिक सुंदरता और हरियाली से भरी पहाड़ियां हैं, जो हमारे बचपन की कहानियों की गवाह रही हैं।

शेखपुरा मेरे लिए नक्शे में पड़ा कोई नाम नहीं है, बल्कि एक ऐसा अध्याय है जो हर धड़कन के साथ चलता है। यहाँ की मिट्टी में मेरे बचपन के कदमों की धूल हैं, और उन पहाड़ियों में मेरे मुस्कुराने की गूंज। आज भी मैं जब अपने गृहनगर की ओर कूच करता हूँ तो मेरे बचपन की यादें ताजा होने लगती हैं। ट्रेन से जाने के दौरान ही मुझे दूर से इसकी पहाड़ियाँ दिखाई देने लगती हैं, जो मुझे अपने घर पहुँचने के रोमांच से भर देती हैं।

शेखपुरा की पहाड़ियाँ न तो बहुत ऊँची हैं, और न ही बहुत दूर। यह हमारे शहर को दो हिस्सों में बाँट देती हैं। इसकी पहाड़ियों पर बसी हरियाली, सुबह की धूप में चमकते पत्थर और शाम के समय उनके पीछे छुपता सूरज मुझे खुशी और रोमांच से भर देता है। इन पहाड़ियों पर हमने कई बार चढ़ाई की, स्कूल की छुट्टी के बाद दोस्तों के साथ मटरगश्ती करते वहाँ जहाँ एक रिवाज़ सा बन गया था। हम इन पहाड़ियों की चोटियों पर जाकर पूरे शहर का नज़ारा देख सकते थे, विशेषकर संध्या बेला में पहाड़ों की चोटी से डूबते सूर्य को निहारना अत्यंत सुखदायी और आनंदमयी अहसास हुआ करता था, जो आज भी मैं याद कर रोमांचित महसूस करता हूँ।

मैंने सन् 2004 से 2008 तक डी एम. हाई स्कूल, शेखपुरा में पढ़ाई की। यह स्कूल शहर की सबसे ऊँची पहाड़ी के बिल्कुल निकट था। इसके साथ एक बड़ा सा मैदान हुआ करता था, जहाँ मैं अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेला करता था। यह स्कूल शहर का सबसे बड़ा हाई स्कूल हुआ करता था। स्कूल का भवन तो साधारण था लेकिन यहाँ का माहौल बड़ा खास था। वहाँ के शिक्षक बहुत सख्त थे, लेकिन यह पढ़ाई के अनुशासित वातावरण के लिए अत्यंत जरूरी था। सुबह की प्रार्थना, पी. टी. परेड, ब्लैकबोर्ड पर गणित के सवाल और दोस्तों के साथ बैंच शेयर करना हर पल का एक अलग अनुभव था। क्लास के बाद बगल वाली दुकान से चाट, पकौड़े खाना, बिना बताए घर लेट पहुँचना, ये सब मटरगश्तियाँ अब यादों के किस्से बन चुके हैं।

इस शहर में मनाए जाने वाले पर्व, त्योहार की भी अच्छी खासी यादें हैं। दुर्गा पूजा में बनने वाले विशाल पंडाल, मुझे आज भी आकर्षित करते हैं। इन पंडालों को देखने और माँ दुर्गा के दर्शन करने हम पैदल निकल जाते थे और पूरे शहर का चक्कर, जो करीब छह से सात किलोमीटर का था, लगाकर भी हम थकते नहीं थे। पंडालों के दर्शन के बाद अर्धरात्रि बेला में चाट और जलेबियाँ खाकर जो आनंद मिलता था उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है।

शहर में छठ का त्योहार भी बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। छठ की तैयारी लोग दीपावली के साथ ही शुरू कर देते थे। छठ के लिए नहर के घाटों को सजाया जाता था। संध्या बेला में डूबते सूर्य को अर्घ्य देना और फिर अगली सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य देना, यह दृश्य सभी लोगों को रोमांचित कर देता था। सुबह के अर्घ्य के बाद प्रसाद में ठेकुआ, बताशा, संतरे, खाजा, ये हमें अलग ही खुशी से भर देते थे। यह त्योहार तो हमारे राज्य की सांस्कृतिक पहल है। इस पर्व में शामिल होने के लिए लोग विदेशों से भी चले आते हैं।

शेखपुरा का *गिरहिण्डा पहाड़,* जहाँ शिव जी का मंदिर है, दर्शनीय है। यहाँ तक पहुँचने के लिए 100 सीढ़ियों से ज्यादा चढ़ाई करनी पड़ती है, हालांकि अब यह दूसरे रास्तों से भी चढ़ा जा सकता है। शहर से गुज़रने वाली रेल की सीढ़ियाँ, यहा का हाट-बाजार सुबह-सुबह सब्जी वालों की आवाज, ये सब मेरे बचपन का हिस्सा हैं। आज जब मैं इन सबसे दूर हूँ, तो लगता है जैसे कोई अधूरा चित्र सामने है।

मेरे लिए शेखपुरा सिर्फ एक शहर ही नहीं है, बल्कि मेरी आत्मा का एक हिस्सा है। वहाँ की पहाड़ियों में मेरे सपनों की ऊँचाई है, वहाँ के दोस्त मेरी यादों के संगीत हैं और वहाँ बिताये गये 20 साल मेरे जीवन की सबसे अनमोल पूंजी है।

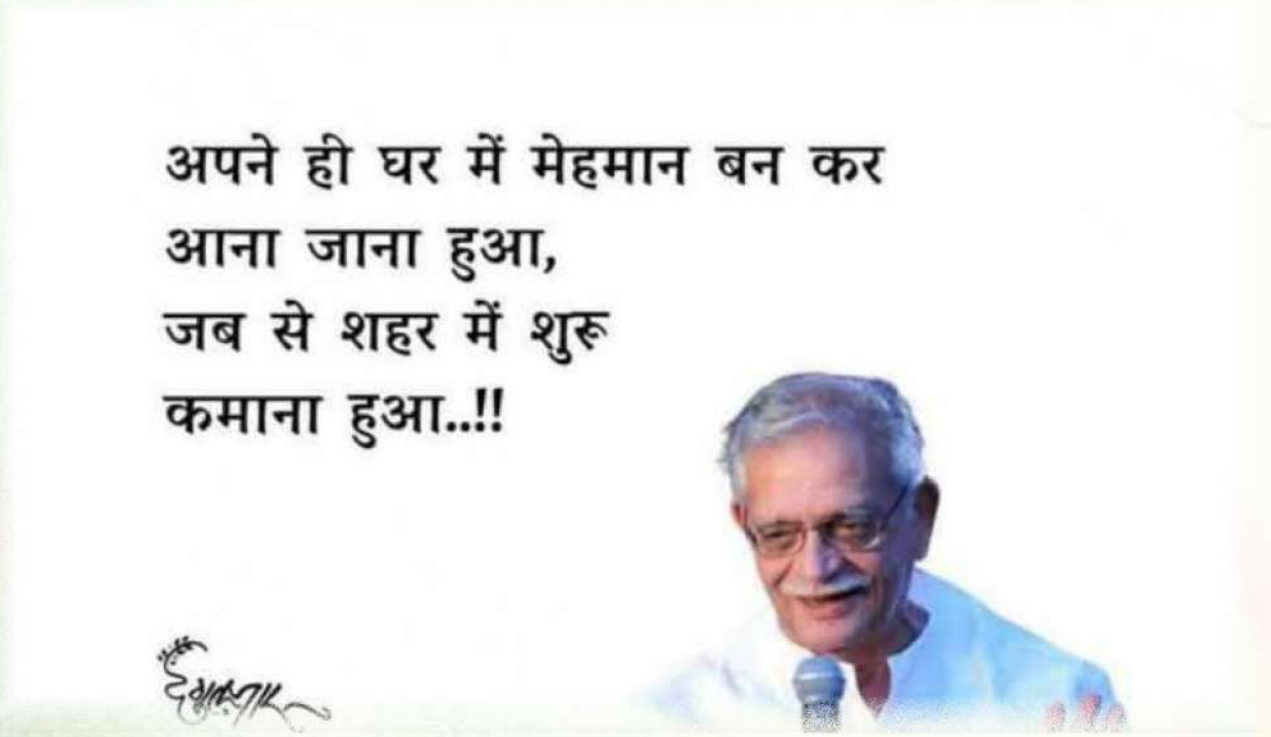

आतंकवाद: क्यों और कब तक

राजीव कुमार-।
लेखाकार

"आतंकवाद का साया, जो विश्व पटल पर छाया है,
जाति-धर्म का भेद नहीं, सबको अपना शिकार बनाया है।"

आतंकवाद संपूर्ण विश्व में फैला एक ऐसा असामाजिक ज़ख्म है जो समय-समय पर दर्द देता है। समय-स्थान, परिस्थिति के अनुसार इसका स्वरूप बदलता रहता है। मूलतः इसका तात्पर्य कुछ व्यक्तियों या समुदाय द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिंसा और बल प्रयोग द्वारा असामाजिक मनसा को पूरा करना है। आतंकवाद व्यापक असंतोष एवं विद्रोह की भावना व हिंसात्मक अभिव्यक्ति है, जिनमें हत्या, अपहरण, लूट-पाट, विस्फोट, भय पैदा करना, आदि गतिविधियां शामिल होती हैं। ये लोग समाज में आतंक को उत्पन्न करने तथा उसे बढ़ाने के लिए केवल हिंसात्मक गतिविधियों का सहारा लेते हैं।

भारत में मुख्यतः चार प्रकार के आतंकवाद हैं, जिनमें राष्ट्रवादी आतंकवाद, धार्मिक आतंकवाद, वामपंथी आतंकवाद तथा नार्को आतंकवाद हैं।

भारत में संचालित अनेको आतंकवादी समूह हैं, जो कई पड़ोसी देशों में से संचालित होते हैं। विगत कुछ दशकों से आतंकवाद अपने पैर फैला रहा है। वस्तुतः भारत फाकिस्तान के विभाजन के समय ही इसका बीज अंकुरित होना प्रारंभ हो गया था, जो बाद में पंजाब, जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों, आदि में फैलने लगा। आतंकवाद के साथ-साथ भारत में हिंसात्मक आन्दोलन नक्सलवाद के रूप में उभरना प्रारंभ हुआ, जो धीरे-धीरे भारत के अन्य राज्यों में फैल गया। कई राज्यों में यह तो अलगावादी संगठन के रूप में सक्रिय हैं।

किसी भी समाज में आतंकवाद के उत्पन्न होने तथा बढ़ने पर जब हम गहन अध्ययन करते हैं, तो हम पाते हैं कि आतंकवाद के उत्पन्न होने का मूल कारण उस समाज में तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या, गरीबी, भुखमरी, असामाजिक वातावरण, आदि हैं जिनसे परेशान होकर लोग आतंक का रास्ता अपना लेते हैं। कई युवा बेरोजगारी की वजह से भी आतंक का सहारा लेने पर मजबूर होते हैं तथा कुछ बेरोजगारी में गलत संगति में फस कर आतंकवादी बन जाते हैं।

जब किसी समाज की राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था जन-साधारण के प्रति संवेदनहीन हो जाती है तथा उनके अपेक्षाओं की उपेक्षा करती है, तब ऐसी परिस्थिति में लोग आतंकवाद (नक्सलवाद) का सहारा लेते हैं। किसी वर्तमान सरकार द्वारा जनता की समस्याओं का समाधान न किये जाने पर भी ऐसी विषम परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। जब सरकार द्वारा गरीब और बेरोजगार जनता का शोषण किया जाता है, तब भी ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। सरकार की कुछ दोषपूर्ण नीतियों के कारण लोगों में विश्वासघात उतपन्न होता है, जो अतंतः आतंकवाद के रूप में सामने आता है।

कुछ आतंकवादी समूह समाज के उन व्यक्तियों को निशाना बनाते हैं जो किसी भी सामाजिक कारण से असंतुष्ट हैं। ये समूह उन्हें अपने जाल में फसाकर सरकार के प्रति विद्रोह की भावना भर देते हैं और उन्हें यह समझाया जाता है कि अपनी बात को सरकार तक पहुँचाने का केवल और केवल यही एक रास्ता है। ऐसी परिस्थिति में लोग इसके गलत झाँसे में आकर आतंकवाद का सहारा लेते हैं और अंततः आतंकवादी बन जाते हैं। कुछ लोग तो अलगावादी नीति का भी सहारा लेते हैं। हमारे पूर्वोतर में कई आतंकवादी संगठन देखने को मिलते हैं। असम में भी कई आतंकवादी

(अलगावादी) संगठन हैं जो अभी भी अपना विद्रोही रूप दिखाते रहते हैं। हाल में मणिपुर में चली लंबी आंतरिक विद्रोह वहाँ के अल्पसंख्यक लोगों दवारा संचालित की गई, जो पूर्णत: सरकार के प्रति उनकी उपेक्षा तथा उनकी असुरक्षा एवं अविश्वास को दर्शाता है।

त्रिपुरा राज्य में भी संभवतः वर्ष 1980 के आस-पास आतंकवाद (अलगावाद) की शुरूआत हुई, जब त्रिपुरा के आदिवासी कबीलों ने गैर-कबीलाई लोगों को त्रिपुरा से बाहर खदेड़ना प्रारंभ किया। इनमें त्रिपुरा आतंककारी संगठन - *त्रिपुरा डिफेन्स फोर्स, नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट ऑफ त्रिपुरा,* आदि शामिल हैं। राजनीतिक, आर्थिक तथा पिछड़ेपन के कारण यहाँ के अधिकांश आदिवासी युवा इस अलगावादी संगठन से प्रेरित हैं।

जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी धर्म तथा जेहाद के नाम पर वहाँ की जनता को भड़काती रहती है। *जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रण्ट* इसके सबसे प्रमुख संगठन हैं, जिसके प्रमुख केंद्र पाकिस्तान में हैं। भारत के अन्य राज्यों में कई प्रकार के आतंकवादी संगठन हैं जो कभी भी सक्रिय हो जाती हैं।

आज कई देशों में हथियार बनाने तथा उन्हें बेचने का कार्य किया जाता है, जो इन आतंकवादी संगठनों के लिए अपनी मनसा को पूर्ण कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब किसी समुदाय को अपने अस्तित्व के लिए लड़ना पड़ता है, या उसमें अपनी असुरक्षा की भावना जाग्रत होती है, या फिर उसकी मूलभूत सुविधाओं की उपेक्षा की जाती है, तब इन समुदायों में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है और अंततः ये समुदाय अलगावादी संगठन या आतंकवाद का सहारा लेते हैं।

आतंकवाद की उत्पत्ति में कोई एक कारण नहीं है जिसे केंद्र में रखा जा सके। इसके अनेक कारणों में राजनीतिक सत्ता, राष्ट्रों की विदेशी नीति, आर्थिक पिछड़ापन, सांस्कृतिक दृष्टि, धार्मिक कट्टरता तथा धर्मान्धता को भी माना जाता है। अशिक्षा, सांस्कृतिक उपेक्षा, मानवीय मूल्यों में गिरावट पैदा कर मानव को आतंकवाद की ओर प्रेरित करता है। आए दिन भारत में आतंकवादी हमले होते रहते हैं, जिनकी सूची बहुत लम्बी है, जैसे- 26/11, संसद पर हमला, पहलगाम हमला, आदि।

अब जब हम आतंकवाद कब तक पर विचार करते हैं तब हमें इसके महत्वपूर्ण कारणों के निदान पर पहले विचार करना होगा, जो इसके उत्पन्न होने के कारण हैं। सरकार द्वारा इसे रोकने के लिए कई कानून भी लाये गये, परंतु यह कारगर सिद्ध नहीं हो सका। जब कोई सरकार एक पूरे देश का नेतृत्व करता है, तब उसे किसी भी राज्य में जन-समूह की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उसकी मूलभूत सूविधा, उसके अस्तित्व, उसके सामाजिक, आर्थिक स्तर पर समानता का व्यवहार महत्वपूर्ण होता है। सरकार द्वारा सभी स्तरों पर एक सुरक्षा एजेंसी बनायी जानी चाहिए जो किसी भी प्रकार की आतंकवादी गतिविधियां, गलत धार्मिक अफवाहों, गलत संदेश के आदान-प्रदान का रोक-थाम कर सके। समाज के युवा वर्ग के लिए एक समुचित शिक्षा की व्यवस्था की जाए जिससे वह बेरोजगार न हो। समाज की हर जाति, धर्म के लोगों के लिए समुचित न्याय हो तथा सरकार जनता के सामाजिक अपेक्षाओं पर खरा उतरे।

"यह प्रश्न हमारी सरकार से है,
जिसका सबंध आतंक के साये से है।।
इस ज़ख्म का दर्द कब तक सहें,
अब हमारा लक्ष्य इसके पूर्ण निदान से है।।"

जनरल कोच की खिड़की से झाँकती हुई जिंदगी

राहुल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

आज मैं जो कहने जा रहा हूँ वो कोई कल्पना नहीं और न ही कोई कहानी है। ये एक सच्चाई है, एक ऐसी सच्चाई जिससे हमारे समाज का एक बड़ा हिस्सा अनभिज्ञ है। उन्हें नहीं पता है कि जिस समाज में, जिस शहर की चकाचौंध में वे रहते हैं और किसी एयरकण्डिश्नर वाली बालकनी में खड़े होकर, किसी शाम चाय की चुस्कियाँ लेते हुए कहते हैं, "नाउ ए डेज लाइफस् बिकम सो डिफीकल्ट", उसी समाज रूपी सिक्के के दूसरी ओर एक और पहलू है जो नीचे दबे हुए है और इनकी सच्चाई कुछ और ही है। इनके जीवन में संघर्ष, चुनौती और चिंतन की एक अलग ही परिभाषा है।

एक रोज पटना से लौटते समय मैं विक्रमशिला ट्रेन के जनरल डिब्बे में जा बैठा। चूंकि ये छठ पूजा का समय था, तो रिजर्वेशन टिकट मिलना बहुत मुश्किल होता और ट्रेन में इन दिनों भीड़ भी हद से ज्यादा होती। ऐसे में मैं किसी तरह जनरल डिब्बे में जा बैठा। यहाँ का माहौल कुछ और ही था, यहाँ मुश्किल से ही खड़े होने की जगह होगी। यहाँ अधिकतर ऐसे लोग थे जो बिहार से बाहर दिल्ली में अपनी आजीविका के लिए संघर्ष करते हैं और साल भर बाद अपने गाँव जा रहे होते हैं छठ पूजा मनाने। जब-अब मुझे इन्हीं लोगों के साथ लगभग 5 घंटे का सफर तय करना था।

एसे में मेरी मुलाकात एक व्यक्ति से हुई जिसका नाम बेचन था। वैसे तो बेचन देखने में पतला-दुबला सा आदमी था। उम्र यही कोई 30-32 वर्ष की रही होगी पर उसकी जिम्मेदारियों और चिंताओं की छाप उसके चेहरे की झुर्रियों में आसानी से देखा जा सकता था।

चूँकि अगले 5 घंटे मुझे सफर तय करना था, तो मैंने उससे धीरे-धीरे बातचीत शुरु की। उस दौरान उसने मुझसे जो कहा वो लिखने से, ज्यादा मुश्किल वो लिखना था जो उसने कहा नहीं बल्कि उस वक्त उसके चेहरे पर मुझे दिखा।

उसने बताया की वो मुंगेर और भागलपुर के बीच किसी छोटे से गाँव का रहने वाला है। उसके परिवार में कुल 5 लोग हैं जिनमें उसकी पत्नी, दो लड़कियाँ और एक बूढी माँ है जो अकसर बीमारी से ग्रसित रहती हैं।

वैसे तो गंगा की गोद में बसा मुंगेर प्रकृति का अनोखा उदाहरण है, लेकिन आजादी के 75 साल बाद भी यहाँ जीवन-यापन के लिए पर्याप्त सुविधाएँ नहीं हैं। यहां के ज्यादातर लोगों को अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक समय बाद किसी न किसी दूसरे राज्य में प्रवासी बनकर रहना पड़ता है।

बेचन भी उन्हीं में से एक है जिसे अब अपनी दोनों बेटियों की अच्छी शिक्षा और शादी की चिंता सताती रहती है। उसे माँ के इलाज की चिंता भी है। इन्हीं सब चिंताओं से उभरने के लिए उसने भी घर से दूर दिल्ली जाकर कुछ काम करने का फैसला किया और चल पड़ा। विक्रमशिला के जनरल डब्बे में जाते वक्त उसने मन में ठान लिया कि अब कुछ पैसा जमा करके ही वापस आऊंगा ताकि माँ का इलाज करवा सकूँ।

परंतु उसे यह पता नहीं था कि बड़े शहर में छोटे लोगों को बड़ी-बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, वो भी तब जब वो रोजी-रोटी कमाने किसी प्रवासी मजदूर के तौर पर आया हो।

अब उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती आवास का था। क्योंकि बड़े शहर आए लोग अब अपने साथ कुछ जरूरी कपड़ा ले कर आते हैं, उन्हें रोटी और छत का जुगाड़ करना होता है।

किसी तरह बड़ी जद्दोजहद के बाद उसे किसी कारखाना में 500 रूपये रोज की नौकरी मिल गई और एक छोटा

सा कमरा भी यही पास में ही मिल गया। साथ आई उसकी सुख-दुःख की साथी, उसकी पत्नी गुड़िया भी उसी कारखाने में साथ काम में लग गई थी ताकि इस बड़े से शहर में गुजारा तो हो जाए, साथ ही साथ बच्चों की पढ़ाई के लिए कुछ पैसे जमा हो जाए।

वैसे तो गुड़िया 10वी तक पढ़ी थी, जबकि घर की जिम्मेदारियों के तले बेचन केवल 8वी तक ही पढ़ पाया। फिर भी सोचने वाली बात ये है कि एक ही कारखाने में एक ही काम के लिए बेचन को पाँच सौ रूपये और गुड़िया को सिर्फ तीन सौ रूपये रोज के मिलते थे। ऐसा क्यों? एसा इसलिए कि वो एक महिला है। वैसे तो हमारे समाज में अब तक बहुत से बदलाव आए हैं, हम छुआ-छूत, जातिवाद, ऊँच-नीच जैसी समस्याओं से अब तक बहुत ऊपर उठ चुके हैं, फिर भी जब रोजगार की बात आती है तो कुछ जगह स्त्री-पुरूष में भेदभाव देखने को मिल जाता है। समान काम के लिए समान वेतन की सोच एक उम्मीद बन कर रह जाती है।

आज घर जाते वक्त उसे बहुत खुशी हो रही थी कि पूरे एक साल बाद वो अपने घर, अपने पूर्वजों के गाँव जा रहा था छठ पूजा मनाने, जहाँ वो अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से मिल सकता था। छठ पूजा एक ऐसा पर्व है जब एक बिहारी को माँ और मिट्टी एक साथ आवाज़ देती है, तब देश-विदेश में बसे बिहारी अपने घर आने को हरसंभव प्रयास करते हैं। बेचन की खुशी का ठिकाना नहीं है, ये सोच कर कि अब वो अपनी माँ की आँखों का इलाज करवा सकता है।

उसने बताया कि कोविड के दौरान उसे परदेस में कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जब गाँव में उसके पिता जी का देहांत हो गया था, तब उसके घर पर केवल उसकी माँ अकेले रह गई थीं। इन्हीं सब परिस्थितियों से बचने के लिए उसने एक छोटा सा दुकान अपने गाँव में ही लगाने का जुगाड़ कर लिया था, ताकि घर पर सब के साथ रह कर माँ की सेवा कर सके और अपने परिवार के साथ रह सके।

जनरल कोच से शुरू हुआ सफर, जिसमें भीड़, धक्कें, गर्मी और गंदगी ही नहीं, बल्कि अनेक अनकही कहानियों, आकांक्षाओं, संघर्षों और किस्सों से हमें रूबरू करवाती है।

बेचन की कहानी भी एक आम आदमी की कहानी थी, जो अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपने गाँव से दूर निकला था, और उसे शहर की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। और ये कहानी सिर्फ एक बेचन की नहीं है, बल्कि बिहार, उतर-प्रदेश में ऐसे हजारों बेचन हैं, जो अपने सपनों और जरुरतों के पीछे भागते-भागते न जाने कब अपने घर परिवार से बहुत दूर निकल जाते हैं, पता ही नहीं चलता।

जरूरतें कब और कैसे हमारे शौक बन जाते हैं, हमें पता ही नहीं चलता।

एक आधुनिक कवि स्वयं श्रीवास्तव ने शायद इसलिए कहा हैः

मुश्किल थी संभलना ही पड़ा घर के वास्ते,
फिर घर से निकलना ही पड़ा घर के वास्ते।
मजबूरियों का नाम हमने शौक रख दिया,
हर शौक बदलना ही पड़ा घर के वास्ते।

बेचन की कहानी यहीं खत्म नहीं होती, बल्कि यह तो शुरूआत है उन अनगिनत कहानियों की जो हर दिन हमारे आस-पास घटती हैं लेकिन हम देख नहीं पाते। जब अगली बार आप किसी ट्रेन के जनरल कोच से गुजरें, तो सिर्फ भीड़ मत देखिए, उन चेहरों की थकान, उनकी उम्मीद, उनकी मजबूरी और उनके सपनों को भी महसूस करने की कोशिश कीजिए।

क्योंकि हो सकता है कि किसी कोने में बैठा एक और बेचन, बस इसी इंतजार में हो कि कोई उसकी कहानी सुने – बिना किसी जजमेंट के, बिना किसी लेबल के।

शहर की रफ्तार में कभी-कभी ठहरना जरूरी होता है- ताकि हम याद रख सकें कि हर मुस्कान के पीछे एक संघर्ष होता है, और हर सामान्य दिखने वाला चेहरा एक असाधारण कहानी समेटे होता है।

आधुनिक कवि, अमन कुमार कुशवाहा ने भी सच ही कहा हैः
आधी उम्र बीत गई हसीं सपने सजाने में,
आधी उम्र बीत रही कहीं रोटी कमाने में।
शौक पाल रखे थे हमने भी आसमां को छूने की,
यहाँ उम्रें बीत रही जिम्मेदारी निभाने में।

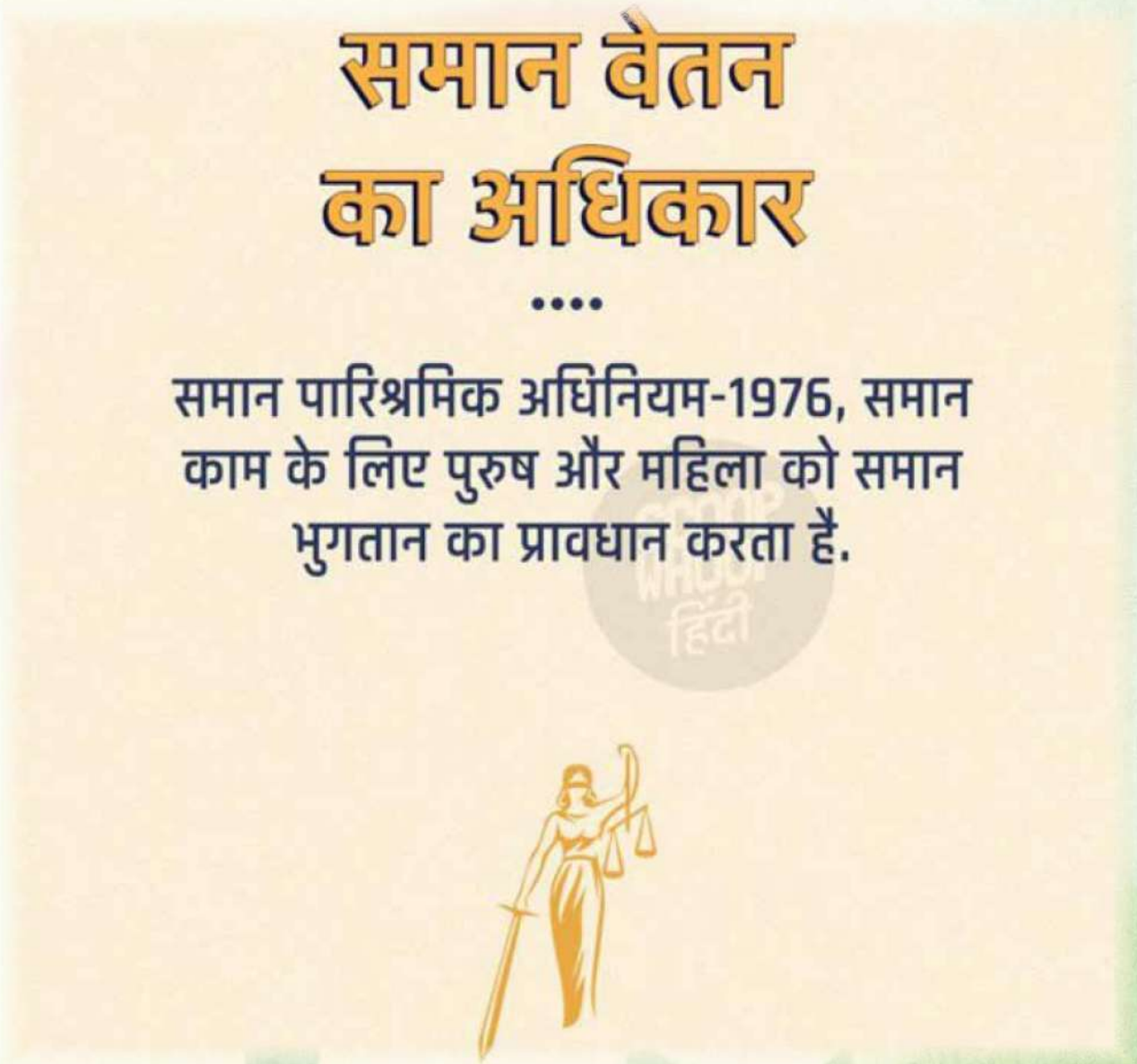

म्हारो राजस्थान

हिमांशु खोखर
डी ई ओ

राजस्थानी लोगों को छोड़कर शेष दुनिया को लगता है कि राजस्थान में पानी नहीं है और यहाँ खून सस्ता व पानी महंगा है...

जबकि यहाँ सबसे शुद्धता वाला पानी जमीन में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

राजस्थान के लोगों को पूरे विश्व में सबसे बड़े कंजूस कृपण समझा जाता है...

जबकि पूरे भारत के 95% बड़े उद्योगपति राजस्थान के हैं, राममंदिर के लिए सबसे ज्यादा धन राजस्थान से मिला है...

राममंदिर निर्माण में उपयोग होने वाला पत्थर भी राजस्थान का ही है..!

राजस्थान के लोगों के बारे में दुनिया समझती है कि ये प्याज और मिर्च के साथ रोटी खाने वाले लोग हैं...

जबकि पूरे विश्व में सर्वोत्तम और सबसे शुद्ध भोजन परम्परा राजस्थान की है...

पूरे विश्व में सबसे ज्यादा देसी घी की खपत राजस्थान में होती है।

यहाँ का बाजरा विश्व के सबसे पौष्टिक अनाज का खिताब लिये हुए है..!

राजस्थानी लोगों को छोड़कर शेष दुनिया को लगता है कि राजस्थान के लोग छप्पर और झोपड़ियों में रहते हैं, इन्हें पक्के मकानों की जानकारी कम है...

जबकि यहाँ के किले, इमारतें और उन पर अद्भुत नक़्क़ाशी विश्व में दूसरी जगह कहीं नहीं है।

यहाँ अजेय किले और हवेलियाँ हजारों वर्ष पुरानी हैं।

मकराना का मार्बल, जोधपुर व जैसलमेर का पत्थर अपनी अनूठी खूबसूरती के कारण विश्व प्रसिद्ध है !

राजस्थान में चीन की दीवार जैसी ही दूसरी उससे मजबूत दीवार भी है जिसे दुनिया में पहचान नहीं मिली..!

राजस्थानी लोगों को छोड़कर शेष दुनिया को लगता है कि राजस्थान में कुछ भी नहीं...

जबकि यहाँ पेट्रोलियम का अथाह भंडार मिला है... गैसों का अथाह भंडार मिला है...

यहाँ कोयले का अथाह भंडार मिला है..!

अकेले राजस्थान में यहाँ की औरतों के पास का सोना इकट्ठा किया जाए तो शेष भारत की औरतों से ज्यादा सोना होगा।

सबसे ज्यादा सोने की बिक्री भी राजस्थान के जोधपुर में होती है !

राजस्थान की जलवायु के बारे में दुनिया समझती है यहाँ बंजर भूमि और रेतीले टीले हैं जहाँ आंधियाँ चलती रहती हैं...

जबकि राजस्थान में कई झीलें, झरने और अरावली पर्वतमाला के साथ रणथम्भौर पर्वतीय शिखर हैं जो विश्व के टॉप टूरिज्म पैलेस हैं।

इसके अलावा राजस्थान में झीलों से निकला नमक शेष भारत में 80% नमक की आपूर्ति करता है जो 100% शुद्ध प्राकृतिक नमक है।

इसके अलावा भी बहुत सारी ऐसी बातें हैं जिन्हें दुनिया नहीं जानती और यह सब गलत शिक्षा नीति की वजह से राजस्थान का नकारात्मक चरित्र गढ़ा गया जिसे दुनियाभर में सच समझा गया !

राजस्थान में बहन को प्यार से ' बाईसा ' कहा जाता है।

यहाँ चार बाईसा हुई जिन्हें हर राजस्थानी बाईसा कहकर ही सम्बोधित करते हैं...

मीरा बाई, करमा बाई, सुगना बाई, नानी बाई और मीरा ने ईश्वर को प्रेम भक्ति से ऐसा वशीभूत किया कि ईश्वर को आना पड़ा !

करमा बाई ने निष्ठा भक्ति से ईश्वर को ऐसा अभिभूत किया कि ईश्वर को करमा के हाथ से खाना पड़ा।

सुगना बाई ने राजस्थान की पीहर और ससुराल परम्परा का ऐसा अनूठा स्त्रीत्व भक्ति पालन किया कि ईश्वर को उनका उद्गार सुनना पड़ा और नानी बाई ने ईश्वर की ऐसी विश्वास भक्ति की कि ईश्वर को उनके घर आना पड़ा।

ये सब इसी युग में वर्तमान में हुआ, जिनकी भक्ति, आस्था और निष्ठा को राजस्थान के हर मंच से गाया जाता है।

नारी भक्ति का ऐसा उदाहरण शेष विश्व में और कहीं नहीं।

यहाँ राजस्थान की बलुई मिट्टी पूनम की रात में कुंदन की तरह चमककर स्वर्ण का आभास कराती है।

इन्हीं पहाडों की वजह से इसे 'मरुधरा' कहा जाता है..!

राजस्थान का इतिहास गर्व से लबरेज और यहाँ का जीवन सबसे शुद्ध है..!

कण कण वंदनीय और गाँव-गाँव एक इतिहास में दर्ज कहानियों पर खड़ा है..!

आनंद के चर्मोत्कर्ष पर

आज आपको मरुधरा के दर्शन करवाते हैं जो प्रकृति के बेहद करीब है।

इसी राजस्थान को देखने, पधारो म्हारे देश

हमारा राजस्थान खास क्यों हैं:

1. भारत के 100 सबसे अमीर व्यक्तियो में से 35 राजस्थानी व्यापारी हैं।
2. दंगो में हज़ारो लोग मारे गए हैं लेकिन राजस्थान में एक भी नहीं।
3. राजस्थान अकेले इतने सैनिक देश को देता है जितना केरला, आन्ध्र-प्रदेश और गुजरात मिलकर भी नहीं दे पाते...!!
4. कर्नल, सूबेदार सबसे ज्यादा राजस्थान से हैं...!!
5. उच्च शिक्षण संस्थानों में राजस्थानी इतने हैं कि महाराष्ट्र और गुजरात के मिलाने से भी बराबरी नहीं कर सकते।
6. राजस्थान अकेला ऐसा राज्य है जहाँ किसान कृषि कारणों से आत्म-हत्या नहीं करते जैसा मीडिया अन्य राज्यों में दिखाता है, जबकि सबसे अधिक सूखा यहाँ पड़ता है, क्योंकि राजस्थान में बुज़दिल नही हैं..!!
7. आज भी राजस्थान में सबसे ज्यादा संयुक्त परिवार बसते हैं..!!
8. यहां एक रिक्शा चलाने वाले को भी 'भाई' कह कर बुलाते हैं...!!!!

9. अतिथि को यहाँ आज भी देवता के समान दर्जा देते हैं। यहाँ पर अतिथियों की खातिरदारी में कोई कसर नहीं छोड़ते।

ताज महल अगर प्रेम की निशानी है,

तो *"गढ़ चित्तोड़"* एक शेर की कहानी है।

कुछ लोग हार कर भी जीत जाते हैं !

कुछ लोग जीत के भी हार जाते हैं !!

नहीं दिखते हैं अकबर के निशान यहाँ कहीं पर भी, लेकिन

"राणा के घोड़े हर चौराहे पर आज भी नज़र आते हैं।

" जय जय राजस्थान"

भारत पाक युद्ध

सूरज किशोर
सहायक लेखा अधिकारी

विभाजन के समय से ही भारत और पाकिस्तान के आपसी रिश्ते हमेशा तनावपूर्ण ही रहे हैं। इसकी रणनीति यह रही कि दोनों देशों में कड़े युद्ध हुए, जिसका दुष्परिणाम दोनों देशों की आम जनता को भुगतना पड़ा। विशेषज्ञों का मानना है कि तनाव और युद्ध का मूल कारण 'कश्मीर मुद्दा' है, जबकि यह नहीं भूलना चाहिए कि पाकिस्तान अपने अस्तित्व के समय से ही भारत को एक शत्रु देश मानता है तथा किसी न किसी तरह भारत को परेशान और अस्थिर करने की कोशिश करता रहता है। मूलत: देखा जाए तो विभाजन ही तनाव और सभी समस्याओं की जड़ है। हालांकि बहुत से विशेषज्ञों का यह मानना है कि तत्कालिक हिंसा और रक्तपात को रोकने के लिए विभाजन आवश्यक था, किंतु विभाजन के बाद भी पाकिस्तान अपनी नीचतापूर्ण हरकतों से बाज नहीं आया और प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से भारत के साथ युद्ध करता रहा।

अब तक भारत और पाकिस्तान के बीच पाँच युद्ध हुए हैं जिनमें हाल ही में हुआ युद्ध भी शामिल है। सबसे पहले भारत-पाक युद्ध विभाजन के तुरंत बाद 1947 में हुआ। इस समय कश्मीर में महाराजा हरि सिंह की हुकूमत थी। वह अपने आप को स्वतंत्र रखना चाहते थे किंतु पाकिस्तान ने अपनी सेना के समर्थन के साथ हजारों की संख्या में जनजातीय कबीलाई लड़ाकों को भेजकर कश्मीर पर कब्जा करने की कोशिश की, जिसमें उसे कुछ हद तक सफलता भी मिली। जब राजा हरि सिंह ने देखा कि पाकिस्तानी आक्रमण को रोकना उनके बस की बात नहीं है, तब उन्होंने भारत सरकार से सहायता की गुहार लगाई और बदले में कुछ शर्तों के साथ कश्मीर का विलय भारत में करने के लिए तैयार हो गए। फलस्वरूप, भारत ने सैन्य कार्रवाई करके पाकिस्तान को पीछे धकेल दिया किंतु भारत को कश्मीर का कुछ हिस्सा गँवाना पड़ा। इस युद्ध का मूल परिणाम कश्मीर का भारत में विलय रहा।

भारत-पाक के बीच दूसरा युद्ध 1965 ईसवी में लड़ा गया। इस युद्ध में पाकिस्तान ने अपनी रणनीति बदली और वह आमने-सामने की लड़ाई के साथ-साथ कश्मीर के स्थानीय लोगों को भी भारत के खिलाफ भड़का कर उन्हें भी परोक्ष रूप से युद्ध में शामिल कर लिया। पाकिस्तान की योजना थी कि वह कश्मीरी जनता को भड़का कर भारत के विरुद्ध विद्रोह शुरु करा दे। लेकिन समय रहते ही भारत ने पाकिस्तान के इस षड्यंत्र को भाँप लिया तथा जवाबी कार्रवाई करते हुए पश्चिमी पाकिस्तान पर बड़े पैमाने पर सैन्य हमले शुरू कर दिए। सत्रह दिनों तक चले इस युद्ध में हजारों लोगो की मौत हुई। अंत में सोवियत संघ और अमेरिका के हस्तक्षेप से युद्धविराम की घोषणा की गई। ताशकंद समझौते के साथ इस युद्ध का अंत हुआ।

सन् 1971 में भारत-पाक के बीच तीसरा युद्ध हुआ। यह युद्ध कई मायनों में ऐतिहासिक रहा। इस युद्ध में पाकिस्तान की तरफ से मानव इतिहास का सबसे बड़ा आत्मसमर्पण किया गया, जिसमें 93,000 से ज्यादा सैनिकों ने भारत के सामने आत्मसमर्पण किया। इस युद्ध में रूस ने भारत की काफी मदद की और अपने आप को भारत का सच्चा एवं भरोसेमंद मित्र साबित किया। पाकिस्तान की तरफ से जहाँ अमेरिका और ब्रिटेन थे, वहीं भारत की तरफ से अकेले रूस ने ही उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। इस युद्ध में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के कुशल नेतृत्व का भी लाभ भारत को मिला। इस युद्ध में विजय के पश्चात् भारत में इंदिरा जी *'आयरन लेडी'* के नाम से लोकप्रिय हुईं। इस युद्ध के परिणामस्वरूप, विश्व में 'बांग्लादेश' नाम से एक नए देश का सृजन हुआ और पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए।

भारत और पाकिस्तान के बीच चौथा युद्ध वर्ष 1999 में हुआ, जिसे कारगिल युद्ध के नाम से जाना जाता है। वर्ष 1999 में भारत और पाकिस्तान के आपसी रिश्तों में काफी सुधार हो रहा था, यहाँ तक कि दोनों देश कश्मीर समस्या का भी समाधान करने के लिए उत्सुक थे। उस समय भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ थे, जोकि हर मंच पर शांति और सौहार्द की बात कर रहे थे। लेकिन, पाकिस्तान के तत्कालीन आर्मी जनरल, परवेज़ मुशर्रफ़ ने अपने प्रधानमंत्री के प्रयासों पर पानी फेरते हुए, भारत पर कायरतापूर्ण हमला किया, जिसका भारतीय सेना ने मुँहतोड़ जवाब दिया।

युद्ध के प्रारंभ में पाक सैनिकों ने कारगिल के ज्यादातर क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था। परंतु, भारतीय सैनिकों के शौर्य और पराक्रम ने उन्हें पीछे धकेल दिया तथा अपनी पूरी जमीन भी वापस ले ली। इस युद्ध में पाकिस्तान को भारी क्षति उठानी पड़ी, उसके लगभग चार हजार सैनिक मारे गए। यह युद्ध पाकिस्तानी सेना के लिए बड़ी हार थी।

उपरोक्त प्रमुख युद्धों के अलावा भी भारत-पाक के बीच निरंतर छिट-पुट, छोटे स्तर पर टकराव होते रहते हैं। पाकिस्तान हमेशा अपने आतंकवादियों को भारत में भेजकर आतंकवाद फैलाता रहता है। इस तरह की एक घटना हाल ही में 22 अप्रैल 2025 को कश्मीर में घटित हुई, जिसमें आतंकवादियों ने 26 भारतीयों को मौत के घाट उतार दिया, जिसमें ज्यादातर लोग पर्यटक थे।

इस शर्मनाक और कायरतापूर्ण हमले के जवाब में भारत ने पाकिस्तान के अंदर आतंकी ठिकानों को निशाना बनाना शुरू किया, जिसे *'ऑपरेशन सिंदूर'* नाम दिया गया। इस ऑपरेशन के तहत, भारत ने पाकिस्तान में स्थित आतंकवादी ठिकानों पर ड्रोन तथा मिसाइलों से हमला किया जिसमें पाकिस्तान को भारी नुकसान उठाना पड़ा। जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान ने भारत के रिहायशी और सैन्य ठिकानों पर हमला किया जिसे भारतीय सुरक्षा प्रणाली ने नाकाम कर दिया। पाकिस्तानी हमले से भारत को मामूली नुकसान ही हुआ।

अब तक हुए सभी युद्धों की तरह, इस युद्ध में भी पाकिस्तान को करारी हार का सामना करना पड़ा।

संघर्ष के तीन दिन बाद भारत-पाकिस्तान दोनों देशों ने आपसी सहमति से युद्धविराम की घोषणा कर दी।

भारत का 'ऑपरेशन सिंदूर' : एक प्रतीकात्मक अर्थ

दीपान्विता दास
वरिष्ठ अनुवादक

पाकिस्तान पर साधे गये जवाबी सैन्य हमले को दिया जाने वाला नाम - *'ऑपरेशन सिंदूर'* – हमें एक ऐसी महिला का स्मरण कराती है जो इस आतंकवादी हमले से उभरते सामूहिक शोक के लिए एक *'आईकॉन'*, अर्थात् प्रतीक बन गई थी।

हिमांशी नरवाल पहले इस त्रासदी की प्रतीक थीं, फिर नफरत का निशाना बन गईं।

कश्मीर के पहलगाम पर हुये आतंकवादी हमले की पृष्ठभूमि में नरवाल को अपने मारे गए पति के पास में बैठे एक तस्वीर में कैद किया गया था, जो कश्मीर के भारतीय हिस्से में एक आतंकवादी हमले में मारे गए 26 लोगों में से एक थे। जैसे ही भारत ने जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान पर हमला किया, नरवाल इस बात का आक्षेप बन गईं कि भारत ने अपने सैन्य अभियान के लिए *'ऑपरेशन सिंदूर'* नाम क्यों चुना।

सिंदूर या सिंदूर पाउडर, हिंदू महिलाओं की वैवाहिक स्थिति का एक पारंपरिक चिह्नक है। विवाहित महिलाएँ इसे या तो अपने बालों को अलग करते हुए या अपने माथे पर पहनती हैं, और अगर वे विधवा हो जाती हैं, तो वे इसे मिटा देती हैं। 22 अप्रैल के आतंकवादी हमले के दौरान, कई महिलाओं ने अपने पतियों को खो दिया, जिन्हें हिंदू होने के कारण निशाना बनाया गया था। लेकिन कुछ ही लोगों ने मीडिया का ध्यान उस तरह आकर्षित किया जैसा कि हिमांशी नरवाल की उनके पति के साथ खींची गयी तस्वीर ने वायरल होने के बाद किया है।

जिस सैन्य अभियान की बात की गई है, वह भारत का *'ऑपरेशन सिंदूर'* है, जिसे पहलगाम आतंकवादी हमले के प्रतिशोध में मई, 2025 में शुरु किया गया था। यह प्रतीकात्मक रूप से विधवा महिलाओं के दु:ख से जुड़ा हुआ है, विशेष रूप से इस हमले की शिकार हुई महिलाओं से।

पाकिस्तान के खिलाफ शुरु किये गये इस सैन्य अभियान को *'ऑपरेशन सिंदूर'* का नाम दिया गया, जो पहले पहलगाम आतंकी हमले में विधवा हुई महिलाओं के दु:ख की याद दिलाता है, क्योंकि सिंदूर भारत में एक विवाहित महिला का पारंपरिक प्रतीक है। यह नाम उन महिलाओं को सम्मानित करने के लिए चुना गया था जिन्होंने इस हमले में अपने पतियों को खो दिया था, और यही वजह है कि सैन्य महिलाएँ इसकी जवाबी कार्रवाई के आधिकारिक ब्रीफिंग में मौजूद थीं, जो ताकत, सहनशीलता और एकजुटता का प्रतिनिधित्व कर रही थीं।

अत: हम यह समझ सकते हैं कि *'ऑपरेशन सिंदूर'* से तात्पर्य जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में भारत की ओर से शुरु किये गये सैन्य अभियान से है – जिसका नाम ***'सिंदूर'*** भारतीय संस्कृति में एक विवाहित महिला के पारंपरिक निशान का प्रतीक है, जिसे हमले में महिलाओं ने खो दिया था, जिससे यह उनके सामूहिक दु:ख का प्रतीक बन गया और न्याय पाने की प्रतिज्ञा बन गई।

इसलिए, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह ऑपरेशन कर्नल *सोफिया कुरैशी (Sofia Qureshi)* और विंग *कमांडर व्योमिका सिंह (Vyomika Singh)* सहित महिला अधिकारियों के नेतृत्व के लिए उल्लेखनीय था।

पृष्ठभूमि

पहलगाम हमला (अप्रैल 2025): भारत-पाकिस्तान सैन्य कार्रवाई जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान स्थित समूह *लश्कर-ए-तौयबा* के हमले की प्रतिक्रिया थी। आतंकवादियों ने धार्मिक रूप से प्रेरित होकर 25 पर्यटकों

सहित 26 नागरिकों को अलग कर दिया और उनकी हत्या कर दी। पीड़ितों में कई पुरुष भी शामिल थे जिन्हें उनकी पत्नियों के सामने गोली मार दी गई थी।

इस हमले की पृष्ठभूमि में भारतीय नौसेना के अधिकारी *लेफ्टनेंट विनय नरवाल (Lt. Vinay Narwal)* की पत्नी, हिमांशी नरवाल का जिक्र है। शादी के एक हफ्ते बाद ही उसकी हत्या कर दी गई थी। अपनी शादी की चूड़ियाँ पहने हुए उसके शरीर के पास बैठी हुई उसकी हृदयविदारक छवि देश के दु:ख और हमले से हाने वाले दर्द का एक शक्तिशाली प्रतीक बन गई।

पाकिस्तानी आतंकी शिविरों पर जवाबी सैन्य हमले के लिए *'ऑपरेशन सिंदूर'* नाम चुना गया था। सिंदूर – जिसे हिंदू महिलाएँ अपनी वैवाहिक स्थिति को दर्शाने के लिए अपने बालों को अलग करके पहनती हैं – यह नाम उन महिलाओं के दु:ख और सम्मान का प्रतिशोध लेने की दिशा में एक प्रत्यक्ष संदेश था।

पहलगाम की अन्य विधवाओं के साथ हिमांशी नरवाल के दु:ख ने इस अभियान को एक भावनात्मक स्वरूप प्रदान किया। भारतीय अधिकारियों और मीडिया ने पीड़ितों को श्रद्धांजलि दी और भारत की महिलाओं की प्रतिक्रिया के रूप में इस सैन्य ऑपरेशन को तैयार करते हुए इसके प्रतीकवाद पर प्रकाश डाला।

'ऑपरेशन सिंदूर' में भारत निर्मित ड्रोनों का इस्तेमाल किया गया था, जिनमें शामिल *स्काईस्ट्राइकर* और *नागास्त्र-1* तथा *लॉइटरिंग म्यूनिशनों* का प्रयोग मई, 2025 में आतंकी ठिकानों पर सटीक हमलों के लिए किए गए। ये ड्रोन एक बड़े हमले का हिस्सा थे, जिसमें कई मिसाइलें भी शामिल थीं और इसने भारतीय सैन्य अभियानों में स्वदेशी ड्रोन तकनीक की बढ़ती भूमिका को उजागर किया। हालांकि, इस अभियान ने भारत में निर्मित ड्रोनों को जाम करने जैसी कमज़ोरियों को भी उजागर किया, और यूएवी के लिए इलेक्ट्रॉनिक प्रतिवाद और सुरक्षित संचार के विकास को और प्रेरित किया।

ड्रोन का इस्तेमाल

स्काईस्ट्राइकर:

इजरायल की एल्बिट सिक्योरिटी सिस्टम के सहयोग से भारत में निर्मित एक आत्मघाती ड्रोन या *लॉइटरिंग म्यूनिशन* का उपयोग सटीक हमलों के लिए किया गया।

नागास्त्र-1:

सोलर इंडस्ट्रीज द्वारा विकसित यह एक अन्य प्रकार का गोला-बारूद है, जिसे मानव द्वारा ले जाया जा सकता है तथा इसे पुन: उपयोग के लिए डिजाइन किया गया है, तथा इसमें असफल मिशनों के लिए पैराशूट रिकवरी प्रणाली भी मौजूद है।

काउंटर-ड्रोन प्रणाली *'आकाशतीर':*

भारत की स्वदेशी रूप से विकसित 'आकाशतीर' वायु रक्षा प्रणाली ने पाकिस्तानी ड्रोन और मिसाइलों की एक बौछार को सफलतापूर्वक रोक दिया और बेअसर कर दिया। भारतीय वायु सेना के कमांड और नियंत्रण नेटवर्क के साथ पूरी तरह से एकीकृत इस प्रणाली ने आने वाले खतरों के खिलाफ "100% सटीक निशाने की दर" हासिल की।

असफल हमले:

भारतीय अधिकारियों के अनुसार, अधिकांश पाकिस्तानी ड्रोन को निष्प्रभावी कर दिया गया था, और कुछ को बरकरार भी बरामद किया गया था, जो दर्शाता है कि उन्होंने ठीक से काम नहीं किया था।

साइबर-सुरक्षित ड्रोन: *ज़ुप्पा (Zuppa)* की तरह, भारतीय ड्रोन को साइबर-सुरक्षित होने के लिए प्रमाणित किया गया था, जो उन्हें इलेक्ट्रॉनिक युद्ध के दौरान दुश्मन द्वारा हैक या कमांड करने से रोकते थे।

परिचालन विवरण:

लक्ष्य: पहलगाम में आतंकी हमले के बदले में पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर और पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाना।

क्षमताएं: ड्रोन का उपयोग निगरानी, टोही और निर्दिष्ट लक्ष्यों पर सटीक हमलों के लिए किया गया था।

प्रभावशीलता: हमले प्रभावी थे, हालांकि इस ऑपरेशन ने ड्रोन युद्ध में आने वाली चुनौतियों को भी उजागर किया।

चुनौतियाँ और सीख:

जैमिंग: पाकिस्तानी बलों ने *हाई-एनर्जी जैमिंग* का इस्तेमाल किया, जिससे *ड्रोन* के *सिग्नल* बाधित हो गए।

प्रतिउपाय: जवाब में, भारतीय सेना एन्क्रिप्टेड, निर्बाध लिंक बनाए रखने के लिए अधिक उन्नत *इलेक्ट्रॉनिक काउंटरमेजर* सुविधाओं और सुरक्षित उपग्रह संचार को विकसित करने और लागू करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

भविष्य का विकास: ऑपरेशन ने बटालियन स्तर पर ड्रोन के एकीकरण और टोही से लेकर युद्ध तक विभिन्न भूमिकाओं में उपयोग की जाने वाली अधिक उन्नत ड्रोन क्षमताओं के विकास को प्रेरित किया है।

भारत के इस सैन्य अभियान की घोषणा करने वाले एक ग्राफिक चित्रपट में गिरे हुए सिंदूर की एक डिबिया शामिल थी, जो खून की छींटें जैसी दर्शायी गयी थी।
(सौजन्य: 'द न्यू यॉर्क टाइम्स')

राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान

राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान के अनुच्छेदों का संक्षिप्त परिचय:

- अनुच्छेद 343- संघ की भाषा
- अनुच्छेद 344- राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति
- अनुच्छेद 345- राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं
- अनुच्छेद 346- एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा
- अनुच्छेद 347- किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।
- अनुच्छेद 348- उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियम, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।
- अनुच्छेद 349- भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।
- अनुच्छेद 350- व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा।
- अनुच्छेद 351- हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश
- अनुच्छेद 120- संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा
- अनुच्छेद 210- विधानमण्डल में प्रयोग की जाने वाली भाषा

वर्ष 2025 के दौरान कार्यालयीन गतिविधियों की कुछ झलकियाँ:

कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2025 का आयोजन

सर्वोत्तम राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नराकास अगरतला से पुरस्कार ग्रहण करते हुए

नराकास अगरतला बैठक में कार्यालय के सराहनीय कार्यों की प्रस्तुति देते हुए

मुख्य अतिथि हिन्दी पखवाड़ा के उदघाटन पर दीप प्रज्वलन करते हुए

पुरस्कार विजेता पुरस्कार गृहण करते हुये

उदघाटन के दौरान सरस्वती वंदना की प्रस्तुति

कार्यालय के सेवानिवृत्त कर्मचारियों का विदाई समारोह

कार्यालय में यौन उत्पीड़न जागरुकता हेतु कार्यशाला का आयोजन

प्रज्ञा भवन, अगरतला, में डी डी ओ की कार्यशाला में सहभागिता

प्रज्ञा भवन, अगरतला, में डी डी ओ की कार्यशाला में सहभागिता

खेल-कूद उपलब्धियाँ

अपने आप पर विजय प्राप्त करना ही आपकी महानतम विजय होती है।

प्लेटो

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025

नज़रुल स्मृति विद्यालय, अगरतला में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

आचार संहिता पर पेनल चर्चा

गरिया नृत्य

गरिया नृत्य त्रिपुरा के त्रिपुरी जनजाति द्वारा गरिया देवता के पूजा के समय किया जाने वाला सांस्कृतिक नृत्य है।

चतुर्दश देवता मंदिर
त्रिपुरा

यह मंदिर चौदह देवताओं को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण महाराजा कृष्ण किशोर माणिक्य ने 18वीं शताब्दी में करवाया था। यहाँ प्रति वर्ष जून माह में "खर्ची" उत्सव मनाया जाता है।